प्रकाशक
नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स
पो० बा० न० ११२
चौकफाटक, वाराणसी

मुद्रक—
श्रीभोला यंत्रालय
खजुरी, वाराणसी

दो शब्द

आज कल प्राय देखा जा रहा है कि विद्यालयो में छात्रो के अन्दर उद्दण्डता और उच्छृङ्खलता चरम मीमा पर पहुँचती जा रही है। छात्र-समुदाय उत्तरोत्तर पतनावस्था की ओर बढता जा रहा है। इन्ही सब अशोभनीय बातो को देखकर इस पुम्तक की रचना की गयी है। इस छोटी-मी पुस्तक में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार एक दुष्ट से दुष्ट, नैतिकता के स्तर से गिरे हुए पथ-भ्रष्ट-छात्र का चारित्रिक-सुधार किया जा सकता है। एक सच्चरित्रवान-छात्र किस प्रकार देश की सेवा में अग्रसर हो कर ख्याति प्राप्त कर सकता है, किस प्रकार वह भूले हुए को भी देशोन्नति के कार्य की ओर अग्रसर कर सकता है, किस प्रकार वह गिरे हुए समाज की लाज को दूर कर उसे आगे बढा सकता है और स्वय आगे बढ सकता है।

रजनीकान्त एक सर्वगुण-सम्पन्न एव सच्चरित्रवान छात्र है। उसका मित्र अशर्फीलाल उसके विपरीत सब प्रकार से एक चरित्र-भ्रष्ट, क्रूर और हठी छात्र है। अशर्फीलाल के सारे असह्य-आघातो को सहन करते हुए अन्त मे रजनीकान्त ने उसे "क्षमा" माँगने के लिए विवश कर दिया। उसके विकृत-मस्तिष्क का आमूल परिवर्तन करके उसे एक सद्मार्ग पर ला, दिया। रजनीकान्त ने ससार को दिखला दिया कि "Love and Sympathy are the best instrument of a man"

रघुनन्दन तिवारी 'निर्मूल'

विक्रमपुर एक बहुत बडा जूनियर हाई स्कूल था। उसमें दो छात्र पढ़ते थे, ये दोनो कक्षा ८ में पढते थे। एक का नाम अशर्फीलाल और दूसरे का नाम रजनीकान्त था। रजनीकान्त प्रखर-बुद्धि का छात्र था। कक्षा क्या पाठशाला में सर्वोपरि था। सुशील और सरस इतना था कि कहना ही नही, शान्ति की सौम्य-मूर्ति था। आलस्य इसे छू तक नही गया था। बडा उद्योगी एव परिश्रमी था। विलासिता तो इसके पूरे कुटुम्ब से चली गयी थी। दया तो इसके रोम-रोम से टपकती थी। बड़ा मधुर-भाषी था। क्षमा का तो अवतार था। रूखे-शब्द तो इसके हृदय-कोष में थे ही नही। नम्रता तो इसकी निजी सम्पत्ति थी। माता-पिता तथा गुरु का परम-भक्त था। अभिमान क्या वस्तु है इसे वह जानता ही नही था। परोपकार तो इसके हाथो की मनियाँ थी। त्याग का पक्का पुजारी था। घर भी लक्ष्मी का हेड-क्वार्टर था। किसी वस्तु का भिखारी नही था।

अशर्फीलाल का स्वभाव रजनीकान्त के पूरे विपरीत था। नाम तो था इसका अशर्फीलाल पर था पूरा दरिद्र। इसको कौन कहे इसके बाप

ने भी कभी अशर्फी नही देखी होगी। बाप ने नाम-करण करते समय सोचा होगा कि मेरा पुत्र पढ़-लिख लेने पर सैकडो अशर्फियाँ रोज कमायेगा। पिता का नाम कौडी राम था। वह कौडी कौडी को मुहताज था। वह अपने माँ बाप को कोसा करता था, कहा करता था कि यदि मेरा नाम कौडीराम न होता तो मैं दरिद्र नही होता। यही सोचकर उसने अपने पुत्र का नाम अशर्फी रखा। मोती, हीरा, जवाहर और पन्ना नाम तो उसे याद ही नही पडे होगे, नहीं तो नामकरण करते समय कभी भी नही चूकता। दूसरा कोई पुत्र ही नही पैदा हुआ कि अपनी इच्छा-पूर्ति करता।

ये दोनो पडोसी थे। दोनो एक साथ पाठशाला जाते, एक साथ लौट कर गृह आते। दोनो मे बडा गहरा प्रेम तो न होता पर रजनीकान्त का स्वभाव ही ऐसा था कि वह किसी से विरोध नही करता था। अशर्फीलाल बडा क्रूर था। निर्दयी था। निस्पृह था। स्वार्थी था। छल-छद्म तो कूट-कूट कर भरा था। मानवता तो उसके यहाँ से कूच कर गयी थी। सदैव कक्षा मे वह सबसे लडा करता था। उद्दंड वह काफी था। जुआडी और चोर परले नवर का था। अध्यापक तथा छात्र उससे ऊब गये थे।

रजनीकान्त अशर्फीलाल से बडा प्रेम करता था, सदैव गोंद की तरह इससे चिपका रहता था। केवल एक लक्ष्य, अशर्फी के सुधार का इसके सामने था। प्रेम और क्षमा को उसने सुधार का प्रधान-शस्त्र माना था। इसके सुधार के लिये वह अपना सर्वस्व त्याग करने को तैयार था। दोनो एक साथ खेलते-कूदते और लिखते-पढते थे। रजनीकान्त के सरल-स्वभाव पर इसकी उद्दण्डता का कोई प्रभाव नही पडता था। रजनीकान्त आठ प इसे समझाता पर इसके ऊपर क्षणिक प्रभाव भी नही पडता था। पुस्तकें तथा कापियाँ रजनीकान्त ही क्रय करके देता था। इन्हे भी वह बेचकर जुआ खेलता था। घर मे बडी कठिनाई से फीस पाता उसे लाकर दाव पर रख दिया करता था। हार जाने पर रजनी से माँगता। रजनी घर से

सुन्दर-सुन्दर वस्तुएँ जलपान के लिये ले जाता पर विना अशर्फी को दिये नही खाता था । रजनी को इसकी दीनता का वडा ध्यान था ।

एक दिन अशर्फीलाल पाठशाले से एक अध्यापक की घडी चुरा कर लाया । वीस रुपये पर धरोहर रखा । इन रुपयो से जुआ खेला । पहले तो काफी रुपये जीता अन्त मे सव हार गया । इस वात का पता अध्यापको तथा छात्रो को चल गया । वडी दौडधूप हुई पर अशर्फी के पास रुपये कहाँ कि वह दे । रजनीकान्त से देखा नही गया, वह अपने रुपयो से घडी छुडाया । अध्यापक को घडी दिया ।

अध्यापक—तुमको यह घडी कहाँ मिली ?

रजनीकान्त—स्कूल के कूडा-कर्कट मे यह चमक रही थी, मैं उधर पेशाव करने गया तो इसे उठाकर देखा तो जान पडा कि यह आप की घडी है । मैंने अभी-अभी इसे पाया है ।

अध्यापक—पर इसमे गर्द व धूल तो नही लगी है ।

रजनीकान्त—मैंने इसे अपनी रूमाल से अच्छी तरह साफ किया है ।

अध्यापक—मैंने तो विश्वस्त-सूत्र से सुना है कि इसे अशर्फीलाल चुरा ले गया था । इसी लज्जा से वह स्कूल भी नही आता ।

रजनीकान्त—नही मास्टर साहव, यह वात नही है । उसके पेट मे दर्द है । इस कारण वह कई दिनो से पाठशाले नही आता ।

अध्यापक—तुम वडे अच्छे लडके हो । मै तुम पर वहुत प्रसन्न हूँ । अशर्फीलाल तो वडा दुष्ट है । सम्भव है कि तुम्हारे सम्पर्क से उसका सुधार हो ।

रजनीकान्त सायकाल घर गया, दौडा हुआ अशर्फी से मिला । सारा समाचार सुनाया । अशर्फीलाल वडा प्रसन्न हुआ, वचन दिया कि अव मैं जुआ-पिशाचिनी के निकट नही जाऊँगा । वडी तत्परता मे पढूँगा । खा-पीकर दोनो एक साथ रात्रि में पढने लगे । प्रात काल दोनो पाठशाला गये । लडके उसे चोर-चोर कहकर चिढाने लगे । रजनी ने सव को समझाया

कि उसने ऐसी नहीं चराथी थी। सब छात्र मान गये। सभी छात्रों तथा अध्यापकों के ज्ञानी में विख्यात था।

वार्षिक-परीक्षा प्रारम्भ हुई। रजनी के पीछे अशर्फी की सीट थी। वह ऐसा चोर व नटखट लड़का था कि प्रति दिन रजनी की नकल करके लिखता था। इंगलिश और गणित के दिन वह झपट कर रजनी की कापी उठा लिया और उस पर अपना रोल नम्बर बना दिया। रजनी ने सोचा कि यदि मैं कुछ बोलता हूँ तो इसे बड़ा कड़ा दण्ड मिलेगा अतः वह चुप रहा और उसकी कापी पर काट कर अपना रोल नम्बर बना दिया। घण्टा समाप्त हो चला था। सबकी कापी छीन ली गयी। इस बात को रजनी ने किसी से नहीं कहा।

परीक्षा-फल प्रकाशित हुआ। रजनी अनुत्तीर्ण हुआ और अशर्फीलाल का क्या पूछना वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। इगलिश और गणित मे उसे विशेषता मिली। परीक्षा-फल देख कर छात्रो तथा अध्यापको के हृदय मे आश्चर्य की लहर लहराने लगी। इधर रजनी बड़ा प्रसन्न हुआ। वह दौड़ा हुआ अशर्फी से मिला और उसे बधाई दिया उससे मिठाई माँग कर खाया। दोनो पाठशाले आये। दोनो प्रसन्न। अशर्फी की प्रसन्नता का तो अन्त ही नही। दोनो अपने-अपने कक्षा-अध्यापक से मिले। कक्षा-अध्यापक रजनी से पूछता है कि क्यो जी, यह क्या हुआ ? तुम एक प्रार्थना-पत्र अपनी कापियो के पुन संशोधन के लिये लिख कर दो मैं अभी-अभी खूब तान कर लिखता हूँ।

रजनीकान्त—मास्टर साहब, मेरे प्रश्न-पत्र वास्तव में गणित और इगलिश के बहुत खराब हो गये। मुझे उस दिन चक्कर आ रहा था। मै घबरा गया था। पता नही क्या-क्या लिख डाला। इसमें परीक्षको का दोष नही, मेरे भाग्य का दोष है। ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।

रजनी पुन उसी पाठशाला मे अपना नामांकन कराया। अशर्फी पास ही के एक हाई स्कूल में अपना नाम कक्षा ९ में लिखाया। दोनों पूर्ववत

एक साथ पाठशाला जाते और लौटते। रजनी का प्रेम अशर्फी के प्रति वैसा ही था जैसा पहले था। उसकी सहायता के लिये कोई वस्तु अदेय नहीं थी। वह अब भी रजनी की चोरी जुआ खेला करता था। अपने घर का सामान बेच-बेच कर वह जुआ खेला करता था। रजनी कभी-कभी पूछता था कि तुम अब जुआ खेलना छोड दिये न? अशर्फी ऐसा रच-रच कर उत्तर देता कि सीधे स्वभाव वाले रजनी को विश्वास हो जाता।

अशर्फी की रुचि पढने मे कम थी। क्लास के छात्रो ने उसे घृणा थी। सभी छात्र उसे अवहेलना की दृष्टि से देखते थे। उसने जुआडियो का एक बहुत बडा दल बना लिया था। जुआ खेलने की उसकी प्रवृत्ति दिनोदिन बढती ही गयी। उसके माता-पिता उससे रुष्ट रहा करते थे। उससे तग आ गये थे। कोई दिन ऐसा नही था जिस दिन उसकी चोरी की शिकायत न होती।

रात्रि का समय था। वह पास के स्टेशन पर चला गया। एक टी० टी० आई० के रूम मे गया। वह सो रहा था। उसकी वर्दी खूँटी मे टँगी थी। वह वर्दी चुरा लाया। वर्दी पहन लिया। ट्रेन मे सवार हो गया। टिकट की जाँच करने लगा। चेकिग मे यात्रियो से काफी रुपये पैदा किया। आयु १८ वर्ष से कम न थी। हट्टा-कट्टा था ही। कद भी ऊँचा था। चलता पुरजा मे पूछना ही नही। किसी को शक हो तो कैसे हो? अन्य टी० टी० आई० उससे परिचय लेना चाहते तो उन्हे धत्ता बता देता। धीरे धीरे कुछ टी० टी० आई० को शका होने लगी पर कौन जाये जाँच पडताल के व्यर्थ बखेडो मे पडने, इस विचार से सब छोड देते थे। चेकिग करते हुए उसे ३ दिन बीत गये उसके पास लगभग सवा सौ रुपये हो गये। वह खूब मौजे उडा रहा था।

इधर टी० टी० आई० जगा। वर्दी की ओर दृष्टिपात किया। बडा आश्चर्य हुआ। हो हल्ला मँचाया। थाने में रिपोर्ट किया। अपने विभाग को सूचित किया। चारो ओर से छानबीन प्रारम्भ हो गयी। समाचार-

पत्रों में प्रकाशित हुआ। यह समाचार चारो ओर बिजली की भाँति फैल गया।

अशर्फीलाल चेकिंग कर रहा था। एक स्टेशन पर गाडी रुकी। पहला टी० टी० ग्राई० संयोग वश वहाँ पहुँच गया जहाँ अशर्फीलाल खडा था। उसने अपनी वर्दी पहचान ली। वर्दी को दो तीन जगह चूहों ने काट दिया था उसको उसने जाली करा कर बंद कर दिया था, इस कारण उसने अपनी वर्दी पहचान ली। चुपके से पुलिस को संकेत किया, वह पकड लिया गया। उसकी चालान हुई। उसके पाकेट से १३७ ५० रुपये निकले। उसका बयान हुआ। जिस स्कूल मे पढता था वहाँ का रजिस्टर देखा गया। वह पूरे ६ दिन से अनुपस्थित था। पूरे मामिले की छानबीन की गयी। ६ माह की सख्त सजा हुई। वह डिस्ट्रिक्ट जेल भेज दिया गया।

इस घटना का समाचार रजनी को प्राप्त हो गया था। वह निर्णय सुनने के समय कचहरी पहुँच गया था। वहाँ निर्णय सुना। उसे बडा हार्दिक-कष्ट हुआ। वह चकित था, स्तब्ध था। उसने अशर्फी की ओर देखा और वह रजनी की ओर देखा। रजनी की आँखो से अश्रुओं की धारा फूट पडी। भीड भी थी। मित्र भी थे। परिवार भी था। माता-पिता भी थे। उनके नेत्रों से आँसू बह रहे थे। माता का वक्षस्थल आलोडित हो चला। मातृत्व का अटूट-स्नेह उमड चला। माता गम खा कर गिर पडी। कौन उठाये ? कुछ देर के लिये रजनी ठिठक गया। होनहार प्रवल था। निर्णय उचित था। स्पष्ट था। रजनी दौड पडा। अशर्फी की माँ को उठा लिया। शांत कराया। पिता दुखी था। अपने भविष्य की चिन्ता मे चिन्तित था। मौन था। रह-रह कर अपने भाग्य को मन ही मन कोसता था। वाणी उनके भी थी, वह बोल सकता था। आँखे, उसके भी थी वह आँसू बहा सकता था, पर किस पर ? अपने कुपुत्र अशर्फी पर या अपने दुर्भाग्य पर ? निर्णय करना उसके बुद्धि से परे था। वह मौन था, क्यो ? अपने कल्पित-दुर्ग की प्राचीरो को नोना खाते देख कर।

[२]

रजनीकान्त की परीक्षा हुई। कुछ महीनो में परीक्षा-फल पकपका कर बाहर आया। अब की बार उसका परीक्षा-फल ग्रहण से मुक्त, दीप्त-मान-प्रभाकर की भाँति चमकता हुआ निकला। जिले में सर्वोच्च स्थान प्रथम-श्रेणी मे निकला। उसके माता-पिता यह समाचार पाये। बहुत प्रसन्न हुए, पर रजनी को कहाँ प्रसन्नता। उसके हृदय मे तो एक कसक थी। एक टीस थी। अशर्फी की जुदाई उसके हृदय को रह-रह कर मसक रही थी। अन्तर्वेदना थी। अव्यक्त थी। किससे कहे। सुनने वाला भी तो कोई हो।

रजनी रात्रि को सोया। स्वप्न देखा, यकायक चौंक पडा। खाट से उठ पडा। स्वप्न मे उसे जान पडा कि अशर्फी द्वार पर पुकार रहा है। दौड़ा द्वार तक आया पर यहाँ कुछ नही, केवल अंधेरी रात्रि। नीरवता का साम्राज्य। रजनी, रजनी की विमूढता पर अट्टहास कर उठी। एक ठहाका मारो। रजनीकान्त हक्का-बक्का सा हो गया। कैसा ठहाका? आकाश की ओर देखा। वहाँ तारे उस पर मुस्कुरा रहे थे। वह सिहर उठा। हाथ मलने लगा। हा मेरे मित्र, नही-नही मेरे देवता। कौन देवता? जो मदिरो मे रहता है, नही, नही वह देवता जो मेरे हृदय-मदिर मे रहता है। कहाँ हो? बोलो। क्या चाहते हो? माँगो। लज्जा न करो। भूल सबमे होती है। फिर भूल कैसी? देवता और भूल। समझ मे नही आता। कुछ नही, यह तो मेरी भूल है कि अब तक तुमसे नही मिला। तुम डिस्ट्रिक्ट जेल मे साँस छोड रहे हो। बैरक मे दुखद-जीवन बिता रहे हो। मैं तुम्हारा सच्चा मित्र हूँ, कैसे कहूँ, पर याद रखो शीघ्र मिलूँगा। प्रेम की प्रेरणा का गतिरोध कौन कर सकता है? प्रेम तो बसत है। उसके सौरभ और रूप का अन्त नही। उसमे पतझड? अभी तो तुम्हारे जीवन की कहानी कहाँ पूरी हुई? अभी तो आरम्भ ही किया था। कहाँ सुनाया। मैं आऊँगा और सुनूँगा। मै निद्रा देवी की गोद में था। उसने

नानी की भाँति तेरी कुछ कहानी सुनाया पर उतने से सतोष कहाँ ? उसने तेरा कराहना सुनाया पर अपूर्ण। घबराओ नही, मैं आ रहा हूँ। तेरी कहानी सुनूँगा। मेरे देव ! मै भूला नही हूँ, पूजोपचार लेकर आ रहा हूँ।

प्रात काल हुआ। रजनी उठा। माँ से कह कर अच्छे-अच्छे पक्वान्न तैयार कराया। कुछ रुपये लिया। सेन्ट्रल जेल पहुँचा। आदेश प्राप्त किया। अशर्फीलाल से उसका साक्षात्कार हुआ। अशर्फी की आँखो मे आँसू छलछला आये। रजनी ने उसके सामने पक्वान्न रखा। ये रजनी के उपहार थे। उसे पूर्ण सान्त्वना दिया। कुछ रुपये भी दिया। उसके माता-पिता का समाचार सुनाया। मिलने का समय पूर्ण हो गया। तृष्णा-भरी आँखो से देखा। घर वापिस आया। पहले अशर्फी के घर गया। उनके दुखी माता-पिता ने उसका समाचार सुनाया।

माता—बेटा ! अशर्फी कब जेल से छूटेगा ?

रजनीकान्त—बहुत शीघ्र छूटेगा।

माता—वह कैसे ? मेरी याद मे तो वह बहुत दुखी होगा।

रजनीकान्त—कोई घबराने की बात नही, यह तो समय है, सब पर मुसीबत आती है। महादानी महाराज हरिश्चन्द्र पर भी विपत्तियो का पहाड़ घहरा उठा था। त्रिलोकीनाथ राम को भी जगल मे चौदह वर्ष तक दर-दर की खाक छाननी पडी। महारानी सीता को अशोक-वाटिका मे पति-देव राम का असह्य-वियोग सहना पडा। क्या अत्याचारी रावण के कारागार से भी यह कारागार दुखदायी हो सकता है ? कदापि नहीं। उनकी तुलना में यह कारागार कोई मूल्य नही रखता। भक्त वसुदेव और देवकी को अत्याचारी कस के कारागार मे कितना कष्ट झेलना पडा जिसकी याद करके रोगटे खडे हो जाते हैं। कस के कारागार का कष्ट कहाँ, और कहाँ मेरी प्रिय-सरकार का कारागार ? उसके कारागार के कष्टो के सामने अपनी प्रिय सरकार के कारागार का कष्ट पँसगा भी नही है।

माता—अच्छा बेटा। तुम्हारी बातो से बडा सन्तोष हुआ। एक बार किसी प्रकार मुझे अशर्फी को दिखा देते।

रजनीकान्त—तुम क्या भेंट करोगी मैं तो उससे मिलता ही रहूँगा। उनके पिता जी से सारा समाचार कह दीजियेगा। उन्हें धैर्य दिला दीजियेगा।

माता—अच्छा बेटा, जाओ रात्रि अधिक हो गयी। तुम्हारे माता-पिता तुम्हारी प्रतीक्षा करते होंगे। अशर्फी के बाप आवेंगे तो मैं उनसे सारा समाचार कहूँगी।

रजनीकान्त घर आया। भोजन किया। थका तो था ही। शीघ्र ही निद्रा-देवी की गोद मे पौढने लगा।

दूसरे दिन बहुत तडके उठा। शौचादिक-कार्यों से निवृत्त हुआ। भोजन किया। जू० हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक से मिला। अपनी टी० सी० प्राप्त किया। हाई स्कूल पहुँचा। यह वही हाई स्कूल है जिसमे उसका मित्र अशर्फी लाल पढता था। उसी क्लास मे नाम लिखाया, जिसमे उसका साथी पढता था। इस क्लास मे पहुँचते ही रजनी की पुरानी स्मृति नवीन हो गयी। उसकी मूर्ति सामने आ गयी। उस दिन उसे पढना-लिखना अच्छा नही लगा। छुट्टी हुई। घर आया। अकेला था। आगे चलने मे उसके पैर रुकते थे। घर पहुचा। घर सूना जान पडा। जलपान किया पर उसमें स्वाद नही आया। पुस्तके खोल कर पढने बैठा पर उनमे उसे रुचि नही हुई। पुस्तके बद कर दिया।

वह प्रति सप्ताह अशर्फी से मिलने जाता। उसे नयी-नयी वस्तुएँ खाने के लिये ले जाता। अपने सामने उसे खिलाता स्वय उसके साथ खाता। उसे शाति देता। नित्य उसके मुक्त होने की घडियाँ गिनता। वह शुभ घडी आयी। टाँगा किया। कारागार के फाटक पर पहुँचा। अशर्फी मुक्त हुआ। फाटक से बाहर निकला। रजनी ने स्वागत किया। गले मे हार पिन्हाया। उससे लिपट गया। दिल भर कर मिला। मार्ग मे बाते होती

किया जो कि तुमको नही करना चाहिये । कान पकडो कि फिर ऐसा नीच काम नही करूँगा । अपने माँ-बाप को कलकित नही करूँगा । देखो अपनी माता को, तुम्हारे वियोग में कितनी दुबली पतली हो गयी है, केवल अस्थि-पजर रह गये हैं । डाक्टर वर्मन की शीशी पर बने हुए दुबले चित्र की सी हो गयी है । पिता तुम्हारे वियोग में खाट पकड लिये थे । आज न जाने कैसे खडे है । पागल के से हो गये थे । मुँह दिखलाना उनके लिये कठिन सा हो गया था । सारी खेती गृहस्थी उनकी ठप सी हो गयी थी ।

रजनीकान्त—अच्छा, आप लोग बहुत उपदेश दिये । अब आप लोग अपने-अपने घर जाये । अशर्फी कोई मूर्ख थोडे ही है भूल किससे नही होती । भूल तो देवताओ से भी हो जाती है । यह तो आदमी ही ठहरे । समय का चक्र है । किसी को दोष नही देना चाहिये । जैसा लिखा होता है वह होकर रहता है ।

सब लोग अपने-अपने घर जाते है । रजनीकान्त घर जाने के लिये कौडी राम से अनुमति माँगता है ।

कौडीराम—बेटा ! तुम बडे यशस्वी हो । बेटा ! तुम्हारे यश की सुगध कण-कण मे व्याप्त होवे । तुम्हे भगवान चिरजीवी रखे । तुम हम लोगो के जीवनाधार हो । हम लोगो को डूबते से बचा लिये । ईश्वर तेरा भला करे ।

रजनीकान्त घर चला गया । इसके पिता अजयकुमार ने सारा समाचार पूछा । उसने सारा हाल-चाल अपने माँ-बाप से कहा । अजयकुमार बहुत प्रसन्न हुए और सिर पर हाथ फेरते हुए कहे कि बेटा रजनी ! मै तुम्हारे इस कार्य से बहुत प्रसन्न हूँ । इसी प्रकार सदैव दीनो का उपकार करना चाहिये । उसकी माता शैलकुमारी ने भी रजनी की भूरि-भूरि प्रशसा की, तीनो ने भोजन किया । रजनी अपने कमरे मे सोने गया । चारपाई पर पडते ही निद्रा ने आ दबाया ।

इकट्ठा मिली थी। रजनी ने अपने छात्र-वृत्ति के रुपयों में से रुपये दिया। कंकण छुड़ाया। अशर्फी को माता को दिया। उनसे कंकण छुड़ाने का भेद बतलाया पर जननी माँ से छिपा रखा। विमला ने शतश आशीर्वाद दिया। उसके इस व्यवहार से गद्गद हो गयी। कुछ बोल न सकी, बोले कैसे ? दीनता ने उसके मुख पर ताला लगा दिया था। जब-जब रुपयों या किसी वस्तु की आवश्यकता पड़ती वह उसे दे दिया करता था। उसे वह अपना परम-अनन्य-मित्र अपना सर्वस्व मान चुका था।

एक दिन फुटबाल खेलते समय रजनी आहत हुआ। अशर्फी ने उसे देखा पर आँख उठाकर भी नहीं पूछा। घर चल दिया। कक्षा के अन्य छात्र तथा अध्यापकों ने उसके दवा का उपचार किया। अस्पताल पहु-चाया। वहाँ वह पूरे ३ दिनों में स्वस्थ हुआ। घर पर रजनी के माता-पिता व्यग्र हो उठे। दोनों समाचार पूछने अशर्फी के घर पहुँचे। उसने कुछ भी नहीं बतलाया। अजय की व्यग्रता चर्म सीमा को पार कर गयी। रातों रात बेसुध होकर स्कूल पहुँचे। वहाँ से पता लगाकर अस्पताल पहुँचे।

अजयकुमार—बेटा ! तुमने अशर्फीलाल से घर क्यों नहीं कहला भेजा ? उससे पूछा तो उसने उत्तर दिया कि मैं कुछ नहीं जानता।

रजनी—मैंने ही उसे रोक दिया था कि तुम इस समाचार को माता-पिता से मत कहना नहीं तो वे लोग सुनेंगे तो व्यर्थ घबरायेंगे।

अजयकुमार—हाँ बेटा ! तुमने तो बड़ी चालाकी की पर तुम्हारी माता बहुत घबरा उठी। मैं भी अपने होश में नहीं रहा। दौड़ा-दौड़ा स्कूल आया, वहाँ से पता लगाकर यहाँ आया। छात्रों तथा अध्यापकों ने अजय-कुमार को काफी सन्तोष दिलाया। अजयकुमार वहाँ से घर लौटा और अपनी स्त्री से सारा समाचार सुनाया। वह व्यग्र हो उठी और रोने लगी। उसे समझा-बुझा कर अजय ने शान्त किया।

तीन दिनों के बाद रजनी स्वस्थ होकर गृह पहुँचा। उसके बहुत से

पुन दौडा हुआ आया और पीछे मे उस पर कीचड उछाला। किसान पीछे मुडा। अब उसे होश हुआ, उसने देखा कि कपडे का बंडल नही है। वह बहुत घबराया। अशर्फी ने बहुत सहानुभूति दिखलाते हुए कहा कि तुम्हारे कपडो का बंडल पीछे उस नल के पास गिर गया है, जल्दी जाओ, नही तो कोई उठा लेगा। किसान घबराया। परसो ही उसके लडके की बारात जाने वाली थी। किंकर्तव्यविमूढ हो गया। अशर्फी ने कहा कि सोचते क्या हो ? अपना बंडल तथा अन्य सामान यही रख दो। दस ही कदम तो है, दौड जाओ। उठा लाओ। मै देखता रहूँगा। अशर्फी का ठाट-बाट बडा भडकीला था। देखने में किसी भले मानुष मे कम नही था। किसान को उस पर विश्वास हो गया। उसने अपने गहनो का बंडल उसे थमा दिया। दौडा दौडा पीछे गया। इधर अशर्फी बेचारे किसान के गहनो की गठरी लेकर नौ दो ग्यारह हो गया। किसान निराश होकर लौटा तो देखा कि यहां किसी का पता नही। वह पागल हो गया। सडक पर बेहोश होकर गिर पडा। हो हल्ला मँचा, पर कौन पकड सके। वह वहाँ से ऐसा गायब हुआ जैसे गधे के सिर से सीग। पुलिस छानबीन मे परेशान थी पर सब टायँ टायँ फिस।

किसान छाती पीट-पीट कर रोता और गिडगिडाता था, बार-बार यही कहता था कि हाय ! मेरे गहनो और कपडो की गठरी क्या हुई ? मै सेठ के यहाँ से उधार कपडे और गहने ले जा रहा था, कुल १२००) के सामान थे। हाय ! मै कौन सा मुंह दिखलाऊँगा। घर कैसे जाऊँ ? मेरे बेटे की परसो ही सादी है। कैसे होगी। छाती पीट-पीट कर वह रोता। कभी बैठ जाता। कभी बेहोश होकर भूमि पर लेट जाता। इस बेचारे को कोई घर पहुँचाने वाला भी नही था। रजनी उधर से आया। किसान की दशा देखा। बडी दया आयी, उसे उठाया। उसका पता पूछा। इक्के का प्रबंध किया। इक्के पर प्रेम मे बैठाकर उसे उसके घर पहुँचाया। भाडा अपना, अपने साथियो का तथा किसान का, सब अपने पास से चुकाया। नाम पूछा। उसने अपना नाम अशोक बतलाया पर आज वह अशोक नही था,

पूरे शोक मे भरा था। रजनी ने सान्त्वना भरे हुए शब्दो मे कहा कि दादा! अपने नाम का ध्यान करो। आपका नाम अशोक है फिर आप इतना शोक क्यो करते है? रजनी के साथ उसके कई साथी भी उसके गृह गये थे। उसने वृद्ध किसान से कपडो तथा गहनो की लिस्ट माँगी और वृद्ध किसान से ईश्वर पर विश्वास करने के लिये कहा।

रजनी—बूढे दादा! आप चिन्ता न करे। आप के लिये पुन उसी दुकान से कपडे और गहने खरीदे जायँगे। वही गहने और कपडे आप को दिये जायँगे। आप के लडके की शादी नही रुकेगी। मैं कल सब सामान आप का पूरा कर दूँगा। काफी सतोप दिया। बूढे किसान की जान मे जान आयी। साथियो सहित लौटा। रजनी (साथियो से) देखिये भाइयो, जैसे हो वैसे कल इस कार्य को करना है। धन सग्रह करके इसके सारे कपडे व गहने खरीदे जायँ। मेरी पाठशाला एक बहुत बडी पाठशाला है। १२०० से ऊपर छात्र पढते है। यदि प्रति छात्र एक रुपया भी चन्दा मिलेगा तो देखते देखते बारह सै रुपये इकत्र हो जायँगे। यदि गहने और कपडे नही दिये जायँगे तो यह बूढा अवश्य शरीर त्याग देगा। इस बेचारे का कितना बडा अपमान होगा। यह ससार मे क्या मुंह दिखलायेगा।

रजनी दूसरे दिन प्रात घर से निकला। अपने साथी अनिल कुमार के यहाँ पहुँचा। उसे साथ लिया। ८ बजे ही पाठशाले पर उसके साथ पहुँचा। अशर्फी भी साथ था। यह समाचार अखबारो में भी प्रकाशित हो चुका था। उसकी एक प्रति रजनी को प्राप्त हो गयी थी। रजनी ने इसको प्रमाण-स्वरूप अपने पास रख लिया। प्रार्थना हो रही थी। प्रधानाचार्य से कुछ समय माँगा। एक ऊँचा चबूतरा था उस पर चढ गया। सभी अध्यापको तथा छात्रो को सम्बोधित करते हुए बोला—पूज्य गुरु जनो एव प्रिय साथियो!

कल एक वयोवृद्ध दीन किसान को किसी चतुर ठग ने छल लिया। उसके १२००) के कपडो तथा गहनो के बडलो को चरका देकर ठग लिया।

२

बूढा किसान अपने पुत्र की शादी के लिये यह सामान ले जा रहा था।
कल ही उनके पुत्र की शादी है। मैंने उसे पूर्ण आश्वामन दिया है कि
आज ही गहने और कपडे क्रय करके दिये जायेंगे। यह भार मैंने आप
लोगो के वल पर उठाया हैं, अपने स्कूल के वल पर लिया हैं। यदि आज
उमे गहने और कपडे नही मिले तो वह अवश्य आत्महत्या कर लेगा। मेरे
आश्वामन की वह घडियाँ गिनता होगा। उसके हृदय में इस समय मृत्यु
और मेरे आश्वासन का द्वन्द्व-युद्ध चल रहा होगा। यदि मेरा आश्वामन पूर्ण
न हुआ नो मृत्यु की उम पर निश्चय विजय होगी।

अशर्फीलाल—आप मेरे अनन्य-मित्र हैं, यह वात किसी से छिपी नही
है। आप मे और मुझ मे एक प्रगाढ प्रेम है। इम नाते से आप से प्रार्थना
करता हूँ कि आप क्यों यह व्यर्थ की वला अपने मिर मोल ले रहे है। यह
तो समार है। भीषण-झझावात के चपल-चपेटो से और दिन रात के थपेडो से
लोग इम ममार मे नीचे गिरते हैं पुन कदुक वन ऊपर जाते है। सासारिक
जीवन एक उल्का-सा है। यहाँ गिरना, उठना, वनना-विगडना, हँसना-
रोना, जीना-मरना तो लगा ही रहता हैं। यह ससार तो एक शाश्वत-चक्र
है जिसे हम और तुम नही वदल सकते।

रजनी—नियति-नटी के चक्र को वदलना कठिन है पर हम तो मानव
है, अपनी मानवता छोड कर दानव क्यो वनें? समाज-सेवा करना हम
माथियो का कर्तव्य है। मानव-जीवन दुर्लभ है पुन प्राप्त हो या न हो।
एक एक रुपये, दो दो रुपये सव लोग अपने निजी-व्यय से वचा कर यदि
उम वृद्ध को जीवन-दान दे दे तो कितना वडा यश होगा। प्रात स्मरणीय
पूज्य मालवीय जी ने हिन्दू-विश्व-विद्यालय की पावन-कीर्ति को आज अजर-
अमर कर दिया। कैसे? अपने धन मे? नही, भिक्षा से। दस की लाठी
एक का वोझ होता है। आओ, हम लोग आज इस पुण्य-कार्य में डॅट जायें।
एक वार मव लोग पूज्य मालवीय जी की जय वोल दे।

सभी छात्र—पूज्य मालवीय जी की जय ।

गगन-भेदी जय-ध्वनि से सभी छात्रो एव अध्यापको में एक जागृति आ गयी। रजनी ने सर्व प्रथम अपने पास से ४०) दान की थाल मे रख दिया। फिर क्या था, देखा देखी पाप, देखा देखी धर्म। चारो ओर से नोटो की वर्षा होने लगी। क्षण भर में १२५६) इकत्र हो गये। अध्यापको ने भी इस पुण्य कार्य में खुले दिल से भाग लिया। केवल अशर्फीलाल एक ऐसा छात्र था जिसने एक पैसा भी नही दिया। चुपके से दान देते समय खिसक गया।

रजनी रुपये सहेजा। अपने मित्र अनिलकुमार को साथ लिया। उसी सेठ की दुकान पर पहुँचा जहाँ से उस किसान ने कपडे और गहने लिया था। कपडो तथा गहनो की सूची रजनी के पास थी। सूची सेठ को दिया। उसी के अनुसार गहने तथा कपडे लिया। सेठ का नाम पन्नालाल था। उसे आश्चर्य हुआ कि कल ही अशोक मेरे यहाँ से कपडे तथा गहने उधार ले गया, आज यह कैसा तमाशा है? कैसा जादू है? समझ मे नही आता।

रजनी—समाचार-पत्र दिखलाया। सारा दुखद समाचार कह सुनाया। पन्नालाल स्तब्ध हो गया। चिन्ता, हृदय-कूलो को तोडने लगी। क्यो? उधार रुपये नही मिलेंगे? नही, नही। उसे इस आकस्मिक-घटना पर चक्कर आ रहा था। मस्तिष्क में वेदनाओ का समुद्र और आश्चर्य का अधड उठ रहा था। रजनी तथा उसके साथियो के इस पुनीत और अश्रुत-पूर्व कार्य पर ठिठक सा गया। बच्चो के सद्व्यवहार तथा साहस ने उसके भूले हुए मस्तिष्क को एक ठोकर दिया। वह सँभल गया। होश मे आया। गहने तथा कपडे प्राचीन सूची के अनुसार दिया। रजनी तथा उसके साथियो ने सेठ को शतश धन्यवाद दिया।

रजनी ने एक तेज इक्का किया। अपने साथी अनिल के साथ अशोक के गृह को प्रस्थान किया। बीच मे भीखापुर थाना पडता था। सध्या का पीताभ-वायु-मण्डल शनै शनै रक्ताभ हो रहा था। भगवान मार्तण्ड

अपनी प्रखर-रश्मियो की रज्जु समेटता हुआ क्षितिज के अचल मे अपना मुख छिपाता हुआ जा रहा था। दिन भर के अवसाद से विश्राम लेने जा रहा था। सासारिक-प्राणियो को भी सन्तोष की साँस लेने का अवसर प्रदान कर रहा था, पर पुलिस को कहाँ विश्राम। उसके इक्के की पहिया कुछ बिगड गयी। इक्का रुक गया। रजनी का इक्का ठीक थाने के सामने फेल हुआ। रजनी अनिलकुमार के साथ अपने गट्ठर को लिये हुए उतरा, पुलिस का एक सिपाही चट इक्के के पास आ गया पूछा कि इस गट्ठर मे क्या है ? दिखलाओ।

रजनी गट्ठर खोलकर दिखलाया। उसी के अन्दर गहनो की सूची थी जिसमें अशोक का नाम लिखा था। सिपाही को शक हो गया क्योकि थाने में विवरण के साथ रपट हो चुकी थी। बस क्या था पुलिस को गध मिलनी चाहिए। सिपाही प्रश्नो की झडी लगा दिया। लगा बाल की खाल निकालने। रजनीकान्त और उसके साथी अनिलकुमार को लाल साफा लगा दिया। रजनीकान्त हक्का बक्का सा हो गया। उसका साथी भय-ग्रस्त होकर प्रकम्पित हो उठा। काटो तो बदन मे लोहू नही। आसमान से गिरा खजूर पर अटका। रजनीकान्त तथा उसके साथी ने काफी सफाई दी पर कौन सुनता है नक्कार खाने में तूती की आवाज। कौन भर पाई की सूची देखता है। दोनो को घसीट कर थाना मे ले गया। वहाँ उन पर काफी मार पडी, घूँसे पडे। लात और जूतो से पूर्ण स्वागत हुआ। उन लोगो की समाज-सेवा को पुलिस ने दफना दिया। दिन भर दोनो भोजन नही किये थे। पूरे व्रत थे। सध्या-समय जूतो, घूँसो और डठो का फलाहार मिला। लडखडा कर भूमि पर गिर पडे। होश आया तो दोनो को अशोक के प्रति चिंता जगी, चिंतित हो रोने लगे तो अन्य सिपाहियो ने डडो से उन दोनो की पीठ-पूजा की। प्रमाण देना चाहते थे पर कौन सुनता है। एक अपार-जन-समूह उमड आया। सभो ने छात्र-नाम पर थूका। धिक्कारा। चोर, डाकू, गिरहकट के विशेषणो से विभूषित किया। सम्पूर्ण वातावरण विपरीत था।

वायु प्रतिकूल, समय प्रतिकूल, भाग्य भी प्रतिकूल, परिस्थिति भी विरोध का दम भर रही थी। ऐसे समय मे उनके कराह को, उनकी चीख को कौन सुने ? सध्या वेला आतकित थी। रजनी रो रहा था। हृदय ममोस रहा था। उर्व्व-साँस ले रहा, था। क्यो ! पुलिस की मार से ? नही। जन-समूह के अगुश्त-नुमाई से ? नही। लोकापवाद से ? नही। वह रो रहा था, अशोक के शोक पर। अशोक को अशोक करने के लिये। वह रो रहा था, उसके जीवन की अतिम घडियो पर। उसकी अटूट अनवरत प्रतीक्षा पर।

सब लोग हटाये गये। दारोगा जी का आदेश हुआ। दोनो हवालात मे बन्द किये गये। यह खबर बिजली की भाँति नगर के एक छोर से दूसरे छोर को फैल गयी। पुलिस की सूचना भी सेठ पन्नालाल और अशोक के यहा नही पहुँची थी कि दोनो चटपट थाने पर पहुँच गये।

थानेदार उठकर सेठ का स्वागत किया। पास को एक कुर्सी पर सेठ को बैठाया और एक स्टूल पर अशोक भी बैठ गया।

थानेदार का नाम अत्याचारी सिंह था। वास्तव में यह बडा अत्याचारी था। दया तो इसे छू तक नही गयी थी। इसके सामने किसी के सम्मान का कोई मूल्य ही नही था। गहने तथा कपडो के बडल को उठा लाया। दोनो को दिखलाया।

अत्याचारी सिंह—आप लोग पहिचानिये यही वस्तुएँ थी, न ?

अशोक—(गहनो तथा कपडो को पहचान कर) हाथ जोडकर, हाँ सरकार। यही वस्तुएँ थी। इसी सेठ जी ने तो दिया है।

अत्याचारी सिंह—मैंने डाकुओ को पकड लिया है। बिना इनाम लिये ये वस्तुएँ नही मिलेंगी। बडा परिश्रम किया है। तब जाकर मिली।

जिस सिपाही ने माल बरामद किया था वह भी सामने आकर खडा हो गया और कहा कि बाबू साहब मैंने बहुत कोशिश करके डाकुओ को पकडा है मुझे भी इनाम बख्शीश चाहिये।

अशोक—हाँ सरकार आप लोगो ने अवश्य कोशिश की। आप लोगो

के परिश्रम का मुझे ध्यान है पर आप सेठ जी से पूछ लीजिये, मैंने सारी चीजें इनसे उधार खरीदा है। कल ही मेरे लडके की शादी है। इस समय मै वहुत तग हूँ। आप लोग मुझ पर कृपा करके इस कठिन समय में उवार दीजिये। मै आप लोगो से कोई वाहर हूँ। विवाह करके लौट आऊँगा तो अवश्य आप लोगो को पूजा चढाऊँगा। इस कृपा के लिये मै आप लोगो का जीवन भर अहसान मानूँगा।

अत्याचारी सिंह—वावू साहव। ये सव गटवड की वातें नही। हाथ पडे मामिला वे हाथ पडे पटपट। तुरत दान महा कल्यान होता है। काम निकल जाने पर कौन पूछता है। इधर उधर की भुलावे वाली वातें छोड दीजिये। जाइये इनाम लाइये। शीघ्र आपके सामान मिल जायें। ठाट से शादी कीजिये। कहिये सेठ जी ठीक कहता हूँ न?

पन्नालाल—हाँ ठीक ही है। आप ने कैसे इन चीजो को वरामद किया?

अत्याचारी सिंह—मैंने दो छात्रो को आज ही गिरफ्तार किया है। सूर्यास्त का समय था। ये दोनो आदर्श-महाविद्यालय के छात्र है। ये दोनो एक इक्के से जा रहे थे। अशोक के भाग्य से (मन में कहता है कि मेरे भाग्य से) थाने के सामने इक्का की पहिया खराव हो गयी। ड्यूटी पर रामाधीन सिपाही था। उसने इन दोनो को गिरफ्तार किया।

पन्नालाल सेठ—उन छात्रो में से एक की आयु १६ वर्ष के लग-भग है। गोरा-सा सुन्दर लडका है, कद का लम्वा है। दूसरा रग मे सांवला, घुँघराले वाल का, कद का छोटा है, पर सुन्दर है, आयु उससे कुछ ही कम है पर पहले लडके से कुछ पतला है।

अत्याचारी सिंह—हाँ, हाँ, आप ठीक कहते हैं। आप कैसे जानते है?

पन्नालाल—आज ही वे दोनो मेरी दुकान पर गये थे।

अत्याचारी सिंह—क्यो? कैसे गये थे?

पन्नालाल—वे दोनो छात्र हैं कहाँ?

अत्याचारी सिंह—हवालात में।

पन्नालाल—चिंतित हो जाते हैं। कुछ देर तक मौन हो जाते है। पुन: थानेदार से उन दोनो को दिखलाने के लिये कहते है।

अत्याचारी सिंह—क्या आप को भी उन दोनो ने धत्ता बतलाया है? हाँ तो, है दोनो ऐसे ही। अच्छा आप बैठे रहिये। कहाँ कष्ट करेंगे। (एक सिपाही से) जाओ उन दोनो छोकडो को हवालात से निकाल कर सेठ जी के सामने हाजिर करो।

अशोक—ऐसे ही लड़के तो कल मेरे यहाँ भी गये थे।

अत्याचारी सिंह—भाई! ये दोनो वडे चालू लडके हैं। यदि इनकी पूरी सज़ा नही होगी तो कुछ ही दिनो में सुल्ताना डाकू के कान काट लेंगे। हाँ तो कब गये थे?

अशोक—जिस दिन मेरे बंडल गायब हुए थे। अपने पास से इक्का करके उन लोगो ने मुझे मेरे घर पहुँचाया। मुझे बडा धैर्य दिया। बहुत समझाया और पकडे तथा गहने देने का वचन दिया।

अत्याचारी सिंह—अच्छा, दोनो वडे दक्काक डाकू है। जान पडता है कि इस कार्य में दोनो वहुत दक्ष हैं।

पन्नालाल—दोनो लडके आज ही तो मेरी दुकान पर पहुँचे थे। कपडे तथा गहने पुरानी सूची के अनुसार क्रय किये। मैंने उसी सूची के अनुसार कपडे तथा गहने दिया। अशोक की पुरानी सूची पर भरपाई भी कर दिया। एक नयी सूची ठीक करके पहली सूची के अनुसार दिया। दोनो छात्र वडे ही होनहार हैं। परोपकारी हैं। उत्साह तो उनके रोम-रोम से झलकता था, समझ में नही आता, क्या बात है?

अत्याचारी सिंह—ठक् सा हो जाता है। सोचता है कि यह कैसा तिलस्म है। बुद्धि परीशान है।

इसी बीच दोनो लडके सामने लाये गये। उनके कमर में रस्सी बँधी थी। अशोक और सेठ पन्नालाल अपने स्थान से उठ खडे हुए। एक साथ बोल उठे। हाँ, हाँ दारोगा जी, यही छात्र थे, यही लडके थे।

अशोक और अनिल दोनो चोट से सख्त घायल थे। कई स्थान से
रक्त वह रहा था। भूख से विकल थे। शरीर से कोमल थे। ज्वर भी हो
आया था। उनकी आँखो से आँसू वह रहा था। उन दोनो ने सेठ से करुणा
भरे शब्दो में कहा कि देखिये हम लोगो की यह दशा। हम लोगो ने हजार
सफाइयाँ दी पर पुलिस के लोग कुछ भी नही सुने। गाली देने, डाँटने फट-
कारने, मारने पीटने के सिवाय किसी अन्य बात पर इनका ध्यान ही नही
था। देखिये आप यह लिस्ट, जिस पर आप ने अशोक की भर पाई लिख
दिया था अभी तक मेरे पास ही है।

पन्नालाल—तुमने इसको दारोगा जी को दिखलाया नही।

रजनी—सेठ जी, हम लोगो की वातो को तो ये लोग सुनते ही नही
थे। न तो दारोगा जी सुनते थे, न सिपाही। बस हर तरफ से मारो-मारो,
पीटो-पीटो की आवाज ऊँची थी। कितनी मार पडी, कितनी गालियो की
वौछार पडी इसकी गणना नही। (अपने आहत स्थलो को दिखलाकर)
देखिए पुलिस की यह करामात।

अनिलकुमार—(चोट दिखलाकर) सेठ जी, मेरी भी दुर्दशा देख
लीजिये। देखिये पुलिस की मानवता।

रजनी और अनिलकुमार दोनो फूट-फूट कर रोने लगे। पन्नालाल
ने उन्हें धैर्य वँधाया। सहानुभूति दिखलाया। दशा देख कर पन्नालाल
की आँखो में आँसू भर आया। जहाँ-जहाँ चोट लगी थी, सब स्थानो को
देखा। पूरे आवाश में थानेदार तथा सिपाहियो से कहा कि आप लोगो
ने इन कोमल-सुकुमार और सभ्य बच्चो के साथ पशुवत व्यवहार किया
है। आप लोगो के ये अपराध किसी प्रकार क्षम्य नही है। मैं अभी-अभी
इसकी रिपोर्ट एस० पी०, आई० जी० तथा पुलिस-मंत्री को करने जा
रहा हूँ। आप लोगो के ये कार्य बडी नीचता के है। आप लोगो को
मारने का कहाँ अधिकार है? आप लोगो ने इन बच्चो की बातो पर
ध्यान नही दिया। इन्हें चोर और डाकू करार दिया। इन्हें क्रूरता के साथ

लात, मुक्के, घूसे, जूते तथा डडो से पीटा। आप लोग वास्तव में बडे क्रूर है। राम! राम! छि! छि! अपनी सरकार है। नेहरू जी की सरकार है। आज मै अभी-अभी सरकार से पूछता हूँ कि पुलिस को ऐसे क्रूर-व्यवहार करने की आज्ञा दी गयी है? क्रोध में वावला होकर सेठ जी खडे हो जाते है। दारोगा जी दौड कर पकड लेते हैं। हाथ जोड कर गिडगिडाने लगते है, माफी माँगते हैं और कहते है कि देखिये हम लोगो की रोजी आपके हाथ में है।

यह समाचार एस० पी०, आदर्श-महाविद्यालय के छात्रावास मे पहुँचा। छात्रो ने छात्रावास के अध्यक्ष से कहा। अध्यक्ष ने शीघ्र प्रधानाचार्य को सूचित किया कि रजनीकान्त और अनिलकुमार को भीखमपुर थाने के थानेदार ने वहुत वुरी तरह पीटा है और उन्हें अपने यहाँ के हवालात में वद कर दिया है।

प्रधानाचार्य, छात्रावास के अध्यक्ष को लेकर शीघ्र भीखमपुर थाने पर पहुँच गये। यहाँ आकर सारी घटना का अध्ययन किया। रजनी और अनिल को वुरी तरह घायल देखा। उन्हें वदी-रूप मे सामने पाया। प्रधानाचार्य के क्रोध का ठिकाना नही रहा। थानेदार के इस दानवीय व्यवहार पर उन्हे वहुत फटकारा।

प्रधानाचार्य—(रजनी तथा अनिल से) तुम लोगो ने कितने रुपये चन्दे से सग्रह किया है?

रजनी—यह है सूची। देख लीजिये।

प्रधानाचार्य—कुल १२५६) की वसूली हुई। अच्छा तो इन रुपयो को कैसे व्यय किया।

रजनी—१२००) के गहने तथा कपडे (सेठ जी की ओर सकेत करके) इसी सेठ जी की दुकान से क्रय किया।

प्रधानाचार्य—और ५६)

अनिल—५६) चन्दे के, कुछ रुपये हम लोगो के पास के, ठीक याद

नही है, चार ६ रुपये रहे होगे। (एक सिपाही की ओर सकेत करके) इन्होने छीन लिया है। इक्केवान के पास जो दिन भर की कमाई थी सब मार कर छीन लिया। उस इक्केवान के नम्बर को नोट कर लिया। उसका पता नोट किया। निशान अँगूठा लिया। उसे बहुत तग करके छोड दिया।

प्रधानाचार्य—(आवेश में आकर) मैं अभी अभी इस घटना की सूचना देने एस० पी० के यहाँ जा रहा हूँ। यह साधारण घटना नही है। यह क्षमा करने योग्य नही है। (बच्चो की चोट दिखलाकर) दारोगा जी ! आप की हिम्मत कि आप बिना प्रधानाचार्य से पूछे मेरे स्कूल के बच्चो के साथ दानवता का व्यवहार करे। आप लोगो ने बडी ज्यादती की है। बडा क्रूर बर्ताव किया है। मैं तो पास ही एक मील पर था। मुझे बुलाकर इन बच्चो के चरित्र के विषय में पूछना चाहिये था, न कि पशुओ की भाँति इस प्रकार पीटना चाहिये। आज ही आप लोगो को इस राक्षसी कुकृत्य का मज़ा चखाऊँगा। इतना कह कर चलने लगे।

अत्याचारी सिंह—(काँपते हुए दौड कर) प्रधानाचार्य को पकड लेते हैं। सिपाही उनकी कमर पकड कर झूल जाता है।

एक सिपाही चटपट रजनी और अनिल की कमर से रस्सी छोड देता है। सेठ जी और प्रधानाचार्य के सामने रजनीकान्त आकर खडा हो जाता है।

रजनी—(हाथ जोडकर) आप लोग (सिपाहियो तथा दारोगा जी की ओर सकेत करके) इन लोगो को क्षमा कर दें। मुझे कोई दुख नही है। यदि इन लोगो की नौकरी चली जायगी तो इन लोगो के बाल-बच्चो को बडा कष्ट होगा। मुझे तथा मेरे साथी अनिल को पूरा विश्वास है कि ये लोग अब भविष्य में ऐसा कार्य नही करेंगे। इन लोगो ने अनजान में ऐसा कार्य कर दिया है। इन लोगो को अपने किये पर पूरी लज्जा है। इन्हें अब अधिक कुछ न कहे। यदि आप महानुभावो का हम लोगो पर प्रेम है तो आप लोग इन्हें क्षमा कर दे। यदि हम लोगो के कार्य आप की दृष्टि

मे सराहनीय हो तो हम लोग आप लोगो से हाथ जोडकर यही पारितोषिक माँगते हैं कि आप लोग इन लोगो को क्षमा कर दें। छोड दें। मनुष्य परिस्थितियो का दास होता है। भूल किसमे नही होती। अब ये लोग कभी भी ऐसी भूल नही करेंगे। मुझे पूर्ण-विश्वास है।

पन्नालाल तथा प्रधानाचार्य—कैसे तुम्हे मालूम कि ये लोग पुन ऐसी भूल नही करेंगे।

अत्याचारी सिंह—मैं आप लोगो तथा इनके समक्ष पूर्ण वचन-बद्ध होता हूँ कि भविष्य मे पुन ऐसा कार्य नही करूँगा।

रजनी—इन लोगो की शर्मीली आँखें कह रही हैं कि भविष्य में ऐसा निन्दनीय कार्य कभी भी नही होगा। इनके आकार-प्रकार से, इनके रोम रोम से टपकता है।

अत्याचारी सिंह—आज मैं आप लोगो के समक्ष नत-मस्तक हूँ, पूर्ण लज्जित हूँ। आप लोगो को अपने सिपाहियो के सहित पूर्ण विश्वास दिलाता हूँ कि पुन आज से, भविष्य में रुपयो की तृष्णा में पड कर हम लोग कोई कार्य विना सोचे समझे नही करेंगे। यह ६० रुपये तेरह आने सिपाही के पास जमा थे। इतने रुपये दोनो लडको के पास से निकले थे। सिपाही ने लडको से लेकर मुझे दिया था। मैं आप को वापिस करता हूँ। आप से क्षमा-याचना करता हूँ। अपनी सर्विस की भीख माँगता हूँ।

पन्नालाल—आप लोग हम लोगो से क्या क्षमा माँग रहे है। हम लोग क्षमा देने के क्या अधिकारी है, क्षमा करें तो बच्चे करें, न करें तो बच्चे।

रजनी—दारोगा जी, आप आयु मे मुझसे बडे हैं, बुद्धि में बडे हैं। पिता-तुल्य हैं। हम लोग आप के बच्चे है, हम लोगो को आशीर्वाद दें कि हम लोग अपने देश मे (अशोक की ओर सकेत करके) ऐसे दुखियो की सेवा कर सकें।

अनिल—मेरी भी यही प्रार्थना है और आप लोगो से आशीर्वाद की

शुभ-कामना है कि हम लोगो की लगन देश-सेवा की ओर बढे। दीन-दुखियो की सहायता की प्रवृत्ति हम लोगो के मानस मे जगे।

अत्याचारी सिंह—(हाथ जोड कर) रोते हुए, बच्चो ! मै बडा पापी हूँ। तुम लोगो ऐसे सपूतो का पिता बनने योग्य नही हूँ। मुझे लज्जा है। अपने कार्यो पर घृणा है। मुँह दिखलाने योग्य नही हूँ।

सामने कुछ दूरी पर मेज रखी हुई थी। उस पर एक पिस्तौल रखी हुई थी। अत्याचारी सिंह मेज की ओर दौड पडे। पिस्तौल उठाया। आत्म-हत्या करने का विचार किया। रजनी ने झपट कर पिस्तौल छीन लिया।

अत्याचारी सिंह—पिस्तौल दे दीजिये। अब मै ससार मे मुँह दिखलाना नही चाहता। मैं नीच हूँ। नराधम हूँ। काफी सयाना हूँ पर रुपयो का गुलाम हूँ। लोभी हूँ। तुम लोग आयु में बच्चे हो पर ज्ञान, त्याग, क्षमा निस्पृहता में अद्वितीय हो। बेजोड हो।

रजनीकान्त—आप ससार छोड देंगे तो आप के बच्चो का जीवन कैसे चलेगा। उन अभागो को कौन देखेगा ? कौन सँभालेगा ? बच्चे तो निरपराधी होते है। (दारोगा जी के छोटे बच्चे की ओर सकेत करके) इस मासूम बच्चे ने कौन सा अपराध किया है ?

अत्याचारी सिंह—क्यों ? ये लोग भी तो मुझसे उपार्जित हराम की कमाई खाते है। इन लोगो के रक्त-मास, अस्थि-पजर मेरे अजाब के रुपयो ही से बने है अत यह भी दड का भागी है।

रजनीकान्त—आप अपने को सँभालें, व्यर्थ आत्म-हत्या न करें। ससार के सामने, अपने समाज के सामने, अपना भव्य-प्रकाश एव उज्वल-आदर्श रखें। अपने पिछडे समाज के अग्रगामी पथिक बनें। अपनी शुभ-भावनाओ को लेकर समाज का नेतृत्व करें। अपने सद्विचारो के साबुन से समाज के अन्दर बृटिश-राज के समय की जमी हुई मैल

को धो डालें। समाज चमकने लगे। इसके दिव्य प्रकाश से अन्य-समाज भी प्रदीप्त हो जाय।

अत्याचारी सिंह—तुम्हारे सदुपदेशो से मै जागरूक हो गया। सँभल गया। भविष्य में मुझे तथा मेरे थाने को एक आदर्श पाओगे।

रजनी—आओ हम लोग मिलकर पूज्य महात्मा गाधी की जय बोलें ताकि स्वर्ग मे महात्मा गाधी की आत्मा प्रफुल्लित हो उठे।

सब लोगो ने एक स्वर से जय-जयकार किया। महात्मा गाधी के गगन-भेदी नारे से सारा थाना गूँज उठा। अशोक को गहने तथा वस्त्रो के बडल अर्पित किये गये। ५६ रुपये और भी दिया गया। ये रुपये गहने तथा कपडे खरीदने से बच गये थे। ये रुपये चन्दे के रुपयो मे से बचे थे। अशोक गहने, कपडे तथा ५६) पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। रजनी और अनिल को हृदय से आशीर्वाद दिया। घर को चल दिया। रजनी, अनिल, सेठ और प्रधानाचार्य सब अपने अपने घर को चल दिये।

[४]

रजनी घर पहुँचा। शरीर पर चोट देख कर माता-पिता के हृदय की धडकन स्पदित हो उठी। दोनो घबरा उठे। इस दुर्घटना की कहानी पूछे। रजनी आद्योपान्त सारी कहानी कह सुनाया, माता-पिता की व्यग्रता का अन्त नही रहा। रजनी ने अशोक के अपार दु खो को उन्हें सुनाया। उसके शोकोद्धार का भी सारा रहस्य बतलाया और कहा कि यदि गहने और कपडे का प्रबध न हुआ होता तो निश्चय अशोक मर गया होता, उसकी बडी बेइज्जती होती। मेरे साथी अनिलकुमार ने इस कार्य में बडी सहायता की। यदि वह साथ न दिया होता तो अकेले यह कार्य मुझसे नही होता। मै इस कार्य की सफलता में अनिल का बडा कृतज्ञ हूँ।

शैलकुमारी—बेटा! तुम्हे और तुम्हारे मित्र अनिल को ईश्वर दीर्घ-जीवी बनावे। तुम लोगो ने एक निस्सहाय को मृत्यु-सागर से डूबते हुए बचाया। कष्ट तो तुम्हें बहुत हुआ पर कोई चिन्ता नही। तुमने मेरे दूध का

मूल्य चुका दिया। आज तुमने मेरी गोद को पवित्र कर दिया। वेटा! घबराने की बात नही। वेटा! ईश्वर की कृपा मे तुम्हे दो दिनो मे स्वस्थ कर दूँगी।

अजयकुमार—वेटा! तुमने वहुत वडा कार्य किया। एक असहाय को सहारा देकर उसे जिलाया। ईश्वर तुम्हें समाज-सेवा की सच्ची लगन दे। तुम्हारी इस लगन मे उत्तरोत्तर वृद्धि हो। मुझे अभिमान है कि तुमने स्वर्ग में पूज्य वापू जी की आत्मा को शीतल किया। तुम्हारे इस पवित्र कार्य मे मेरे हृदय को वहुत वडी शाति मिली।

माता हलुवा वना कर लायी। रजनी भूखा था ही भर पेट खाया। जहाँ-जहाँ चोट लगी थी उस पर दवा लगायी। दूसरे दिन वह पूर्ण स्वस्थ हो गया। प्रात काल अशर्फीलाल सुना कि रजनी वहुत घायल है, वह वहुत प्रसन्न हुआ, दौडा रजनी के गृह आया, उसने पूछा कि कहो लीडरी मे कितना मजा है? देश-सेवा म कैसा स्वागत हुआ? मैंने तुम्हें पहले ही वहुत रोका पर तुम नही माने। न मानने का फल भोगो। अव तो होश रहेगा तो समाज-सेवा का भूल कर भी नाम नही लोगे।

रजनी—देखो अशर्फी, गुलछर्रे क्या उडा रहे हो? जव तक मेरी रगो मे रक्त प्रवाहित रहेगा, इस नाशवान शरीर के अन्दर प्राण रहेंगे, तव तक रजनी देश-सेवा, दीन-सेवा से मुख नही मोडेगा। रजनी अपने राष्ट्र पर अपने को कुर्वान करने को तैयार है। यह मार और गाली कौन सी वडी चीज है। रजनी एक सेवक है, सदैव राष्ट्र की सेवा करता रहेगा। अपने देश को पतनोन्मुख देख कर कभी भी चुप नही वैठ सकता। पूज्य वापू जी की धरोहर जो स्वतत्र-भारत के रूप में हमें मिली है उस धरोहर की पूरी-पूरी रक्षा करूँगा। दूसरो के वहकावे में पडकर भरसक न जाने दूँगा। मैं भी स्वतत्र-भारत मे साँस लेता और छोडता हूँ। अत मैं इस स्वतत्र-भारत की नौका खेने में अपने कर्तव्य-रूपी डाँड का वल देता रहूँगा। भारत-माता को कलकित नही होने दूँगा। हमारे तपस्वी पूर्वजो ने माँ

की जटिल-बेडियाँ काटी तो क्या हमारा तुम्हारा यही कर्तव्य है कि पुन माता के पैरो को बेडियो से कसवा दें। कदापि नही। भारत-माता के सिर पर आज जो ताज चमक रहा है उस ताज को कभी गिरने न देंगे। देखो अशर्फी, हम सभी छात्र देश के एक एक स्तम्भ हैं। हम सभी को भारत-माता की सेवा में यदि आवश्यकता पडे तो अपने को बलिदान कर देना चाहिए। प्रथम-श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण कर लेना, शिक्षा का वास्तविक अर्थ नही हैं। देश की सेवा करना, शिक्षा का वास्तविक अर्थ है। देश की सेवा मे सभी सेवाएँ निहित हैं।

अशर्फी—ऊधव भी गये थे गोपियो को ज्ञान देने, वहाँ से गच्चा खा कर आये। वही दशा तुम्हारी भी एक दिन होगी।

रजनी—तुम्हारी भूल हैं। इस समय देश कितनी कठिनाइयो से गुजर रहा है, कितने कष्टो का सामना कर रहा है। अवर्षण, अतिवर्षण, बाढ, भूकम्प और दरिद्रता आदि से देश जर्जर हो गया है। ऐसी भीषण परि-स्थिति में अकेली नेहरू सरकार क्या करे। भारत का नागरिक होने के नाते हम लोगो का भी परम कर्तव्य होता है कि देश-सेवा कर सरकार को सहयोग दें।

अशर्फी—रखो, अपनी यह ज्ञान की गठरी। अब मैं भोजन करने जा रहा हूँ। स्कूल जाऊँगा। देर हो रही है।

रजनी—जाओ। आज तो नही। कल मैं भी तुम्हारा साथ दूँगा। तुम्हारे साथ स्कूल चलूँगा।

अशर्फी स्कूल चलने के लिए घर जाता है। रजनी (स्वत) इस अशर्फी का सुधार कैसे होगा। मैं चाहता हूँ कि इसे कोई क्षति न पहुँचे। प्रेम से इसका सुधार हो जाय। पर प्रेम प्रेम से तो यह अपनी आदतें सुधार नही सकता। क्यो नही ? प्रेम तो सुधार का अमोघ-शस्त्र है। प्रेम तो वशीकरण मन्त्र है। प्रेम ही से इसने जुआ खेलना छोडा। इसके कितने बडे पिशाच को प्रेम ने दूर भगाया। प्रेम एक दानव

को मानव बनाने वाला है। प्रेम को अपनाना चाहिए। प्रेम ही से अशर्फी का सुधार हो सकता है। अन्य औषधियाँ व्यर्थ है। इसके लिए नीम और गुरुच का काढा है। अन्य उपायो से इसका सुधार नही हो सकता। अन्य युक्तियो से इसकी उद्दण्डता का रोग बढता ही जायगा। अशोक का अपहरण कर अशर्फी का मन बाढ पर था। निरकुश-गज बन गया था। मतवाला हो गया था। जब होता माता-पिता को घुडकी दिया करता। धीरे-धीरे अशोक के गहने तथा उसकी साडियो को बेंच कर अपनी तृष्णा-पूर्ति करता। साथियो को अपने पास से टिकट कटाकर प्रथम श्रेणी में बिठला कर सिनेमा दिखलाता और स्वय देखता। इधर रजनी से पैसे उधार नही माँगता। रजनी को सारी बातो की जानकारी थी। रजनी एकान्त में उसे समझाता। कभी-कभी अशर्फी उस पर कुढ जाया करता था। उस दिन से रजनी की कोई न कोई वस्तु अपहरण कर उसे क्षति पहुँचाता। रजनी सब सह लेता। उसे किसी प्रकार का उपालम्भ नही देता।

तीसरे दिन प्रात काल दोनो साथ-साथ पाठशाले गये। वदना के समय प्रधानाचार्य ने रजनी के चरित्र की, क्षमा शीलता की सब के सामने प्रशसा की। सब छात्रो को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि प्रत्येक छात्र रजनी और अनिल का अनुकरण करे तो देश का काफी सुधार हो सकता है। मेरे स्कूल का कितना बडा नाम हुआ है। मैं प्रत्येक छात्र को सलाह दूँगा कि वह रजनीकान्त और अनिलकुमार के सच्चरित्रता का, देशानुराग का, समाज-सेवा का अनुकरण करे।

रजनी खडा हो गया। उसने प्रत्येक छात्र को बधाई दी। साथी अनिल के कार्य की बडी सराहना की। उसने सभी छात्रो को सम्बोधित करते हुए कहा कि भाइयो ! प्रधानाचार्य ने जो मेरी इतनी प्रशसा की है, इस प्रशसा का सारा श्रेय आप भाइयो पर है। आप लोग यदि चदा न दिये होते तो मैं यह दुरूह कार्य कभी नही कर सकता था। मैं आप लोगो

अशर्फी—(कुछ डर कर) हाँ ठीक कहते हो। आज तुम्हारी ही कृपा से वचा नही तो फिर जेल की हवा खानी पडती। तुम्हारा उस दिन का पीटा जाना आज मेरी रक्षा किया। आज मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि तुम उस दिन की भीषण-परीक्षा मे एक सुन्दर अक पाकर उत्तीर्ण हुए। भाई वुरा कहो या भला। मैंने ही अशोक का गहना चुराया था। उसके वस्त्रो का वडल काँख से खीचने वाला मै ही था। उसके सव वस्त्र और गहने धीरे धीरे वेंच डाला। आज यह अतिम गहना था। इसे वेचने आया था। आज तुम न होते तो मै कहाँ और किस परिस्थिति मे होता।

रजनी—अच्छा भाई! मैं वहुत प्रसन्न हूँ कि तुम्हारी सहायता कर सका। अच्छा तुम्ही वतलाओ कि तुम्हारी सहायता अव तक जितनी मैंने की है, चोरी के विषय की है। वोलो वह उचित है, या अनुचित ?

अशर्फी—नही, अनुचित। मुझे तो न्यायत पुलिस को सुपुर्द कर देना चाहिये था। सरकार से काफी से काफी दड दिलाना चाहिये था पर तुमने इसके विपरीत किया। मैं वहुत लज्जित हूँ। आभारी हूँ। कान पकडता हूँ। मै भविष्य मे फिर ऐसा जघन्य पाप नही करूँगा।

रजनी—मैं तुम्हारी इस प्रतिज्ञा से वहुत प्रसन्न हूँ। दीनो की आह व कराह आकाश को भेद सकती है। पाताल फोड सकती है। उनके आँसू भयकर कुहरा वन सकते है, उनकी ऊर्ध्व साँसे ज्वालामुखी का उग्र रूप धारण कर सकती है। उनके टूटे दिलो की धडकन व स्पदन चचल-चपला वन कर चमक सकती है। मेरे प्रिय मित्र अशर्फी! तुम पाप की इस धारणा को आज से तिलाजलि दे दो।

अशर्फी—मेरे प्रिय मित्र! आज से मै तुम्हारा परम भक्त हूँ। तुम मेरे गुरु हो, मै तुम्हारा शिष्य हूँ। तुम मेरे देव हो मै तुम्हारा आराधक हूँ। तुम मेरे हृदय-सम्राट हो मैं तुम्हारा आज्ञाकारी अनुचर हूँ।

रजनी—चलो घर चलें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मेरे दल में सम्मिलित हो जायोगे। आज से तुम एक सच्चे देश-सेवक वन जाओगे और

अपने देश की सेवा करके अपनी सरकार की पूर्ण सहायता करोगे। एक पवित्र राष्ट्र का निर्माण करोगे। किसी के वहकावे में नही आओगे।

वात चीत करते-करते दोनो मित्र अपने गाँव विक्रमपुर पहुँच गये। रजनी अपने घर चला गया और अशर्फी अपने घर। परीक्षा निकट है। रजनी ने चटपट भोजन किया। पुस्तकाध्ययन के अखाडे में कूद पडा। लिंगोटा कस कर पुस्तको से भिड गया। कई घटे तक अध्ययन किया।

प्रात काल उठा। माँ वाप से पता चला कि वूढे महादेव पर परसो मेला लगेगा। यह मेला कातिक की पौर्णिमा के अवसर पर लगता है। पाँच दिनो तक मेला रहता है। वस क्या। शीघ्र दातून किया। नहाया। जलपान किया। अपने साथियो को इकत्र किया। देखते देखते स्वयसेवको के लिये मेला-स्थल पर ५ झोपडियाँ खडा कर दिया। वहाँ ही से स्कूल पहुँचा। वहाँ सभी छात्रो की मीटिंग किया। मीटिंग में प्रस्ताव रखा कि मेले का प्रवन्ध सुचारु रूप से किया जाय। काफी सख्या में छात्र स्वय-सेवक का स्थान ग्रहण करें। मेले में एक डाक्टर नियुक्त किया जाय। यह डाक्टर मेले में आये हुए अस्वस्थ यात्रियो की चिकित्सा करेगा। इसके लिये एक झोपडी का प्रवन्ध किया जाय। एक झोपडी भूले भटके वच्चों तथा वृद्धो के लिये वनायी जाय। एक झोपडी असहाय दीन-दुखियो के लिये निर्माण करायी जाय। प्रत्येक छात्र का मेले मे अलग-अलग स्थान व कर्तव्य होगा। जाडे का दिन है अत यात्रियो को आग तपाने के लिये लकडी का प्रवन्ध किया जाय। ये सारे प्रस्ताव वडी प्रसन्नता से छात्रो ने पास किया। रजनी ने छात्रों के अन्दर एक अटूट उत्साह भर दिया। कुछ छात्र झोपडियाँ वनाने मे लग गये। कुछ लकडी सग्रह करने में लग गये। कुछ डाक्टर के वेतन का प्रवन्ध करने लगे। देखते देखते सारा कार्य एक सच्ची लगन के साथ समय के अन्दर पूर्ण हो गया। छात्रो ने अपने सुन्दर प्रवन्ध मे मेले की काया वदल दी। लकडी इतनी इकत्र हो गयी कि उसकी एक अच्छी टाल लग गयी। डाक्टर, दीन-दुखियो, भूले भटके, वच्चो, वृद्धों के लिये अलग-

अलग झोपडियाँ वन कर तैयार हो गयी। झोपडियो में काफी पुआल डाल दिये गये। जल, औषधि, लकडी का पूरा पूरा प्रबन्ध इस वर्ष रजनी ने कराया है। मेले से एक दिन पहले ही रजनी शाम को मेले के स्थल पर पहुँच जाता है। उसके सभी साथी अपनी अपनी ड्यूटी पर पहुँच जाते हैं। अशर्फी अपनी कुटेव को छोड देता है पर इस पवित्र कार्य में नही सम्मिलित होता है। वह कुछ दुष्ट लडको के बहकावे मे पुन आ जाता है। ये लडके रजनी के विरोधी पार्टी के हैं।

मेला-स्थल से स्टेशन एक मील की दूरी पर है। स्टेशन से लेकर नदी-तट तक स्वय-सेवको ने काफी सुन्दर प्रवन्ध कर रखा था। छोटे छोटे बाँस के डडो को गाडकर पथ बनाये गये थे। एक पथ से स्त्रियाँ नहाने जाती थी और दूसरे पथ से नहाकर लौटती थी। इसी प्रकार से दो पथ पुरुषो के लिये अलग अलग आने जाने के लिये वनाये गये थे। स्त्रियो का पुरुषो से कोई मेल ही नही होने पाता था। पुरुष अपने मार्गो से आते जाते थे स्त्रियाँ अपने मार्गों से। ऐसे ही मार्ग नदीतट से मदिर तक वनाये गये थे। इस वर्ष का प्रवन्ध वडा ही सुन्दर था। रजनी ने साफ साफ कलेक्टर तथा डि० वोर्ड के अध्यक्ष से कह दिया था कि मैं स्वय मेले का प्रवन्ध कर लूँगा। सरकारी प्रबन्ध हर साल की भाँति था। डि० वोर्ड का प्रवन्ध था। रजनी के प्रवन्ध से दोनों पक्ष वहुत प्रसन्न हैं। हर साल की तरह इस वर्ष धक्कम धक्का, हो हल्ला नही है। रस्सियाँ नीचे घाट तक बँधी हुई हैं। उन रस्सियो के सहारे लोग सुव्यवस्थित ढग से स्नान करते हैं और ऊपर आते है। चौकियाँ भी घाटो पर रखी गयी हैं, किसी प्रकार किसी को कष्ट नही है। स्त्रियो के लिये छात्राएँ स्वय-सेविका का कार्य कर रही थी। सव लोग स्नान करके ऊपर आते थे और आग तापते थे। वृद्धा, थकी-माँदी स्त्रियो के लिये अलग झोपड़ियाँ निर्मित की गयी थी। वे उन झोपडियो मे जा कर विश्राम करती थी।

नहाते समय एक गर्भिणी स्त्री को ऊपर आते आते प्रसव हो गया।

य-सेविकाओ ने चट चद्दर से आड किया । प्रसव हो जाने पर वह स्त्री
पडी मे पहुँचायी गयी, पुन मेले के बाद वह गृह पहुँचायी गयी । मेले
कई व्यक्तियो को निमोनियाँ हो गया, कई को हैजा हो गया । स्वय-सेवक
ीघ्र उन्हें उठाकर डाक्टर के यहाँ ले गये । वहाँ उनकी सुचारु-रूप से दवा
की गयी । सेवा की गयी । पूर्ण-स्वस्थ होने पर वे अपने अपने गृहो को भेजे
गये । एक वुढिया मारे सर्दी के नहाते समय काँपती हुई गिर पडी । उसे
शीघ्र स्वय-सेवक वाहर लाये । आग तपाये । स्वस्थ किये । तीन वच्चे मेले
में खो गये थे । उनकी माताएँ गले फाड फाड कर रो रही थी । स्वय-सेवको
ने वच्चो को झोपडी में रखा था । उन्हे इन वच्चो को सुपुर्द किया । वे
वडी प्रसन्न हुई । वच्चे भी रो रहे थे । अपनी अपनी माताएँ पाकर वे भी
वहुत प्रसन्न हुए । अनेको प्रकार के कम्वल, साडी, धोती, चद्दरें, गठरियाँ
(सत्तू दाने की) खोयी हुई स्वय-सेवको को मिली । कपडो में वँधी हुई
और और वस्तुएँ खोयी हुई मिली । नोट मिले । आभूषण घाट पर भीड
के अन्दर गिरे हुए मिले । ये सारी वस्तुएँ रजनी को सुपुर्द की गयी । सव
स्वय-सेवको का अध्यक्ष रजनी था । उसने सवको ढूँद-ढूँढ कर सवका सामान
पूरी छान वीन करके दिया ।

गत-वर्षों से इस वर्ष का प्रवध कही अधिक अच्छा था । पूरी शाति
रही । क्षति से लोग वचित रहे । सभी अधिकारी प्रवधको ने रजनी के
सुप्रवध की मुक्त कठ से प्रशसा की । रजनी के स्कूल की वहुत वडी
प्रशसा की गयी । वहाँ के प्रधानाचार्य को सरकार से, डि० वोर्ड से धन्य-
वाद के पत्र मिले । पाँच दिन तक रजनी ने मेले मे अथक परिश्रम किया ।
केवल २ घटे दिन-रात मिलाकर विश्राम करता था । उसके साथियो का
परिश्रम कम सराहनीय नही था । डाक्टर तथा आग तपाने का प्रवध न
हुआ होता तो इस वर्ष हर वर्ष से कही अधिक स्नानार्थी मर गये होते ।
छूत की अनेको वीमारियाँ देश में अपना अड्डा जमा लेती । प्रातीय सरकार
की ओर से रजनी को ५००) और डि० वोर्ड की ओर से २००) का

पुरस्कार रजनी को मिला। रजनी ने इन रुपयो को अपने साथियों में बाँट दिया। इनमें से अपने एक पैसा भी नही लिया। आज मेला समाप्त हुआ। स्वय-सेवको ने सारा सामान जिसके-जिसके थे उसके गृह पहुँचा दिया। झोपडियाँ जिनकी थी उनके यहाँ भेज दी गयी। स्वय-सेवको ने वहाँ के घाट को, स्थान को, मदिर को पूरा-पूरा साफ कर दिया। एक दिन अभी स्कूल खुलने को शेष था तब सब अपने-अपने घर गये। रजनी भी अपने घर आया। उसके माता-पिता रजनी से बहुत प्रसन्न थे। दोनो ने रजनी को काफी आशीर्वाद दिया। माता-पिता से आशीर्वाद पाकर रजनी का हृदय उत्साह से उमड पडा। सायकाल अशर्फी से मिला। मेले की चर्चा छिड पडी। गप्सडाका होने लगा।

अशर्फीलाल—रजनी! देखता हूँ तो तुम अपना अमूल्य-समय व्यर्थ के कामो मे व्यय कर दिया करते हो। भाई! नेतागिरी बहुत बुरी नशा है। इसमें फँसना अपना जीवन बरबाद करना है। मै आप को पुन एक बार और समझा रहा हूँ कि इस नेतागिरी के झमेले में आप न पडें, अपना अमूल्य समय खराब न करें, मित्र है, मित्र के नाते समझा रहा हूँ।

रजनी—मैं तो अपना जीवन देश-सेवा के लिये सकल्प कर चुका हूँ।

अशर्फीलाल—जाओ बरबाद हो, मुझसे क्या मतलब।

[५]

कई दिनो पर पाठशाला खुली। रजनी अशर्फी के साथ पाठशाले पहुँचा। आज परीक्षा थी पर प्रधानाचार्य ने उसे एक दिन के लिये और टाल दिया। दूसरे दिन छात्र परीक्षा में बैठे। परीक्षा समाप्त हुई। परीक्षा-फल तैयार हुआ। परीक्षा-फल सुनाया गया। परीक्षा में रजनी का प्राप्ताङ्क स्कूल मे सर्वोच्च था। अशर्फी तथा उसके साथी बुरी तरह से फेल थे। उन पर काफी डाँट फटकार पडी। चिचुके आम की भाँति अशर्फी का मुँह पिचक गया। आज वह बहुत उदास था। उसकी बोलती बद हो गयी। उसके मुँह पर मक्खी भनभना रही थी। रजनी ने उसके मुख की

ओर देखा, उसे शोकाकुल पाया। पूरा साहस दिया। वचनवद्ध हुआ कि तुम्हारे कमजोर विषयो को तैयार करा दूँगा। वहुत ढाढस दिलाने पर अशर्फी का टूटा हुआ दिल किसी प्रकार धैर्य धारण किया।

प्रति दिन रजनी और अशर्फी एक साथ रात्रि को पढने लगे। रजनी अपना वहुत सा समय अशर्फी के पढाने मे व्यय करता था। वार्षिक-परीक्षा की वह भयावह घडी आ गयी। सभी अपनी-अपनी सीट पर विराजमान हो गये। अशर्फी की सीट रजनी मे कुछ दूरी पर थी अत वह विवश था पर वह पुस्तकें तथा नोट प्रति दिन अपने साथ परीक्षा-भवन मे ले जाया करता था। नोट-बुक और पुस्तके रजनी की थी। अशर्फी अन्त मे पकडा गया। उसने निरीक्षक से कहा कि ये नोट-बुक और पुस्तकें मेरी नही हैं ये रजनी की हैं।

निरीक्षक—तुम्हारे पास कैसे आयी ?

अशर्फी—रजनी ने मारे डर के मेरे पास फेंक दिया।

निरीक्षक—क्यो रजनी ? तुमने ऐसा किया ?

रजनी—हाँ मास्टर साहब! अशर्फी सत्य कहता है। मैंने अवश्य ऐसा किया। हाथ जोडता हूँ। क्षमा करे। पुन ऐसा नही करूँगा। निरीक्षक, नोट-बुक पढता है और रजनी की कापी से मिलाता है नोट-बुक से उत्तर ठीक-ठीक मिल जाते है, लिपि भी मिल जाती है। रजनी ने दो ही प्रश्न किया था अभी प्रारम्भ था। यह नोट-बुक रजनी ने स्वय अपने हाथ से लिखा था उसे पूरी नोट-बुक को सारी पक्तियाँ याद थी अत नोट-बुक से कापी का उत्तर मिलना कोई आश्चर्य नही। निरीक्षक ने रजनी की कापी छीन ली। उसे पूर्ण-विश्वास हो गया। उसने रजनी की उत्तर-पुस्तिका पर अपना नोट लगाया, हस्ताक्षर लिया और रजनी के नोट-बुक को उसमें नत्थी किया और प्रधानाचार्य के यहाँ भेज दिया। प्रधानाचार्य, रजनी की कापी पाकर, उसमें प्रधान-निरीक्षक का नोट देख कर और उसके साथ नोट-बुक को नत्थी देखकर स्तव्ध हो गया। कुछ

कहते नही वना । कुछ देर तक मोचता रहा, पुन दौडा हुआ रजनी के रूम मे पहुँचा । प्रधान निरीक्षक को कमरे के वाहर वुलाया, उससे कहा कि यह लडका मेरे यहाँ का सर्वोच्च-छात्र है । बडी प्रखर-बुद्धि का छात्र है । वह कभी भी ऐसा काम नही कर सकता । आप अन्य स्कूल के अध्यापक हैं आप उसे नही जानते । मेरे यहाँ के सभी अध्यापक एव छात्र उसकी ईमानदारी के विषय में पूरा-पूरा जानते हैं ।

निरीक्षक—मैं क्या करूँ प्रिंसिपल साहव ! उसने स्वय अपना अपराध स्वीकार कर लिया है । विश्वास न हो तो आप स्वय कमरे मे जाकर सभी छात्रो से पूछ लें ।

प्रधानाचार्य—(रूम मे प्रवेश कर) क्यो रजनी ! यह नोट वुक तुम्हारा है ? तुमने इस नोट से नकल की है ?

रजनी—जी मास्टर साहव, यह मेरा ही नोट-वुक है । भूल कर मेरे साथ चला आया । जव प्रश्नोत्तर नही आ रहा था तो मैंने अवश्य इस नोट मे सहायता ली । निरीक्षक के डर मे मैंने इस नोट-वुक तथा पुस्तक को अशर्फी की मेज पर रख दिया । मैंने यह अपराध अवश्य किया । निरीक्षक महोदय से अपना अपराध स्वीकार भी कर लिया है । अपनी उत्तर-पुस्तिका-पर हस्ताक्षर भी कर दिया है ।

प्रधानाचार्य मौन हो गये । पैरो तले ज़मीन खिसक गयी । आँखो तले अँधेरा छा गया । क्या करें । विवश हो गये । अपनी ही लेखनी मे अपने स्कूल के सर्वोच्च-छात्र की उत्तर-पुस्तिका पर उसके विपरीत नोट लगाये । निष्कासन किया । केस को आगे वढाया ।

परीक्षा समाप्त हुई । घटा वजा । यह घटना सम्पूर्ण परीक्षार्थियो के लिए एक समस्या वन गयी । सभी चिंतित हैं । सभी पूछते हैं । सव से वही एक उत्तर 'हाँ भाई, भूल हो गयी, मैंने ऐसा किया, क्या करूँ समय वलवान था उसने ऐसा करा दिया ।'

रजनी अपने साथी अशर्फी को लिया । दोनो एक साथ घर प्रस्थान

किये। मार्ग में अशर्फी ने दिखावटी पश्चाताप दिखलाया। रजनी ने उसे समझाया कि भाई जो होना था सो हो गया। इसमें तुम्हारा क्या दोष ? जिस समय मुझे उत्तीर्ण होना लिखा होगा उसी समय मैं उत्तीर्ण हूँगा। किसी कार्य की सफलता का निश्चित समय होता है। घबराने से कुछ नही होता। देखो तुम्हारा ही एक वर्ष व्यर्थ गया। क्यो ? समय नही था। अब समय आ गया। तुम उत्तीर्ण होकर रहोगे।

अशर्फी—भाई ! मैंने नही समझा कि यह मामला इतना तूल पकड जायगा। राई से पर्वत हो जायगा। मैंने तो समझा कि तुमको प्रधानाचार्य तथा अन्य अध्यापक इतना सम्मान करते है कि तुम्हारा अपराध होने पर भी क्षमा कर देंगे, पर यहाँ एक छोटी सी बात पहाड हो गयी। बात का बतगड हो गया।

रजनी—अच्छा मित्र ! तुमको मैंने वचन दिया था कि तुम घबराओ नही अवश्य उत्तीर्ण हो जाओगे। तुम्हारे उत्तीर्ण होने में मुझे अपने से कही अधिक प्रसन्नता है। मेरा शरीर किसी के काम आवे तो मैं इसे भी सहर्ष अर्पण करने को तैयार हूँ।

इस प्रकार दोनो बातचीत करते करते अपने अपने घर गये। अशर्फी बाहर से तो दुखी था पर भीतर प्रसन्न और हृदय से लज्जित था। रजनी भीतर और बाहर प्रसन्न था। वह नित्य की भाँति खाया, पिया और सोया। माता-पिता को उसकी इस घटना का समाचार अज्ञात था। कौन बतलावे ? रजनी बतलावे या अशर्फी। अशर्फी वहाँ था नही। रजनी को चिन्ता ही नही। जो हो रजनी के माता-पिता इस घटना को तब तक नही जान पाये जब तक कि परीक्षा-फल नही प्रकाशित हुआ।

जून का तृतीय सप्ताह आया। परीक्षा-फल प्रकाशित हुआ। अशर्फी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। रजनी अनुत्तीर्ण हो गया। एक वर्ष परीक्षा मे न बैठने की रोक भी लगा दी गयी। यह समाचार रजनी के घर अर्जेंट तार की भाँति पहुँच गया। माँ-बाप बहुत अधीर हो उठे। अशर्फी का

पास होना और रजनी का दंड के साथ अनुत्तीर्ण होना सुन कर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वे सिर धुनने लगे। रजनी ने अपने माँ-बाप को बहुत सन्तोष दिलाया, भगवान पर भरोसा करने का विश्वास दिलाया। माता-पिता ईश्वर-वादी थे ही, कुछ देर बाद उन्हें धैर्य हुआ।

रजनी को अशर्फी की सफलता पर बहुत सन्तोष हुआ। वह अशर्फी के गृह पहुँचा। उसे कोटिश धन्यवाद दिया। आग्रह करके उससे मिठाई खाया।

अशर्फी—(बनावटी चिन्ता दिखलाकर) क्या कहूँ रजनी! तुम्हारी चिन्ता ने मुझे प्रसन्न नही होने दिया। तुम्हारे परीक्षा-फल को देखकर मेरी प्रसन्नता काफूर हो गयी, क्या आशा की गयी थी, क्या हुआ। प्रथम-श्रेणी से ऊपर अक पाने पर भी सरकार ने तुम्हें अनुत्तीर्ण कर दिया। ऊपर से परीक्षा-रोक का दण्ड भी लगा दिया, तिस पर आप ऐसी निष्ठुर-सरकार का दम भरते है।

रजनी—इसमें सरकार का क्या दोष ? इसमे तो सरकार की न्याय-शीलता कही जायगी। अपराधी, दण्ड नही पावे तो शासक ही अप-राधी कहा जावेगा। विधानत सरकार ने जो दंड दिया है वह उचित ही दिया है।

अशर्फी—तुम कहो, मैं तो सरकार के इस विधान को पसन्द नही करता। बच्चे है, लडके हैं, इनसे कोई अपराध हो गया तो इन्हें चेतावनी देकर छोड देना चाहिये, न कि उनका जीवन ही बिगाड देना चाहिये। लडको का उत्साह बढाना चाहिये न कि और पस्त करना चाहिये।

रजनी—तुम्हारी भूल है अशर्फी! हम सब बच्चे है, हमी सब एक दिन शासक भी तो होगे, सरकार भी तो होगे। यदि बेइमानी की आदतें पडी रहेंगी तो भविष्य मे शासक होते हुए भी पक्के बेइमान होगे और देश को रसातल में ले जायेंगे। सरकार ने ऐसा निर्णय देकर अन्य परीक्षा-थियो के समक्ष एक उपदेश रखा। मेरे मामिले को देखकर भविष्य मे पुन किसी छात्र को ऐसा करने का दुस्साहस नही होगा। बतलाओ

सरकार ने उत्साह को कहाँ धक्का दिया ? छात्रो का जीवन बनाया, बिगाडा नही ।

अशर्फी—रजनी ! तुम्हारे उपदेश मुझे रुचिकर नही लगते है । मुझे तो सरकार और देश दोनो से सख्त घृणा है । ऐसा देश और ऐसी सरकार पाताल चली जाय तो अच्छा है । क्राकाटोवा टापू की भाँति उड जाय तो उत्तम है । हम लोग काफी सयाने थे तो पढना आरम्भ किये । अब हम लोगो की आयु इस समय २० वर्ष से ऊपर चल रही है, स्वराज्य मिला तो काफी होश था । इस सरकार ने किया ही क्या, सिवाय लम्बे लम्बे भाषण और प्रोग्राम बनाने के क्या करती है । व्यर्थ रुपयो का सफाया नयी योजनाओ में किया जा रहा है । पुल, बाँध, नहरो और नल-कूपो में जनता के रुपये पानी की तरह बहाये जा रहे है । कोई लाभ है ? इसके पूर्व अंग्रेजो की सरकार थी कि सारा देश सुखी था । धन-धान्य से देश भरा था, आज की भाँति भुक्खड नही था ।

रजनी—तो इसमें सरकार का क्या दोष ? सारा दोष देश का है, देश ईमानदार हो जाय, सचाई से काम करे, देखें तब कैसे गरीबी आती है ।

अशर्फी—तब भला ऐसे बेइमान देश की सेवा करनी चाहिये ? तुमने तो हमारी बातो का समर्थन किया ।

रजनी—हाँ तो मै यही कह रहा हूँ कि उठो और देश के बेइमान, निकम्मे, चोर, व्यभिचारी और भ्रष्टाचारी व्यक्तियो को समझाओ, उन्हे सच्चे मार्ग पर लाओ । उनके एक सच्चे पथ-प्रदर्शक बनो । उनमे देश-प्रेम की सच्ची भावना जागृत करो, देखें तब देश कैसे पतन की ओर जाता है, तब देखें देश में कैसे गरीबी आती है, तब देखें, अवर्षण, अतिवर्षण, भूकम्प आदि देश का क्या कर सकते हैं ?

अशर्फी—(स्वत धीरे-धीरे) तुम देश के पीछे मरो अभी भीखमपुर थाने मे भोगे हो और भोगो ।

रजनी घर आया, साथ मे अशर्फी भी था, वह बहुत प्रसन्न था ।

रजनी की माता को प्रणाम किया उसने उसे आशीर्वाद दिया और उसके परिश्रम व सफलता की सराहना की।

अशर्फी—(रजनी की माता को सम्बोधित करते हुए) चाची ! क्या आशीर्वाद देती है ? मेरे परिश्रम और सफलता की क्या प्रशसा करती है ? रजनी इतना तेज लडका था, परिश्रम भी काफी किया था पर वह फेल हो गया और एक वर्ष परीक्षा में न वैठने की रोक भी लगा दी गयी। यह सब देख कर वडा कष्ट हो रहा है।

रजनी की माता—(रजनी से) वेटा ! चिन्ता न करो। यह तो लगा ही रहता है, हार-जीत तो जीवन का खेल है जो इस खेल को खेलेगा उसे हार व जीत दोनो मे से किसी एक को भोगना-पडेगा। इस हार को हार न मानो। वेटा ! यह हार कभी तुम्हारे गले में विजय का हार पिन्हायेगी। वेटा तुम अपने मन में चिन्ता न लाना। (अशर्फी चुप हो गया, कुछ देर तक रजनी के पास वैठा रहा, पुन उठा और घर चला गया। रजनी भी भूखा था, उठा, भोजन किया और खाट पर पड रहा)

प्रात काल वहुत तडके उठा। शौचादिक क्रिया से निवृत्त हुआ। टहलने निकल गया। मार्ग मे एक व्यक्ति मिला इसका नाम शिवलाल था। यह अशर्फी की शादी करने आया था। इसने रजनी से कहा कि वेटा ! मै आप ही से मिलने जा रहा था।

रजनी—कहिये क्या काम है ?

शिवलाल—मेरी इच्छा अशर्फी की शादी करने की है आप ठीक-ठीक वतलाइये कि अशर्फी पढने लिखने में कैसा है ? भविष्य इसका कैसा है ?

रजनी—पढने लिखने में यह होनहार है। भविष्य इसका अच्छा है। पढने में अच्छा न होता तो कैसे पास होता।' देखिये मैं फेल हो गया पर यह अच्छे नम्बरो से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गया। इसे आगे चलकर कोई न कोई अच्छी नौकरी मिल जायगी।

शिवलाल—घर द्वार तो अच्छा नही है। आर्थिक-दशा ठीक नही है।

रजनी—दशा तो आती जाती है, आज जो लाखपति है कल वह भिक्षा भी माँग सकता है, कल जो भिक्षुक था आज वह करोडपति भी वन सकता है, यह तो लक्ष्मी की अनुकम्पा पर निर्भर है। लडका देखना चाहिये। किसी के भाग्य का किसी को क्या पता ? वनाने-विगाडने वाला भगवान है।

शिवलाल—अच्छा वच्चा! लीजिये मैं आप के कहने से उसका विवाह अपनी पुत्री मे कर रहा हूँ। मेरी पुत्री काफी शिक्षित है। एक दक्ष गृहणी है, सरला है, सुशीला है, प्रत्येक कार्य मे निपुण है।

शिवलाल के माथ रजनी अशर्फी के गृह गया। वहाँ पडित वुलाये गये। एक शुभ मुहूर्त ठीक की गयी। गहने पर शादी ठीक हुई। वहुत सादगी से शादी का प्रोग्राम वना। नाँच भाँड कुछ नही। तम्वू शामियाने का आडम्वर नही। घोडे हाथी का नाम नही। पन्द्रह रुपये का साधारण वाजा किया गया। पन्द्रह वीस वारातियो के लाने का प्रस्ताव पास हुआ।

कार्य-क्रम के अनुसार निश्चित शुभ-मुहूर्त में अशर्फी का विवाह सपन्न हुआ। जो कुछ दान-दक्षिणा एव वारातियो के आगत-स्वागत में व्यय हुआ सवका भार कौडी राम को नही लेना पडा। इन सव खर्चों को रजनी ने अपने पास से चुकाया। रजनी ने ये रुपये दान-स्वरूप दिया था, मित्र के नाते दिया था।

वडी प्रसन्नता से वारात विदा हुई। वधू अशर्फी के गृह आयी। अशर्फी की माता की प्रसन्नता की आज सीमा नही थी। वह पतोहू पाकर फूली न समाती थी।

अशर्फी के घर काफी चहल पहल मची थी। नव-वधू देखने के लिये ग्राम-वधुओ का एक मेला लगा रहता था। वेचारी नव-वधू एक तमाशा वन गयी थी। यह मेला ददरी के मेले की भाँति कई हफ्ते तक लगा रहा। नववधू सिनेमा की एक मूक अभिनेत्री थी। टिकट लेकर सिनेमा

देखना पड़ता है। यहाँ विना टिकट का यह तमाशा दिखाया जाता था। वेचारी नव-वधू को मुँह दिखायी से एक मिनट की फुरसत नही।

धीरे-धीरे कई सप्ताह वाद दर्शको की भीड कम हो गयी। अशर्फी की स्त्री को अव गृह-कार्यो की परीक्षा में उतरना पडा। जिस प्रकार अच्छे छात्र की सुहरत सारे स्कूल व कालेज में फैल जाती है उसी प्रकार इस नव-वधू के अच्छे कार्यों की प्रशसा सारे ग्राम मे फैल गयी। सर्वत्र इनकी चर्चा होने लगी। सव लोग कौडी राम, उनकी स्त्री विमला तथा अशर्फी के भाग्य की सराहना करने लगे।

विवाह हो जाने पर अशर्फी की रुचि पढने में फीकी होने लगी। उसे अव ठाट-वाट की रात दिन चिन्ता लगी रहती थी। कौडी राम का घरेलू-व्यय वढ गया। वह भी चाहता था कि कही अशर्फी को कोई छोटी मोटी नौकरी मिल जाय। कई वार रजनी से सकेत भी किया।

प्रात काल का समय था। अशर्फी की पार्टी का एक व्यक्ति फूटकर रजनी से मिला। उसने सूचना दी कि परसो कचनपुर वन के निर्जन-स्थान मे ४ वजे भोर में रेलवे की पटरी, ट्रेन उलटने के प्रयत्न मे उखाडी जायगी। पटरी उखाडने का नेता अशर्फी है, यह दल सोलह व्यक्तियो का है। ये लोग वने जगल मे छिपे रहेंगे, जव ट्रेन उलट जायेगी तो ये लोग सहानुभूति में घटना-स्थल पर पहुँचेंगे और आहत-यात्रियो का सामान लूटेंगे। सरकारी खजाने को भी लूटने का विचार है।

रजनी—(उस व्यक्ति से) अशर्फी सवका नेता है ?

वह व्यक्ति—जी हां।

रजनी—आप का नाम क्या है ?

वह व्यक्ति—कृपा कर मेरा नाम न पूछें। वाते जो वतलाया, सव सत्य वतलाया। मै भी उस दल में था पर अव इस पाप-कार्य मे सम्मि-लित नही हूँगा। मै उस दिन नही जाऊँगा। यदि खुला विरोध करूँगा तो मेरे ऊपर अशर्फी की शका होगी, शायद इस शका मे मेरी वहुत वडी

हानि हो। आप से भी कहता हूँ कि आप संभल कर कदम उठाइयेगा। उपदेश तो उसे दीजियेगा नही, नही तो आप की जान पर खतरा होगा। अब अशर्फी पूरा क्रातिकारी का रूप धारण कर लिया है। अच्छा तो अब मैं जा रहा हूँ पुन अवसर निकाल कर मिलूँगा। मेरे ऊपर उस दिन आप की शिक्षा का प्रभाव पडा है जो कि आपने राम चबूतरे पर देश-सेवा के लिये दिया था। आप की शिक्षा ही का प्रभाव पडा कि आज अशर्फी का दल सोलह का हो गया नही तो इसके पूर्व सैकडो का था। जय हिन्द। जा रहा हूँ।

आज रजनी को अशर्फी के इन दानवी-विचारो पर कुछ देर के लिये बडी घृणा हो गयी पर उसने गहराई तक सोचा तो इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अशर्फी का सुधार सख्ती और उपदेश से नही होगा बल्कि प्रेम से होगा, क्षमा से होगा। मैं तो ट्रेन को बचा ही लूँगा। अकेला काफी हूँ। देश के निरपराधी भाइयो को कदापि मरने नहीं दूँगा। सरकारी खजाने को, नही, नही देश के सञ्चित-कोष को कभी भी लूटने का अवसर नही दूँगा। एक अशर्फी को कौन कहे, लाखो अशर्फी मेरा कुछ नही बिगाड सकते। सोलह को कौन कहे, सोलह लाख डाकुओ का दल मेरा बाल बाँका नही कर सकता। मेरा विचार अडिग है, हिमालय पहाड से भी दृढ है। शङ्कर जी का धनुष डिग गया पर मेरा विचार देश-सेवा के लिए बिल्कुल अटल है।

रजनी उस सकट-मय घडी की प्रतीक्षा करने लगा। आखिर वह अशुभ घड, पर रजनी के लिये शुभ घडी आ ही गयी। बहुत तडके खा-पीकर रजनी सोया। ३ बजे प्रात काल का एलार्म घडी मे लगा दिया। घडी ने अपना कर्तव्य पालन किया और रजनी को भी अपने कर्तव्य-पालन के लिये सकेत किया, चैतन्य किया। रजनी एलार्म सुनते ही अशर्फी के गृह पहुंचा। अशर्फी की अम्मा को बाहर से पुकारा, कौडीराम को जगाया।

कौडीराम—मुझे जहाँ तक पता है वह घर पर नही है।

विमला—अशर्फी के कमरे मे आज रात्रि मे कई आदमी सोये हुए थे पर इस समय कोई नही है ।

रजनी—क्यो ? वे सव कैसे आदमी थे ? क्या हुए ? कहाँ से आये थे ?

विमला—बेटा ! मुझे कुछ भी जानकारी नही है, तुम्ही वतलाओ कि अशर्फी से क्या काम है ? आवेगा तो कह दूँगी ।

रजनी—चाची ! कोई काम नही, पढ रहा था, चित्त नही लगा, उठा चला आया । अव पढने जा रहा हूँ ।

रजनी को अव होश कहाँ ? उसके सामने देश था, देश का कोप था, देश के भाई थे । वह शौचादिक-क्रिया से निवृत्त हुआ । साइकिल उठाया । दौडा हुआ कचन वन का रास्ता लिया । जव एक मील वन रह गया तो अपनी साइकिल एक परिचित व्यक्ति के यहाँ रख दिया । स्वय घटना-स्थल पर पहुँचा । वडा घना जगल था । यहाँ कोई रजनी को मार भी डालता तो पता नही चलता । उसने साहस किया, लाइनो को चुपके-चुपके देखने लगा। लाइनें दो जगह उखाडी हुई मिली । वाल्टू खीच लिया गया था । ट्रेन वहाँ से पास होती तो वहुत वडी क्षति होती, जान व माल दोनो की होती । डिव्वे वहुत नीचे गिरते और नीचे गिरकर चूर-चूर हो जाते । रजनी इन स्थलो को देख कर जरा भी विचलित नही हुआ । प्रात काल हो गया था अभी अरुणोदय नही हुआ था पर कुछ ही देर थी । रजनी आँखे उठाया, इधर-उधर देखा, कोई भी वस्ती निकट नही थी । तीन चार मील के अन्दर एक भी वस्ती नही थी । लाइन ठीक करने का अनेक प्रयत्न किया पर सव विफल, कीली भी नही थी, उसे सव चुरा ले गये थे । दोनो ओर के स्टेशन काफी दूर थे । पश्चिम की गाडी आने मे देर नही थी । पश्चिमी-स्टेशन, घटना-स्थल मे पूरे साढे तीन मील की दूरी पर था । साइकिल दूर रख दी गयी थी, वह भी मार्ग से दूर थी । उसने पश्चिमी स्टेशन को सूचना देना उचित समझा । घडी पास मे थी । गाडी आने में २५ मिनट की देर थी । वह वेतहासा दौडा और सोचा कि दोनो ओर की गाडियो को रुकवा दूँ,

ज्योंही स्टेशन दौड़ा पहुँचा, गाडी घटना स्थल की ओर चल पडी, अभी स्पीड कम थी। गाडी कुछ लेट थी, नही तो रजनी को नही मिलती, शायद घटना-स्थल पर मिलती। ट्रेन रोकने के लिए बहुत चिल्लाया पर कौन सुनता है नक्कार खाने में तूती की आवाज। रजनी उछल कर पावदान पर पैर रखा, थका था ही, पैर काँप रहे ही थे, फिसल पडे, वेचारा प्लैट-फार्म पर पीछे को गिर पडा, सिर से रक्त की धारा वह चली, गार्ड ने गाडी रोक दी, यात्री उतर पडे, रजनी का सिर फट गया, कुहनियो से भी रक्त प्रवाहित हो रहा था। पीठ और कमर में काफी चोट आयी थी। यात्रियो ने रजनी को घेर लिया। रजनी कराह रहा था, वेहोश था, यात्री हटाये गये, गार्ड ने अपने हाथ मे रजनी को पखा किया पर रजनी को कहाँ होश, वह मरणासन्न था जीवन की अंतिम साँसें भर रहा था, उसकी आँखें खुली थी, घटना-स्थल पर जाने मे गाडी को रोकने के लिये, वह मौन था, अशर्फी के पाशविक अत्याचार पर। गार्ड ने उसे अपने डिब्बे में रख लिया। वह जोर जोर से चिल्ला रहा था, चीख मार रहा था, रक्त की धारा को गार्ड रह-रह कर पोंछ रहा था, रक्त धीरे धीरे वन्द होने लगा। ट्रेन में तेज हवा के झोंके लगे। झोको ने रजनी को चौंका दिया। रजनी को होश आया पर यह होश स्थिर नही था, विशुद्ध नही था, वह एक प्रकार से वेहोश ही था, वेहोशी में वकता जाता था कि गार्ड वावू आगे खतरा है, रेलवे लाइन की कीलो निकाल ली गयी है आवाज अस्पष्ट थ, गार्ड समझ नहीं रहा था, रजनी उभक उभक कर घटना-स्थल की दूरी देख रहा था। जव जव रजनी उभक उभक कर आगे को झाँकता तो गार्ड उसे हठात् लिटा दिया करता था, डाँट दिया करता था। गार्ड समझता था कि यह वेहोशा में ऐसा कर रहा है। रजनी ने झपट कर उसके पाकेट से नोट-वुक और पेंसिल निकाल लिया, कुछ लिखना चाहा तव तक गार्ड ने डाँट कर छीन लिया। गार्ड उसे समझ रहा था कि यह वेहोशी में ऐसा कर रहा है, वह पागल है, पर वह पागल था, वेहोश था, अपने देश के

लिये, अपनी सरकार के लिये, वास्तव में अब रजनी होश मे था, बोल नहीं सकता था कारण सख्त चोट लगी थी, काफी खून बहा था। रजनी को होश आया कि उसके पाकेट मे फाउन्टेन पेन और सादे कागज है उसने झटपट कागज निकाला। फाउन्टेन पेन से लिखा कि कचनपुर वन के बीच पटरी की कीली उखाड ली गई है, पूरा खतरा है। खतरा है। ट्रेन रोक दी जाय। अब गार्ड की समझ में रजनी की बातें स्पष्ट हुई। वह हक्का बक्का हो गया क्योंकि ट्रेन कंचनपुर वन के निकट करीब करीब पहुँच चुकी थी। उसने झट ट्रेन रोक दिया। ईश्वर की कृपा थी कि ट्रेन घटना स्थल से एक फर्लांग पहले ही रुक गयी। अब गार्ड को याद आया कि यह पागल नही था वरन् मैं पागल था। ड्राइवर को लिया, घटना-स्थल पर पहुँचा तो देखा कि इस देश-प्रेमी नवयुवक की बातें ५२ तोले पाव रत्ती सही हैं। गार्ड ड्राइवर दोनो रजनी के पास आये तो देखा कि वह बिल्कुल बेहोश पडा है, मुख से आवाज बन्द हो गयी है उसकी दशा चिन्तनीय हो गयी है। टक-टकी लगाकर एक टक आँखो से देख रहा है। सज्ञा-शून्य हो गया है। गार्ड और ड्राइवर कुछ जानकारी प्राप्त करना चाहते थे पर वे क्या करें, रजनी अब अन्तिम घडियाँ गिन रहा है। उसे होश नही है।

गार्ड और ड्राइवर दोनो चिन्ता-मग्न हैं। अगला स्टेशन दूर है। लाइन खराब है। अभी आगे दूसरे स्टेशन पर अस्पताल है। कोई सवारी का साधन है नही, ईश्वर की कृपा हुई पश्चिम की ओर से प्लेटियर का ठेला आया। ठेला देखकर गार्ड और ड्राइवर खिल उठे। गार्ड ने ठेला रोका। सारी घटना का अध्ययन किया, ठेले पर रजनी को लिटाया। अस्पताल पहुँचाया। गार्ड रजनी के साथ ही साथ था। डाक्टर ने बहुत खतरनाक चोट बताया। मरहम पट्टी उसी बेहोशी में की गयी। होश मे लाने के लिये दवा दी गयी। शाम होते होते बिल्कुल होश आ गया। बडी अच्छी अच्छी मूल्यवान औषधियाँ खिलायी गयी। पूरी ताकत आ गयी। रक्त का दौरा काफी मात्रा में होने लगा। दूसरे दिन वह चलने-फिरने लगा। रेलवे

पुलिस व कर्मचारी अस्पताल में पहुँचे। रजनी से अधिकारियो ने पूछा कि बताओ बेटा। तुम्हारा क्या नाम है ? क्या करते हो ? इतने ही में रजनी के माता-पिता रोते बिलखते वहाँ पहुँच गये। रजनी की दशा देखकर रोने लगे। हाकिमो तथा लाल पगडी को देखकर दोनो घबरा उठे।

रजनी की माता शैलकुमारी तथा पिता अजयकुमार ने रोते हुए कहा कि सरकार मेरे बेटे का नाम रजनी है वह इस वर्ष हाई स्कूल में पढ रहा था। प्रथम श्रेणी का पुरस्कार पाने पर भी वह फेल हो गया। वह बिना खाये पीये ३ बजे भोर में निकला था। हम लोगो ने सुना कि वह स्टेशन पर सख्त घायल होकर बेहोश हो गया था। उठा कर भेजा गया। हम लोग खबर पाकर दौडे दौडे आ रहे है। इस बच्चे का कोई अपराध हो तो हम दोनो को इसकी जगह पर जितनी सजा की आवश्यकता हो दें। आवश्यकता पडे तो हम दोनो फाँसी पर चढने को तैयार हैं।

शैलकुमारी—(दौड कर रजनी को गोदी मे दाबकर) रोती हुई दोहाई दारोगा जी। इसे छोड दें, आप ही का बच्चा है। मुझे फाँसी दें। यही मेरा एक धन है। मेरा सर्वस्त्र है। मेरा इकलौता पुत्र है। मेरे अधेरे घर का चिराग है। (दूसरे हाकिम से हाथ जोडकर) सरकार हम इसे कदापि दण्डित नही होने देंगे। जितना मारना पीटना हो मुझे मारिये पीटिये, इसे छोड दीजिये।

शैलकुमारी को भीखमपुर थाने की दुर्घटना की याद आ जाती है। वहाँ के पुलिस का अत्याचार उसकी आँखो के सामने नाचने लगा। पुलिस और पुलिस के दारोगा यहाँ भी खडे है। सामने शैलकुमारी देख रही है, इन्ही सब कारणो से वह व्यग्र होकर रो रही है। काँप रही है।

रजनी का पिता अजयकुमार रजनी के सामने खडे होकर रजनी की सफाई देते हैं और प्रार्थना करते है कि आप लोग मेरे बच्चे पर रहम करें। यही हम लोगो की आँखो की ज्योति है। इसी को देखकर हम लोग जीवित है। इसे क्षमा करें।

सभी उपस्थित अधिकारी अजय तथा शैलकुमारी को सान्त्वना देते हैं और कहते हैं कि आप के बच्चे ने वह प्रशसनीय कार्य किया है जो कि कोई नही कर सकता। हम लोग इसका बयान लेकर आगे सरकार मे भेजेगे।

रेलवे-अधिकारी—क्यो बेटा! तुमको कैसे ज्ञात हुआ कि लाइन ढीली कर दी गई है, कीली निकाल कर फेंक दी गयी थी। फिर तुम कैसे भेलूपुर स्टेशन पहुँचे।

रजनी मन ही मन सोच रहा है कि यदि मै इस रहस्य का उद्घाटन कर देता हूँ तो अशर्फीलाल का सारा परिवार आज कारागार की जटिल-शृङ्खला मे कस दिया जायगा। व्यर्थ में मामिला भूधराकार रूप धारण कर लेगा। मेरा स्कूल भी अछूता नही बचेगा। वहाँ भी तलाशी का बाजार गर्म हो जायेगा। बेचारे प्रिंसिपल भी एक मुसीबत में पड जायेंगे। मेरे स्कूल की यश-पताका कितने ऊँचे फहरा रही है। सब बनी बनायी इज्जत खाक मे मिल जायगी। अभी कल ही प्रिंसिपल को सरकार से धन्यवाद का पत्र मिला। आज भडाफोड होने पर सारा बना बनाया खेल बिगड जायगा। अत अच्छा होगा कि मै सारी रहस्य-मय बातो को घोलकर पी जाऊँ। अत सक्षेप में उसने उत्तर दिया —

महाशय जी! श्रीमान् जी! मैं रेलवे लाइन पकडे हुए घर आ रहा था कि मेरी दृष्टि पटरियो पर पडी। देखा तो कई कीलियाँ निकाल ली गयी हैं। लोहे की दोनो पटरियो मे ६ इच का अन्तर हो गया था। मैंने उसे ठीक करना चाहा, किसी लोहार को बुलाना चाहा। गाँव भी निकट नही था, रेलवे के डर से इस कार्य पर तत्पर होना नही चाहता था अत समय निकट जानकर मै भेलूपुर स्टेशन की ओर बढा, सोचा कि पहले इधर ही से यात्री-गाडी आयेगी, समय निकट था, तेजी से दौडा। स्टेशन पहुँचते पहुँचते ही गाडी रवाना हो गयी। चाल कम थी, मैं हाँफ रहा था। पूरा थक गया था। पैर मारे थकावट के चूर-चूर थे। उछल कर ट्रेन पर

चढने का साहस किया । थका था ही, झटका लगा, सिर के बल प्लेटफार्म पर
गिर पडा । फिर नही जानता क्या हुआ, कैसे यहाँ आया ?

रेलवे-अधिकारी—ट्रेन में चढकर क्या करने का विचार था ?

रजनी—तुरन्त जजीर खीचता, ट्रेन रोकता, गार्ड और ड्राइवर को सूचित करता ।

अधिकारी—फिर तुमने कैसे गार्ड को सूचित किया ?

रजनी—कुछ कुछ होश आने पर मैं मन ही मन वडवडा रहा था कि आगे खतरा है, वहुत खतरा है, ट्रेन रोक दी जाय । आगे कुछ नही जानता ।

अधिकारी—(गार्ड से) कैसे आप के डिब्बे में रजनी आया ?

गार्ड—जब यह घायल होकर प्लैटफार्म पर गिर पडा तो मैंने इसे अस्पताल मे भेजने के लिये अपने डिब्बे मे चढा लिया ।

अधिकारी—(गार्ड से) आप को रजनी ने कैसे सूचित किया ?

गार्ड—पहले यह अस्पष्ट वडवडा रहा था, मैं कुछ समझ न सका पुन इसने मेरी डायरी तथा पेंसिल छीन ली, मैंने समझा कि यह पागलपन मे, वेहोशी में ऐसा कर रहा है । इसके पहले, डिब्बे से उभक उभक कर वाहर झाँक रहा था, मैं इसे वल-पूर्वक लिटा देता था, समझा कि यह वेहोशी मे ऐसा कर रहा है । वाद को यह अपने पाकेट से फाउन्टेन पेन और सादा कागज निकाला और उस पर 'ट्रेन शीघ्र रोकिये, पूर्ववत वातें लिखा ।

रेलवे-अधिकारी—न, जी, तुमने ऐसा किया ? गार्ड की डायरी तथा पेंसिल उनके पाकेट से निकाला ? उनके छीन लेने पर अपने पाकेट से फाउन्टेन पेन और कागज निकाल कर लिखा ?

रजनी—मुझे कुछ कुछ ख्याल है पर अधिक नही वतला सकता ।

रेलवे-अधिकारी—(रजनी के हाथ का लिखा हुआ कागज दिखला कर) देखो यह तुम्हारी ही लिखावट है ?

रजनी—(पहचान कर) जी हाँ, यह तो मेरी ही लिखावट है पर कब लिखा इसका मुझे ज्ञान नही है ।

रेलवे अधिकारी इस बात की सूचना रेलवे के उच्च अधिकारी तथा मंत्री के यहाँ करते है । दोनो ओर से रजनी को अलग २ सुन्दर प्रमाण-पत्र मिले । रेलवे अधिकारी ५००) का और मंत्री की ओर से १०००) का परितोषिक मिला । रजनी को आगे पढने के लिये पचास पचास रुपये मासिक की छात्र-वृत्ति मिली । रजनी पूर्ण स्वस्थ हो गया । माता-पिता के साथ घर भेज दिया गया । उसके माँ-बाप उसके इस कार्य से बहुत प्रसन्न हुए ।

दूसरे दिन रजनी अशर्फी के साथ पाठशाला गया । पुन नाम लिखाया । प्रधानाचार्य ने उसके इस कार्य की प्रशंसा अपने स्कूल के सभी छात्रो के सामने की । लडको को उत्साहित किया कि देखो छात्रो ! तुम लोग रजनी से सबक सीखो, देश-सेवा के भाव सीखो, अपनी सरकार की अपने देश की, कैसे सेवा की जाती है यह रजनी बतलायेगा । प्रधानाचार्य ने इन कार्यो की सूचना शिक्षा-विभाग के मंत्री के यहाँ भेजा। वहाँ से एक प्रशंसा-पत्र रजनी के नाम आया और वह प्रथम श्रेणी मे घोषित किया गया, परीक्षा-रोक हटाली गयी । वह सदैव के लिये नि शुल्क कर दिया गया । उसे शिक्षा-विभाग की ओर से २५) मासिक विशेष छात्र-वृत्ति मिली प्रधानाचार्य ने इसका नाम टेंथ क्लास से काट कर इंटर प्रथम वर्ष मे लिखा । सभी छात्रो में रजनी के परितोषिक और छात्र-वृत्ति को देख कर बडा उत्साह छा गया । सबके हृदय मे देश-सेवा की भावना जाग उठी । अशर्फी तथा उसके क्रूर साथी मन ही मन कह रहे थे कि इसने ट्रेन रोक कर हम लोगो के सुनहले अवसर को मटियामेट कर दिया । ट्रेन उलटी होती तो कितना आनन्द आया होता, कितना अपार धन हम लोगो को लूट में मिला होता । हम लोग पास ही की झाडी में बैठे थे, पता नही रजनी कैसे वहाँ गया, कब गया, किसने उसे भेद दिया ? वह ट्रेन से गिरा । सिर फटा । बेहोश हुआ पर आयु का इतना मजबूत है कि बच गया , क्या करे इसको तो कल

ही नदी मे डुबो देता पर दोस्त ठहरा । वहुत उपकार किया है, विपत्तियों मे काम आया है मेरी शादी इसी के कारण हुई, नही तो कौन पूछता, मैं तो दमडी का भी नही । परीक्षा मे इसका जीवन दो वार चौपट किया । पहली वार का तीर तो कोई वहुत तीखा नही था पर दूसरी वार का निशाना वहुत सच्चा था, काफी क्षति पहुँचनी पर इससे भी वच गया । हम लोगो को कही का नही छोडा, अपने तो मालामाल हो गया । पढेगा भी , रुपये भी कमायेगा । पढने पर इसे हर विभाग में अच्छी से अच्छी नौकरी मिलेगी, अन्य विभाग में भले ही न मिले पर पुलिस और रेलवे मे तो अवश्य मिलेगी । अजीव चाल का है, इसका कोई वार खाली नही जाता । अच्छा, अभी इसके पतन होने मे देर है, भाग्य का वड़ा मजवूत है, कोई क्या करेगा, यह वडा घग्गड है ।

अतिम घटा वजा । अवकाश हुआ । सव लडके अपने अपने घर चल दिये । रजनी अशर्फी के साथ घर आया ।

अशर्फी—भाई रजनी ! तुमको तो वहुत काफी रुपये मिले पर बडे कष्ट मे । मारिये ऐसे रुपयो और प्रशसा-पत्र को । आज जान चली गयी होती तो ये रुपये, छात्र-वृत्ति और प्रशसा-पत्र किस काम के होते ?

रजनी—जान चली गयी होती तो क्या ? देश-सेवा में यदि मेरी जान गयी होती तो दुनिया जान गयी होती की रजनी देश के लिये वलिदान हो गया । कितनी वडी प्रतिष्ठा होती । कितना वडा सम्मान प्राप्त होता । आज कितने देश-प्रेमियो के अस्थि-पजर का पता नही है पर वह देवता-तुल्य पूजे जा रहे हैं, जगह जगह पर उनके स्मारक वने हुए हैं । वडे वडे गण्यमान नेता उनके स्मारको पर श्रद्धाञ्जलि चढाते हैं, स्तुति करते है, देवता-तुल्य पूजते हैं ।

अशर्फी—उन मृतक आत्माओ के किस काम का ? उनके विलखते हुए परिवार के किस काम का ?

रजनी—खैर, तुम जैमा मोचो।

वह अपने घर चला जाता है। माँ-वाप के चरणो को स्पर्श करके प्रणाम करता है। प्रसन्नता की वातें उनसे कहता है। माँ-वाप रजनी के उत्तीर्ण हो जाने से परम प्रसन्न हुए। खा-पी कर रजनी, सरस्वती की आराधना में लग गया।

रजनी की दिन-चर्या हो गयी थी कि वह प्रति दिन अपने अमूल्य समय में से कुछ समय निकाल कर देश-सेवा किया करता था। देश-सेवको का एक वहुत वडा दल वना लिया था। प्रति दिन अपनी टोली के साथ कुछ न कुछ देश-मेवा का कार्य किया करता था।

अशर्फीलाल का भी एक दल है जो ऐसे क्रातिकारी स्वभाव का है जिसके सामने सरकार का, देश की भलाई का, कोई तथ्य नही है। वह प्रति-दिन सरकार के उलटने-पलटने तथा लूटने-पाटने के प्रयत्न मे व्यस्त रहता है। डाका डालना, जनता के धन का अपहरण करना, सरकार को क्षति पहुँचाना, इस दल का प्रधान लक्ष्य था। इसके दल मे क्लास के वही छात्र थे जो उद्धत स्वभाव के थे। आयु मे पूर्ण-वयस्क थे, माता-पिता तथा गुरु की आज्ञाओं का उल्लघन करने वाले थे। क्लास मे भी इन्हें सदैव अशाति स्थापित करने मे आनन्द आता था। इस दल में काफी संख्या नही थी। इन्हें पढने में वहुत कम रुचि थी। इन्हें सदैव खुराफात सूझता था।

रजनी के दल की सख्या रजनी के शुभ कर्तृत्व से प्रति दिन वढती ही जाती थी। उसके मृदुल एव सरल-स्वभाव से उसके दल का उस पर पूर्ण विश्वास था। सभी लोग रजनी के सकेतो पर चलने वाले थे। यह दल अवकास के दिनो में ग्राम की सफाई करता था। श्रमदान का कार्य करता था। विवाह के दिनो में अनमेल विवाह का सुधार करता, वृद्ध-विवाह और वाल-विवाह की कुरीतियो को रोकता, वह भी कैसे ? समाज को समझा कर उनके सामने सत्याग्रह का आदोलन छेड़ कर, उन्हें प्रसन्न करके,

समझा करके अनुचित कामो से रोकता था। ग्रामो में मादक-वस्तुओं के निषेध का कार्य करता। ताडी-शालाओ की झोपडियाँ थोडे ही दिनो में सूनी हो गयी, वहाँ के मटके और प्याले कुत्तो के पेशाव के पात्र वन गये थे। लैमेंस उनके टूट गये थे। शराव के ठीके फीके व ठप् पड गये थे। ठीकेदार अपनी दुकानो पर वैठे-वैठे मक्खी मारने लगे। प्रत्येक घर मे घुस-घुस कर चर्खे का प्रचार किया। कुटीर-व्यवसाय की ओर लोगो का झुकाव किया। घर की वहू वेटियाँ और वृद्धाएँ प्रति दिन अवकाश के समय चर्खे काता करती, अपने परिवार के वस्त्र के लिये सूत कात लिया करती। वृक्षारोपण की ओर किसानो का झुकाव किया। ग्राम में तरकारी, फल तथा कृषि की उन्नति होने लगी। अच्छे अच्छे वीजो, अच्छी-अच्छी खादो की दुकाने कोआपरेटिव से खुलवाई गयी। कोआपरेटिव से अच्छी-अच्छी कलमें घर वैठे मिलने लगी। आस पास के गावो में एक चेतना सी आ गयी। देखा-देखी इसकी लहर दूर-दूर के अन्य ग्रामो में भी फैल गयी। सरकार की ओर से रजनी के दल को काफी सहायता व प्रोत्साहन मिलने लगा। ट्रेन-दुर्घटना से जितना पारितोपिक का रुपया मिला था, रजनी ने सव, देश-सेवा में लगा दिया। अपनी छात्र-वृत्ति के रुपयो से वह दीन-छात्रो की सहायता करता था। अपने अध्ययन की ओर रजनी का ध्यान कम नही था। वह धीरे-धीरे इण्टर व वी० ए० उत्तीर्ण किया। प्रत्येक प्रथम श्रेणी मे। अन्य साथी भी हर कार्य में उत्साही थे। रजनी के अथक सहयोग से उसका साथी अशर्फी किसी प्रकार गिरते पडते तृतीय श्रेणी में वी० ए० उत्तीर्ण किया। इसकी शिक्षा-व्यय का सारा वोझा रजनी ने स्वय उठाया। सव व्यय वही देता था। अशर्फी ने पढना छोड दिया। वह नौकरी की चिन्ता में दौड-धूप लगानें लगा। प्रत्येक विभाग के आफिस का द्वार खटखटाया करता पर तृतीय श्रेणी वह भी आर्ट साइड से, कौन पूछता है।

[७]

रजनी विवाह-योग्य हो गया। उसकी शादी की चर्चा सर्वत्र होने लगी। वडे-वडे धनी मानी उसके विवाह के लिये पैंतरेबाजी लगाने लगे। माता-पिता वृद्ध हो चले थे। घर में कोई अन्य स्त्री नही थी। माता की प्रवल इच्छा थी कि रजनी की शादी कही हो जाय। माता-पिता ने अपने विचार रजनी के समक्ष रखा।

रजनी—(माता-पिता से) आप लोग मेरे पूज्य माँ-बाप है आप लोगो की आज्ञा शिरोधार्य है पर मेरी हार्दिक इच्छा है कि मै एम० ए० कर लूँ तो शादी करूँ।

शैलकुमारी—बेटा! कहते तो तुम ठीक ही हो पर हम लोग बूढे हुए, जीवन का ठिकाना नही, आगे क्या होगा। अपनी आखो के सामने तुम्हारी शादी देख लेते, पतोहू देख लेते तो वडा अच्छा होता। तुम्हारे पिता, जगदीशपुर के रईस शीतलप्रसाद की सुपुत्री से विवाह की चर्चा चला रहे है। वह वहुत धनी मानी है, काफी रुपये देने वाले है, घर में एकलौती पुत्री है, लाखो की मिलकियत है, सिवाय पुत्री के कोई दूसरा उपभोग करने वाला नही है। ये सारी सम्पत्ति एक दिन तुम्हारी ही हो कर रहेगी। चाहे उनके धन आज ले लो या शादी हो जाने पर, वह हर प्रकार से तैयार है।

अजय—बेटा! घर मालामाल हो जायेगा। शीतलप्रसाद वडे धूम-धाम से शादी करना चाहते है। तिलक तथा विवाह-व्यय के लिये वह बीस हजार रुपये देने को तैयार है। तुम भी मेरे इकलौते बेटे हो, हम लोगो की भी हार्दिक इच्छा है कि खूब धूमधाम से बारात ले चले। आभूषणो को तो उन्होने पहले ही से वनवा रखा है फिर हम लोगो का लगेगा ही क्या?

रजनी—पिता जी! देश इस समय कितनी कठिनाई से गुजर रहा है। सर्वत्र दुर्भिक्ष छाया हुआ है। जनता दाने-दाने को मुहताज है। भूखों

मर रही है। विदेशो से अनाज लेते-लेते सरकार के नाकोदम आ गया है। सरकार गला फाड-फाड कर चिल्ला रही है कि विवाह में अधिक व्यय न किया जाय। थोडे से व्यक्ति विवाह मे सम्मिलित हो, रडी, भाँड, नाच, सामियाना, आतिशवाजी में व्यर्थ रुपये पानी की तरह न बहाया जाय। आज आप इन मुसीवत की घडियो में कैसी सहनाई वजाने जा रहे हैं ?

अजय—वेटा! समार क्या कहेगा ? वह विवाह कैसा ? जिसमें हाथी-घोडे, रडी-भाँड, आतिशवाजी, शानदार सामियाने, कुटुम्वी, सम्वन्धी, हित, मित, पवनी-परजुनियाँ न सम्मिलित हो। जब ऐसी तैयारी हो तो विवाह, विवाह है। शादी का अर्थ ही खुशी का होता है। जब सभी सगे-सम्बन्धी, पवनी-परजुनियाँ और वराती प्रसन्न हो जायँ, गद्गद हो जायँ, पूर्ण सन्तुष्ट हो जायँ, तव वेटा! वह लडके-लडकी की शादी कही जायगी, नही गुडवा-गुडिया की शादी कही जायगी।

रजनी—पिता जी! आप लोग वडे भोले भाले हैं, घर के वाहर की वातें कुछ नही जानते। समाचारपत्र आप लोगो को मिलते नही अत देश की सभी वातें आप लोगो के सामने अदृश्य है। आप को तृष्णा है, वह किसके लिये ? मेरे लिये। आप लोगो ने मेरे लिये इतना पैदा कर दिया है कि आप लोगो के आशीर्वाद मे मेरे लिये कभी किसी वस्तु की कमी ही नही पड सकती। आप धन के चक्कर मे न पडें। देखिये प्रात स्मरणीय नेहरू जी पहले कितने विलासी थे। उनकी शिक्षा मे उनके स्वर्गीय-पिता प० मोतीलालजी नेहरू ने कितने रुपये व्यय किया। उस व्यय को यदि कोई इकत्र किया होता तो उससे लाखपति हो गया होता, करोडपति हो गया होता। उनके वस्त्र फ्रास से धोकर आते थे। उनके कपडो की वटन का मूल्याकन करना मुझ दीन के लिये कठिन है, वस्त्रो के मूल्य की वात तो अलग रही। आज उसी विलासी नेहरू जी की वेश-भूषा देखी जाय, उनके वस्त्रो व वटन को देखा जाय। वही सादा

खादी का कुर्ता, सादी खादी की सदरी, सादी वटन जो कि आज एक साधारण से साधारण व्यक्ति धारण कर सकता है। आज दिन वह भारत के प्रधान मन्त्री हैं। सारा ससार उनकी ओर देख रहा है। ससार उन्हें शान्ति-दूत से पुकार रहा है। आज विश्व में उनका जो स्वागत होता है वह किसी का नही होता। पूज्य राष्ट्रपति स्व० राजेन्द्रबाबू ही को लिया जाय, उनकी वकालत की आमदनी कई लाख रुपये वार्षिक थी। थोडे ही दिनो की प्रैक्टिस में करोडपति हो गये होते, पर उनकी कोई सादगी देखे, उनके अथक परिश्रम तथा अश्रुत-पूर्व देश-सेवा की लगन देखे, दमा के चिर रोगी थे पर फिर भी सभी मौसिमो मे साधारण वस्त्रो का उपभोग करते थे। ऐसे ही प्रत्येक उच्चकोटि के नेता अपना जीवन-निर्वाह बिल्कुल सादे ढग से अल्प-व्यय में करते हैं तव बतलाइये बावूजी ! हम लोग क्यों व्यर्थ के टीम टाम में पडें। पूज्य-पिता जी ! एक धनी परिवार से पोषित तथा स्वच्छन्द वातावरण में पली हुई लडकी मेरे यहाँ साधारण जीवन कैसे बिता सकती है ? मै अपना तौर तरीका सादा रखता हूँ, मै किसी पद पर रहूँगा, अपनी रहन-सहन सादी रखूँगा, तव भला मेरा और उस लडकी का पारस्परिक व्यवहार कैसे चलेगा ? दम्पत्ति-जीवन एक गाडी है उसके दोनो पहिये समान होने चाहिये, अनमेल होने पर गाडी कैसे चलेगी ? आप ही सोचे।

अजय—बेटा ! तुम्हारी बातो से मेरे हृदय मे एक प्रकाश आ गया। अब तक मैं अधेरे में था पर एक ही बात की चिन्ता है कि मैं उन्हें आशा दे दिया हूँ अब क्या करूँ। उनकी पुत्री को भी देख चुका हूँ, वह बडी ही सुशीला है, सुन्दरी है, हृष्ट-पुष्ट है, शिक्षिता है।

रजनी—लडकी रूप रग की सुन्दर होकर क्या करेगी ? उसमे अन्य गुण भी तो होने चाहियें, नारुन का फल देखने मे कितना सुन्दर होता है पर उसे कोई ज़रा सा भी खा ले तो ससार से चल देना पडेगा। स्त्री को तो एक दक्ष-गृहणी होना चाहिये, वह पति के कधे से कधा मिलाकर चलने वाली हो, पति को सहयोग देने वाली हो। देखिये मैं चर्ख़ा चलाकर अपने

लये खादी का वस्त्र तैयार करता हूँ। मेरी वृद्धा-माता भी चर्खा चलाकर आप के लिये और अपने लिये वस्त्र तैयार कर लेती हैं। घर का सारा काम-काज स्वय अपने हाथ से करती है। गृहणी जहाँ तक हो दीन-गृह की हो तो अत्युत्तम होगा।

अजय—वेटा! वह पढी लिखी काफी है। एफ० ए० पास कर लिया है। वी० ए० मे पढ रही है।

रजनी—पढा लिखा होना तो अच्छा ही है पर यह कोई आवश्यक नही है कि अधिक पढी लिखी स्त्री अधिक दक्ष गृहणी होगी, अपने सास-ससुर की मच्ची-सेविका होगी, पति-परायणा होगी।

अजय—तव क्या किया जाय ?

रजनी—आप तो मेरे विचारो को मव जान ही गये। मेरे विचारो के अनुकूल जव कोई लडकी मिले तो आप शादी ठीक कर लें, यद्यपि मेरी इच्छा अभी शादी करने की नही थी। एम० ए० करने के वाद मेरी इच्छा शादी करने की थी पर क्या करूँ माता जी को इस अवस्था मे गृह-कार्यों के करने मे कष्ट होता है। उनकी हार्दिक-इच्छा मेरे विवाहोत्मव देखने की है तो उन्हें और आप को पूर्ण अधिकार है।

अजय—शीतलप्रसाद को क्या उत्तर दिया जाय ? वह तो सालो से मेरे पीछे पडे हैं।

रजनी—अव तो मैंने अपने सव विचार आप लोगो के समक्ष व्यक्त कर दिया। यदि आप लोगो को वह लडकी पमन्द हो तो आप शादी कर सकते हैं। रह गया तिलक-दहेज और धूम-धाम की तैयारी इसे मैं पमन्द नही करूँगा। सादगी रहेगी। उनके धन-वैभव की वातें इसे वह पूज्य विनोवा भावे को भूदान-यज्ञ में दे सकते हैं।

अजय—अच्छा उनमे कहा जायगा। तुम्हारे मामने वातें होगी। अभी विवाह की लग्न काफी लम्वी है, तव तक शायद कोई दूसरी लडकी तुम्हारे

सिद्धान्तानुकूल मिल जाय। तुम भी स्वतन्त्र हो, तुम्हे पूरी स्वतन्त्रता है। तुम अपनी इच्छानुकूल कोई शादी कर सकते हो।

रजनी—आप लोगो को जिस प्रकार प्रसन्नता होगी मै वही करूँगा। माता-पिता के हृदय को दुखाना मै पसन्द नही करता। उनकी इच्छा के विरुद्ध कार्य नही करना चाहता। पिता जी! मैने एम० ए० मे अपना नाम लिखाया है। मेरे सभी साथी यूनिवर्सिटी पहुँच गये होगे, मैने भी अपने साथियो से आज ही पहुँचने का वचन दिया है अत मै भी जा रहा हूँ।

अजय—अशर्फी तो नही जायगा, वह तो नौकरी के फेर मे है।

शैलकुमारी—शादी भी तो उसकी हो गयी, रजनी से सयाना है भी। घर मे उसकी स्त्री और वृद्धा माता है। कौडीराम मर ही गया। घर का खर्च अशर्फी ही को सँभालना पडेगा।

रजनी—हाँ, मै प्रयत्न मे हूँ कि कोई नौकरी उसे मिल जाय ताकि उसकी वृद्धा माता तथा उसकी स्त्री का जीवन सुचारुरूप से चले। स्त्री तो उसकी बडी ही चतुर गृहणी है। सादा जीवन बिताने वाली है, अधिक तो नही पढी है पर जहाँ तक पढी है उसका उसे ठोस ज्ञान है, बिल्कुल भोली-भाली है, मुझसे तो बडे सरल स्वभाव से मिलती है, बडी प्रसन्न-चित्त रहा करती है।

शैलकुमारी—हाँ इसमे क्या शक, पतोहू मिले तो ऐसी ही मिले। जब से आयी है एक काम भी सास को नही करने देती, सास की बडी सेवा किया करती है, घर का सारा बोझा अपने सिर उठा लिया है।

रजनी—ऐसी ही पतोहू, अम्मा! तुम्हे भी चाहिये।

माता-पिता के चरणो को स्पर्श कर प्रणाम करता है, पुन यूनिवर्सिटी चल देता है। मार्ग मे अशर्फीलाल तथा उसकी स्त्री से मिल लेता है।

[८]

रजनी विश्वविद्यालय पहुँचा। साथी दौड कर उनसे मिले। सामान को अपने पास वाले रूम मे रखे। रजनी बडी लगन से पढना आरम्भ

कर दिया। सायकाल नित्य खेल-कूद मे भी भाग लेता है। प्रति रविवार को वह एक मभा का आयोजन करता। देश-प्रेमी नव-युवको का एक यूनियन कायम किया। यूनियन की सख्या वढती ही जाती थी। यूनियन के कार्य को देख कर वाइस-चासलर वहुत प्रसन्न हुए। यह यूनियन प्रत्येक सेवा-कार्य पर रात-दिन आवश्यकता पडने पर डँटा रहता था। रजनी के पूर्व युनिवर्मिटी में वडी अशाति थी, छात्र वडी उद्दण्डता करते। मारे नगर में ऊधम मँचाया करते। प्राय हडताल हुआ करती थी। मेस मे हडताल, पढाई मे हडताल, वदना के समय हडताल, जहाँ देखो वहाँ हडताल। हडताल तो छात्रो का एक साधारण खेल सा हो गया था। सवको इस यूनियन ने रोक दिया। इम हडताल से यूनिवर्सिटी के सभी अध्यापक, प्राध्यापक, प्रधानाचार्य, चासलर परीशान रहा करते थे। रजनी ने पहुँचते-पहुँचते हडताल की इति-श्री कर दी। रजनी के पहले जव कभी वाहर से कोई डाक्टर, मत्री या प्रसिद्ध नेता यूनिवर्मिटी में भाषण देने आता तो छात्र काफी ऊधम मचाते। सवको रजनी ने एक-एक करके शात कर दिया। जव किसी प्रकार की गडवडी पडती, रजनी मीटिंग करके शाति कर लेता। रजनी के पहले कई छात्राएँ अपहरण कर ली गयी थी जिसका पता आज तक नही चला। रजनी के दल को यह वात ज्ञात हुई। उसकी चिन्ता मे यह दल रात-दिन प्रयत्न-शील रहा पर पता नही चला, यूनिवर्सिटी का क्षेत्र वहुत वडा था। इसका नाम 'विशाल-तपोवन-यूनिवर्सिटी' था। सचमुच इस यूनिवर्सिटी को चारो ओर से वहुत वडा विशाल वन घेरे था। यहाँ पहले वहुत वडे-वडे तपस्वी रहा करते थे। रजनी के समय इम यूनिवर्सिटी का नाम 'आदर्श-विशाल-तपोवन-यूनिवर्सिटी' पड़ गया। यहाँ के चासलर का नाम 'दयानिधि' था। वास्तव मे यह दया के निधि थे। यह अपने छात्रो, सहायको तथा अन्य अधीनस्थ कर्मचारियो पर वडी श्रद्धा व दया रखते थे।

दयानिधि—(रजनी को वुलवा कर) वेटा रजनी ! अभी अभी हाल

में दो छात्राओ का अपहरण डाकुओ ने किया है। जान पडता है कि विश्वविद्यालय में कोई ऐसा दल है जो कि इन डाकुओ से मिला है। ये लडकियाँ प्राय दक्षिण के फाटक से भगायी जाती हैं क्योंकि जब जब लडकियाँ भगायी गयी, दक्षिणी फाटक रात्रि मे खुला मिला। किस भाँति भगायी जाती है, पता नही चलता। पुलिस हैरान, सरकार हैरान, मै तो बहुत ही लज्जित हूँ। मेरा अनुमान है कि ये लडकियाँ नदी उस पार जाती हैं। उस पार कही डाकुओ का अड्डा है।

रजनी—(विनम्र-शब्दो मे) श्रीमान् जी ! चिन्ता न करे, मै तथा मेरा दल प्रयत्न-शील है। कभी न कभी इस घटना का विस्फोट होकर रहेगा। मै आज ही निकलता हूँ। आप से अनुमति माँगता हूँ। आप मुझे कुछ अवकाश दें।

दयानिधि—बेटा ! तुम्हे सदैव अवकाश है जाओ, ईश्वर तुम्हें सफलता दे, विघ्न-बाधाओ से ईश्वर तुम्हरी रक्षा करे। तुम्हारी यात्रा मगलमय हो। कोई साथी चाहिये, रुपये चाहिये, रक्षक चाहिये तो मै सब कुछ देने को तैयार हूँ।

रजनी—(चरणो को स्पर्श करके) मुझे चरण-रज दीजिये, मैं अकेला काफी हूँ।

रजनी वहाँ से चल देता है। पास ही मे एक नदी थी वह बहुत काफी तो नही पर थी चौडी। पहाडी थी, उसके उस पार मीलो तक जगल तथा पहाड़ थे। एक निर्जन स्थान पर पहुँचा। वहाँ कोई नही है, केवल एक नौका है, उस पर खेने वाला डाँड है। प्रात काल का समय है, नौका खेना जानता था। नौका खोल देता है, उस पार लेकर चल देता है, नौका मे काफी बडा छिद्र था, इसका उसको पता नही, इसी कारण वह बेकार पडी थी। बीच धारा मे पहुँचते पहुँचते वह गयी। बहुत प्रयत्न किया कि जल्दी से उस पार पहुँच जाऊँ, नदी का पाट कम था नही, धारा तीव्र थी, नौका डूब गयी। वह पानी में तैरने लगा। तैरना

जानता था, प्रयत्न करते करते उस पार एक वृक्ष के पास पहुँचा । उसकी डाली पकडना चाहा पर उस पर कई विषैले साँप लिपटे हुए थे । साँपो ने रजनी को देखा, फण उठाया, फुफकारना शुरू किया । रजनी नदी में कूद पडा, पुन बेतहासा बहने लगा । मीलो निकल गया । एक पाहाडी चट्टान से सीना टकराया, तीव्र चोट लगी, टीला पकड लिया, कुछ देर तक विश्राम किया, पुन आगे बढा देखा कि एक विशाल घडियाल किनारे पर लेटा धूप खा रहा था । जाडा साधारण था पर पानी नदी का बडा शीतल था । किनारा पकडना चाहा पर घडियाल को देख कर होश जाते रहे पर भगवान की कृपा से वह ऊँघ रहा था, चुपके से जान हथेलियो पर रख कर किनारा पकडा । बाहर निकला, धूप में कपडे सुखाया । बडा घनघोर जगल था । बेर तथा श्रीफल फले थे । बेर पकी थी । थी तो जगली पर भूख में मीठी लगती थी । किसी प्रकार क्षुधा को शान्त किया । तब तक कपडे भी सूख चले थे । कपडे पहना, आगे बढा । देखा तो एक विशाल शेर अपनी मस्तानी चाल में आ रहा था । अब तो रजनी के प्राण-पखेरू उड चले थे पर ज्योही शेर की दृष्टि उस पर पडी वह छलाग मार कर चुपके से पेड पर चढ गया । शेर उस पेड के चारो ओर चक्कर लगाने लगा । गुर्राया, दहाडा, उछला पर इधर रजनी निर्भीक था एक मोटी डाल से सीना पिचकाये लिपटा पडा था । शेर को निराशा हुई, आगे बढा । जब काफी दूर चला गया । रजनी ने भगवान का स्मरण किया । नीचे उतरा, आगे का रास्ता लिया । एक घनी पेडो की झुरमुट थी, आदमियो की आवाज सुनायी दी । वह एक पेड पर चढ गया, आहट लगाने लगा । चार छ हट्टे-कट्टे नव-युवक एक लाश लेकर आये । टिकटी थी, शव पर रक्ता-म्बर था, नाक पर रुपये भर का छेद था, लाश कुछ हिल भी रही थी । रजनी निकट ही के पेड पर बैठा था, मौन साधे था, सारा दृश्य आँखो से देख रहा था । इन लोगो ने शव को एक कब्र के पास उतारा । लाश ढोने वाले अग्रेजी में रह-रह कर बोलते थे । आवाज अस्पष्ट थी । इन लोगो में

से एक व्यक्ति कब्र के अन्दर घुसा । अब पता चला कि यह एक सुरग थी । लाश भूमि पर रख दी गयी थी, उसमे गति हो रही थी, इसके पूर्व ढोते समय लाश को गतिमान देख कर रजनी ने तर्क किया कि ढोने वालो के ऊबड-खावड भूमि पर चढने से इसमे गति हो रही है पर भूमि पर रखने मे साफ पता चला कि यह प्राणी जीवित है । रजनी मन मे प्रसन्न भी है, भयभीत भी है । स्थान निर्जन है, जगल घनघोर है, पहाडी है, बस्ती से बहुत दूर है, मार्ग बडा बीहड है, दिन के १० बज चुके थे । मन में निश्चय कर लिया कि ये डाकू अवश्य हैं, ये ही स्त्रियो के अपहरण-कर्ता हैं । पढ़े लिखे छात्र इसमे अवश्य हैं, चाहे सब भले ही न हो ।

कुछ देर के बाद वह नवयुवक बाहर आया । सुरग का द्वार चट्टान से ढँका था । कब्र (सुरग) के समीप एक मकान छोटा सा बना था । इस मकान का ताला ज्यो का त्यो पडा रहा, नही खोला गया । इसी सुरग से सब लोग मकान के अन्दर घुसे । मकान से कुछ सिसकने की आवाज़ आयी । यह आवाज़ शायद अपहृत स्त्रियो की थी । डाँट फटकार की भी आवाज़ सुनायी पडी । शायद ये आवाजें डाकुओ की थी । कुछ देर बाद डाकू बाहर निकले । शायद अन्दर ये सब कुछ भोजन कर रहे थे । डाकुओ ने इधर उधर सावधानी से देखा । सुरग (कब्र) पर पत्थर रखा, प्रस्थान किया । इनके चले जाने के बाद पुन रोदन की आवाज घर से निकलने लगी । यह स्त्रियो की स्पष्ट आवाज़ थी ।

रजनी चुपके से पेड से उतरा, धीरे धीरे सुरग के पास पहुँचा, मुँह से चट्टान हटाया । जान पर खेल कर सुरग के अन्दर घुसा, वहाँ पहुँचा तो देखा कि अन्दर कई छात्राएँ बैठी रो रही है, आयु इनमें से किसी की २०—२२ वर्ष से अधिक की नही है । सभी रूपवती है पर दुखी है । सब का परिचय प्राप्त किया । ये भिन्न भिन्न कालेजो की लडकियाँ थी । रजनी के विश्व-विद्यालय की भी दो छात्राएँ थी जिनका अपहरण अभी अभी हुआ है जिनका नाम दयानिधि जी ने बतलाया था । उन सभी से पूछा कि

तुम लोग कैसे इन हत्यारो के हाथ पडी । युवतियो ने उत्तर दिया कि हम
लोग बेहोश करके लायी जाती हैं। टिकटी सजाकर मुर्दे के रूप में यहाँ
लाकर पुन कुछ दवाओ द्वारा होश में लायी जाती हैं ।

रजनी—छात्रावास मे गुण्डे, डाकू कैसे घुसे ?

युवतियाँ—स्त्री का रूप धारण कर हास्टल में प्रवेश किये, पुन कैसे
बेहोश किये पता नही ।

रजनी—क्या कुल इतनी ही लडकियाँ हैं ?

युवतियाँ—बहुत लडकियाँ थी । सब बेंच दी जाती हैं, दूसरे देशों
को बेची जाती हैं । इसी प्रकार प्राय लडकियाँ भगा कर लायी जाती हैं
और बेची जाती हैं । (रोकर) कल खरीदने वाले आने वाले हैं । सम्भव
है कि कल हम लोग भी बेंच दी जायँ । आज यह नयी लडकी अभी अभी
आयी है । (रजनी के पैर पकड कर) भाई ! हम लोगो का उद्धार करो ।
जल्द यहाँ से चले जाओ । शायद वे आ न जायँ ।

रजनी—तालो मे बन्द इन घरो में क्या है ?

एक युवती—यह शस्त्रागार है । इनमे बडो भयावनी भयावनी
डाकुओ की पोशाकें है । रजिस्टर्स है, उनमे क्रय-विक्रय का हिसाब लिखा
रहता है ।

रजनी—तुम लोग अलग-अलग अपना-अपना नाम बतलाओ, पूरा पता
लिखा दो । युवतियो ने अलग-अलग अपना नाम व पता नोट करा दिया ।

रजनी—घबराने की कोई बात नही । बहनो ! तुम लोग पढी लिखी
हो । धैर्य धरो । देखो मेरे आने का पता किमी को न देना । हाँ तो डाकू
कब आते हैं ? कब यहाँ विश्राम करते हैं ?

एक युवती—वे आधी रात के निकट आते हैं । तुरन्त भोजन करके
सो जाते हैं । खूब खर्राटा खींचते है । दो तीन बजे रात्रि में उनकी
गिरफ्तारी की जाय तो पूरी सफलता मिल सकती है ।

रजनी—देखो बहनो ! मैं भी साथ में रहूँगा । धीरे से सुरग वाले

पत्थर को हटा दूँगा, तुम लोगो को चुपके से खबर दूँगा, तुम लोग जागती रहना। धीरे-धीरे दरवाजे से निकल कर सुरग के मार्ग से वाहर निकल जाना। मकान के पीछे भाडियाँ हैं उन्ही में छिप जाना, डरना मत, वहाँ भी आदमी रहेंगे। हम लोग सुरग की राह मकान में घुसेंगे। एक एक डाकू पर चार चार सिपाही चढ वैठेंगे और प्रत्येक को वाँध लेंगे। हाँ यह वतलाओ कि कितने डाकू हैं।

एक युवती—कुल वारह डाकू हैं सव के सव वडे तगडे हैं। पूरे शस्त्र से तैयार रहते हैं। शस्त्र चलाने में वडे निपुण हैं।

रजनी—देखो आज ही रात में मैं ६० सिपाहियो को लेकर घावा करूँगा और इस मकान पर छापा मारूँगा। हम लोग जगल मे पहले ही से आकर छिपे रहेंगे। ईश्वर की कृपा होगी तो आज ही तुम लोग मुक्त हो जाओगी। पूर्ण विश्वास रखो। डाकू एक एक करके सव गिरफ्तार कर लिये जायँगे। अच्छा तो मैं जाता हूँ और पुन. कह कर जाता हूँ कि वडी सतर्कता से रहना, रहस्य खुलने न पावे।

रजनी चल देता है, कही नौका थी नही, घाट का पता था नहीं, ढूँढने का भी समय नहीं था। रजनी पूरा तैराक था, नदी मे कूद पडा। धारा तेज थी। वहते-वहते मीलो आगे वढ गया। उस पार विश्व-विद्यालय था। उधर के जंगल सव कट पिट गये थे। शीघ्र नदी से निकला। आतुरता-वश उसी भेष मे चासलर महोदय के यहाँ पहुँचा। अपहृत-लडकियो की सूची दिया। सारा समाचार सुनाया। दयानिधि की प्रसन्नता का वारापार नही था। गीले ही वस्त्र मे रजनी को गोदी में उठा लिया। पूरा-पूरा धन्य-वाद दिया। घर मे सूखे वस्त्र दिया।

दयानिधि—वेटा! तुम भारत के एक होनहार नव-युवक हो, देश के रत्न हो, भारत को इस समय तुम्हारे ऐसे नव-युवको की आवश्यकता है। तुम यूनिवर्सिटी का नाम व यश वढाओगे। अभी-अभी मैं पुलिस

कप्तान के यहाँ जा रहा हूँ। तब तक तुम कुछ खाओ पीओ, आराम करो, कही न जाना।

दयानिधि जी कार से एस० पी० के यहाँ पहुँचे। अपहृत बालिकाओ की सूची दिखलाया। सारा समाचार कहा। बस क्या था। एस० पी० ने ६० पुलिस सिपाहियों तथा दस थानेदारो को सशस्त्र तैयार किया। उन्हें हथियार व कारतूस दी गयी। गोलियाँ दी गयी। सबको एक निश्चित समय दिया गया। एस० पी० ने उन्हें शीघ्र तैयार होने का आदेश दिया। अन्य बातें अभी किसी से नही बतलाया। चासलर के कार से विश्व-विद्यालय पहुँचे। चासलर के बँगले पर कार खडी हुई। कमरे में रजनी को बुलाया उसे काफी धन्यवाद दिया। सारा समाचार रजनी से पूछा। उसके उत्साह पर उसकी भूरि-भूरि प्रशसा किया। रजनी ने सारा दाव घात बतलाया। हथकडियाँ, बेडियाँ, रस्सियाँ, बन्दूक तथा पेस्टल साथ ले चलने की सलाह दिया।

एस० पी०—बेटा! मैं सब कुछ तैयार कर चुका हूँ। मैं तुम्हारे इस कार्य से बहुत प्रसन्न हूँ। जिस बात का पता पुलिस न लगा सकी उस गुप्त और दुरूह रहस्य का पता तुमने इतनी जल्दी लगा लिया। मैं तो तुम्हारे सामने बहुत लज्जित हूँ। (रजनी और चासलर से हाथ मिलाकर) अब मैं अपने बँगले पर जा रहा हूँ।

चासलर की कार से एस० पी० अपने क्वार्टर पर पहुँचे। वहाँ सब लोग तैयार होकर पहुँच गये थे। अंधेरा हो चला था। सभी सिपाही तथा थानेदार एस० पी० को सलामी देकर सशस्त्र प्रस्थान किये। रजनी भी साथ हो लिया। एक बडी नौका पहले ही से तैयार थी। सब के सब एक ही साथ उस पार उतर गये। घटना-स्थल पर पहुँच गये। डाकुओं के घर के आस पास झाडियो में छिप गये। रात्रि के ११ बज चुके है सब लोग डाकुओ की प्रतीक्षा उस तरह कर रहे है जिस प्रकार पपीहा स्वाती-बूँद की करता है। डाकू प्रभूत-धन लेकर लौटे। सब मे अदम्य उत्साह भरा

हैं। अपार हर्ष है। घर का ताला खोले। एक एक करके प्रवेश किये। कुछ देर तक आवाज़ आती रही, पुन बिल्कुल शान्ति हो गयी। घडी ने दो बजाया। कुछ देर और ठहर कर रजनी उठा। सुरग के पास पहुँचा। साथ में कई दक्ष सिपाही और एक थानेदार भी था। पत्थर की शिला धीरे से हटायी गयी। रजनी अन्दर घुसा। युवतियो को आहट लगी। सब पहले ही से प्रतीक्षा कर रही थी। धीरे-धीरे सब युवतियाँ वाहर आयी। सबको रजनी ने झाडियो में गुप्त स्थान दिया। कुछ सिपाहियो को वहाँ नियुक्त किया। शेष सिपाहियो तथा थानेदारो से प्रार्थना किया कि आप लोग मेरे साथ इसी सुरग से अन्दर मकान में घुसें और चार-चार करके एक एक डाकू को कस कर पकड ले। रस्सी लगा दे। कुछ लोग पेस्टल लेकर तैयार रहें। यह कार्य वडी तत्परता से हो। वस क्या था, कहने की देर थी, पुलिस को अधिक वतलाने की आवश्यकता नही। सब लोग निर्भीकता से सुरग की राह मकान मे घुसे। डाकू दिन भर के थके माँदे थे ही, पूरा खर्राटा खीच रहे थे। एक एक पर चार पुलिस टूट पडी। नीद मे वे चौक पडे, वहुत उछले कूदे पर कर ही क्या सकते थे। सब कस कस कर बाँध दिये गये। मदर दरवाजे का ताला डाकुओ ने वाहर से कस कर वन्द कर दिया था। सव डाकू घसीट-घसीट कर वाहर लाये गये। रजिस्टर्स निकाले गये उनमें युवतियो के क्रय-विक्रय का लेखा जोखा देखा गया। उस पर उनके पूरे पते लिखे गये थे। लडकियो का भी पता था मूल्य भी लिखा था, नकद और उधार भी लिखा गया था। क्रय करने वालो का पता भी अकित था। उसी रात को समीपी एजेन्टो के घरो पर पुलिस ने छापा मारा। ये एजेन्ट वहुत दूर के थे नही। कुछ घरो से लड-कियाँ निकाली गयी पर जो विदेशो मे भेज दी गयी थी उनके लिये लिखा पढी की गयी। एजेन्ट गिरफ्तार किये गये। उनके घर के सारे सामान जप्त किये गये। व्यक्ति पकडे गये। घरो पर ताला लगा दिये गये। पुलिस का पहरा वैठा दिया गया। डाकुओं के सारे सामान सवेरा होते-होते पुलिस

ढो ले गयी। प्रात काल होते-होते सारा समाचार चारो ओर विजली की भाँति फैल गया। सारा नगर इस सनसनी पूर्ण घटना के रहस्योद्घाटन से आश्चर्य-चकित हो गया। नगर में सर्वत्र रजनी की प्रशसा थी। रजनी को एस० पी० ने गोदी में उठा लिया। वडा सम्मान किया। फोटो लिया। रजनी के इस कार्य की सूचना आई० जी० और पुलिस-मन्त्री को भी दी गयी। एस० पी० ने अपने पास से ४००) का पारितोषिक रजनी को दिया। दयानिधि जी ने भी अपने पास से ५००) का पारितोषक दिया। सरकार की ओर से रजनी को एक प्रशसा-पत्र तथा ५००) की थैली दी गयी।

विश्व-विद्यालय में सभी छात्रो, अध्यापको तथा प्राध्यापको की एक विशाल सभा वुलायी गयी। इस सभा में अन्य कर्मचारी भी सम्मिलित थे। दयानिधि जी ने इस विराट सभा मे रजनी के इस उत्साह-पूर्ण कार्य की सवके सामने प्रशसा की। कई अध्यापको तथा प्राध्यापको ने भी वडी सराहना की। इन लोगो में से वहुतो ने दस दस, वीस वीस रुपये के पारितोपिक भी दिये। कुल ५२०) पारितोषिक से प्राप्त हुए। विश्व-विद्यालय के महिला कालेज ने अपनी ओर से रजनी को वधाई का पत्र और १२००) का पारितोपिक दिया। अपहृत-वालिकाओ के अभिभावको ने रजनी को गले लगाया। आशीर्वाद दिया। छात्रावास के छात्रो ने अलग सभा की। फोटो लिया। अलग प्रशसा-पत्र दिया। कई दिनो के लिये यूनिवर्सिटी वद हुई। सव छात्र अपने-अपने घर चल दिये। रजनी भी घर आया। माता-पिता से सारी घटना सुनाया। माता-पिता ने इस अपूर्व-यश-प्राप्ति के लिये ईश्वर को धन्यवाद दिया। पिता-पुत्र दोनो एक साथ भोजन किये। साथ ही सोने गये। रजनी काफी थक गया था। खूव खर्राटे की नीद लिया। प्रात काल जगा। अशर्फी से मिला। प्रति दिन अशर्फी के साथ अपनी छुट्टी का समय व्यतीत करता था।

(६)

यूनिवर्सिटी खुली। रजनी ठीक समय पर पहुँच गया। अपने अध्ययन-

कार्य में सलग्न हुआ। एक दिन प्रात काल के ७ बजे थे। रजनी पढ रहा था। दोनो कपाट वद थे। वाहर किसी की आहट मालूम हुई। द्वार खोला, देखा तो पिता जी दो व्यक्तियो के साथ खडे है। रजनी दौडकर चरण-स्पर्श किया। पिता जी से नवागन्तुको का परिचय प्राप्त किया। उन्हे भी प्रणाम किया। सत्कार के साथ उन्हें विठाया। सवको दातून कराया। जलपान मँगाया। सव लोग जलपान किये।

रजनी के पिता अजय कुमार—वेटा! (एक सज्जन की ओर सकेत करके) आप जगदीश पुर के रईस वावू शीतलप्रसाद जी है, आप तुम्हारी शादी करना चाहते हैं।

रजनी—इन्ही के विपय में आपने मुझसे कहा था ?

अजय—हाँ वेटा! इन्ही का विशेष आग्रह है।

रजनी—पिता जी! मैंने तो अपने विचार आप के सामने व्यक्त कर दिया है। यदि मेरे विचारो से सहमत हो तो मुझे कोई आपत्ति नही।

अजय—आप पूर्ण सहमत है। आप की लडकी से कल साक्षात्कार हुआ था वह तो साक्षात् देवी है। लक्ष्मी है। सुशीला है। उसने वचन दिया है कि मैं चर्खे कातूँगी, गृह के सभी छोटे मोटे कार्य करूँगी, सास-ससुर की प्रत्येक आज्ञा का पालन करूँगी। वावू साहव ने कहा है कि मेरी सारी सम्पत्ति ववुआ की है। इन्हें पूरा अधिकार होगा, चाहे वह इसे भूदान-यज्ञ मे दान दें या स्वय उपभोग करें, मुझे कोई आपत्ति नही। मुझे और मेरी स्त्री को पेट भर भोजन और थोडे वस्त्र से मतलव है।

रजनी—पिताजी! आप कोई शुभ-मुहूर्त ठीक कर लें। मैं आप की आज्ञा-पालन करने को सहर्ष तैयार हूँ।

अजय और शीतलप्रसाद साथ में आये हुए पडित जी से विवाह का शुभ-दिवस, शुभ-घडी ठीक कराते है। तीसरे दिन विवाह निश्चित किया। तीनो व्यक्ति प्रस्थान किये।

पढाई का घटा वजा। रजनी क्लास गया। दिन भर अध्ययन किया।

वजे सायकाल एक सप्ताह का अवकाश स्वीकृत कराया। अपने मित्रो मे मुख्य-मुख्य व्यक्तियो को आमन्त्रित किया। घर चल दिया। मार्ग में अशर्फी से मिला। उसे प्रेमपूर्वक वारात में सम्मिलित होने के लिये आमन्त्रित किया। अशर्फी को खुशखवरी सुनाया। उसे रेलवे में असिस्टेन्ट स्टेशन मास्टरी मिली थी। उसकी नियुक्ति काशीपुर ई० आई० आर० के स्टेशन पर हुई थी जो कि विक्रमपुर से ४ स्टेशन आगे पूर्व की ओर था। रजनी ही के उद्योग से यह स्थान मिला था। उसकी माता तथा स्त्री से मिला। उन्हें भी निमन्त्रण दिया। अशर्फी की नियुक्ति की खुशखवरी उन्हें सुनाया। दोनो ने रजनी को भूरि-भूरि धन्यवाद दिया।

रजनी अपने घर पहुँचा, अशर्फी भी साथ-साथ था। रजनी ने माँ-वाप के चरणो को स्पर्श कर प्रणाम किया। माता वडी प्रसन्न है, उसे पतोहू आने वाली है। उमके पैर भूमि पर नही पडते थे, विवाह की तैयारी में लगी है, अतिथि धीरे-धीरे आ रहे है। सवका दौड-दौड कर स्वागत कर रही है। आज तो उमने सारा ससार अकेले उठा लिया है। लक्ष्मण जी तो मारे क्रोध में ब्रह्माण्ड उठाने को कहते ही भर थे पर उठाया नही इसने तो खुशी के जोश मे उठा लिया है। आज इसके सामने विश्व में कोई है नही, आज इसे थकान है नही। वह वरावर चलती ही रहती है। आज उमे दो पैर नही हैं चार पैर हो गये है।

वारात साधारण ढग से २ वजे निकली। घर से ६ मील की दूरी पर जगदीश पुर था। रजनी आज दूल्हा वना हुआ था। इमके हृदय में विवाह मे उतनी प्रसन्नता नही है जितनी प्रसन्नता इसे माता के प्रसन्न-हृदय को देखकर है।

वारात ठीक समय से पहुँच गयी। शीतलप्रसाद ने अपने वैठके में वारात को ठहराया। वारातियो का यथोचित आदर किया। वारात में वाह्याडम्वर का नाम नही था। रडी, भाँड, आतिशवाजी और सामियाना आदि कुछ नही था। पूर्ण शाति थी। शाति-पूर्वक विवाह-कार्य सम्पन्न

हुआ। कोई हो हल्ला नही था। घराती वराती दोनो प्रसन्न थे। दोनो को दान दिया गया। यथोचित नेग दिये गये। वधू का नाम मनोरमा था। वधू विदा हुई। वाराती भी साथ-साथ विदा हुए। वारात ठीक १२ वजे दिन में विक्रमपुर पहुँची। कुटुम्बियो, सम्बन्धियो तथा मित्रो को प्रीति-भोज दिया गया। दूसरे दिन सभी आगन्तुक अपने-अपने घरो को प्रस्थान किये।

मनोरमा को देखने के लिये ग्राम-वधुओ का ताँता लगा हुआ था। मनोरमा को पाकर शैलकुमारी वहुत प्रसन्न हुई। उसमें नव-जीवन आ गया था। उसे अव अपनी कोई इतनी चिन्ता नही है जितनी कि मनोरमा की। वह रात-दिन पतोहू की सुश्रुषा में लगी रहती है। मनोरमा दो तीन दिनो तक घूँघट काढ कर दुलहिन वनी रही। इसके वाद उसने गृहस्थी का सारा चार्ज अपनी सास से ले लिया। सास को हर काम से पेंशन दे दिया। रजनी और मनोरमा से साक्षात्कार हुआ। उसने मनोरमा को समझाया कि तुम्हारा सर्व-प्रथम कर्तव्य माँ वाप की सेवा करना पुन देश-सेवा करना।

मनोरमा—मैं आपके वतलाये हुए सभी आदेशो पर अक्षरश चलूँगी। मैं भी समझती हूँ कि इस समय देश कैसी-कैसी कठिनाई के वातावरण मे साँस ले रहा है, देश में कैसी भुखमरी छायी हुई है, हमारा देश किसी समय कितना सुखी था, सोने की चिडिया था, आज दिन कितना पिछडा है, इसको आगे वढाने के लिये मेरा क्या कर्तव्य होता है। इन सारे आभूषणो को ले लीजिये, मेरे लिये रुई, धुनकी और चर्खे का प्रवन्ध कर दीजिये, मै अवकाश के समय चर्खा काता करूँगी।

रजनी—देखो मेरा परम-मित्र अशर्फीलाल है। उसकी स्त्री मुझे वहुत मानती है। वह सदैव तुम्हारे यहाँ आया करेगी, उनका काफी सत्कार करना, उनका किसी प्रकार अपमान न करना। वह वडी दक्षा है तुम्हे सदैव अच्छे-अच्छे विचार दिया करेगी, वह भी मेरे उपदेशानुसार चर्खा कातती है। खादी पहनती है। वह भी एक धनी और प्रतिष्ठित कुटुम्ब की लडकी है। वह साधारण ढग मे रहा करती है। देश के प्रति उसे वडी

श्रद्धा रहती है मेरे कर्तव्यो पर मुझे जितना भी पारितोषिक मिलता है मै उसे देश-सेवा में लगाता हूँ।

मनोरमा—डाकुओ के पकडने में तो आप को काफी इनाम मिला वे सब रुपये आप क्या किये ?

रजनी—उन सव रुपयो को चर्खा में लगाऊँगा। दीन लडकियो, स्त्रियो, विधवाओ और कत्तनियो की प्रतियोगिता कराऊँगा और प्रदर्शिनी कराऊँगा। सबको यथोचित पारितोषिक वितरण करूँगा। ट्रेन-दुर्घटना से वचाने में जो पारितोषिक के रुपये मिले थे उन्हें ग्रामोद्योग-सघ में दे दिया। कक्षा में छात्र-वृत्ति जो मिलती है उससे दीन साथियो की सहायता करता हूँ। ईश्वर ने मुझे किसी वात की कमी तो दी नही है। माता-पिता ने काफी कमा दिया है, तीन तल्ला का मकान वनवा दिया है। मकान भी नही वनवाना है। मुझे अपनी फिक्र न कर उन वेचारो की फिक्र करनी चाहिये जो कि आज दिन दाने-दाने को तरस रहे है। जिनके पास आज एक दाना, एक कौडी भी नही है, रहने को एक झोपडी भी नही है, वदन पर एक वालिश्त वस्त्र भी नही है, यदि उन्हें चर्खा दे दिया जाय, रूई दे दी जाय तो उनके आँसू कुछ पुँछ जायेंगे। समय हो गया, यूनिवर्सिटी जा रहा हूँ।

माता-पिता को प्रणाम किया। यूनिवर्सिटी का मार्ग लिया। अशर्फी के गृह पहुँचा। आज अशर्फी की विदाई हो रही है। वह नई नौकरी पर जा रहा है। रजनी वहाँ पहुँचा उसे साथ लिया। रजनी उसे समझाया कि देखो अपने कर्तव्य का, ईमानदारी तथा सच्ची लगन से निर्वाह करना। अधिकारियो की आज्ञा का पालन विना किसी चूँ चरा के करना। मातहतो का ध्यान रखना, प्रतिष्ठा करना। रेलवे की नौकरी है। हाथ लपाकी न करना। वडा खतरा है। सरकार भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिये वडी सतर्क है। सादगी से रहना। अपनी वृद्धा माँ का ध्यान रखना। भाभी जी का भी आदर करना। इन्हें किसी प्रकार का कष्ट न देना। अपनी कमायी मे से दीन-दुखियो की यथाशक्ति सहायता करना। अव तुम सरकारी नौकर

हो अत सरकार के विरुद्ध कोई आवाज न उठाना। सरकार के प्रतिकूल कोई कार्य न करना। देश और सरकार का सदैव ध्यान रखना। दीनो के सताने का कोई काम न करना। घूस के धन को हराम की कमायी समझना। वस यही अंतिम शिक्षा है, मित्र के नाते कहता हूँ, कोई दूसरा अर्थ न लगाना।

अशर्फी सारी शिक्षाएँ सुन रहा था, हुँकारी भी भर रहा था, पर ये सारे उपदेश उसके गले से नीम के काढे के समान उतर रहे थे। ऊपरी मन से हाथ मिलाया और कहा कि अब मैं यही से दूसरा मार्ग पकड़ूँगा। दोनो जयहिन्द कह कर अपना-अपना मार्ग लिये।

रजनी—अच्छा जाओ। हर रविवार को घर आते रहना। मैं भी आता रहूँगा।

रजनी यूनिवर्सिटी पहुँचा। मित्र-मडली मिली। कोई शादी का मुबारकवाद दिया, कोई निमन्त्रण न देने का उलाहना दिया। सब लोगो ने रजनी से मिठाई-पान माँगा। रजनी ने सायकाल दावत मे सम्मिलित होने के लिये सब साथियो को आमन्त्रित किया। साथियो के साथ क्लास गया। सायकाल ४ बजे छात्रालय पहुँचा। मिठाई-पान मँगाया गया। सब ने जलपान किया। बधाई दी। पार्टी बडे आनन्द के साथ समाप्त हुई। कुछ विनोदी-मसखरे-साथियो ने हास्य-रस का पुट देकर बधाई का काव्य भी सुनाया। हँसी मजाक का भी बीच-बीच मे पीरियड चल रहा था। पूरा छात्रावास कहकहे की दीवार बन गया था। पार्टी के अन्त मे सब लोग अपने-अपने रूम में चले गये थे। शौचादिक क्रिया से छुट्टी पाकर सब लोग भोजन किये। कुछ देर तक अध्ययन किये, पुन सोये।

यूनिवर्सिटी की पढाई थी। प्राइमरी और जूनियर हाई स्कूल की पढाई तो थी नही कि रात दिन पिसाई हो, यहाँ तो नित्य नये-नये रग सामने आते रहते है, आज किसी डाक्टर का भाषण तो कल किसी नेता मन्त्री का आगमन। यहाँ छात्रो को स्वय परिश्रम करना पडता है। यहाँ

के छात्रो को स्वय अपने हानि-लाभ का सदैव ध्यान रहता है। यहाँ के छात्र कोई अबोध वच्चे तो है नही।

रजनी अवकाश के दिनो में प्राय अपने माँ-वाप से मिलने घर चला जाया करता था। उसके न आने से उसके माता-पिता चिंतित हो जाया करते थे। वह अपने माँ-वाप का इकलौता था भी तो, जव घर आता तो मनोरमा के लिये कोई यन्त्र हस्त-कला के लिये ले जाया करता था। मनोरमा अव चर्खा भली-भाँति से चला लेती थी। उसके सूत वडे वारीक निकलते थे। चर्खे के सूत की प्रतियोगिता में मनोरमा का सूत सवसे वाजी मार ले जाया करता था।

रजनी जव कभी देश-सेवा में जाता तो मनोरमा को भी साथ ले लेता। मनोरमा भी इस कार्य में वहुत अग्रसर होती जा रही है। मनोरमा अव मिल से आँटा पिसवाना छोड देती है वह घर में जाँता चलाकर सारे परिवार के लिये आँटा तैयार करती थी। वह घर-घर घूमकर चर्खे चलाना और स्वय आटा पीसना, इन दोनो कार्यो के लिये लोगो को प्रोत्साहन दिया करती थी। वह डेढ हाथ का लम्वा घूँघट निकालने वाली स्त्री नहीं थी। गाँव की छोटी वडी लडकियो, सयानी वहू-पतोहू को वुलाकर कसीदा निकालना, पत्ती वनाना, गुलूवन्द, स्वीटर, गजी, मोजा, तकिया का लिहाफ, मेजपोश, डलिया, तस्तरी वनाना सिखाती है। कमीज, कुर्ता, कोट, व्लाउज, जमफर, टोपी, पायजामा, फराक, साया सीना सिखाती है। कुटीर व्यवसाय की ओर उसकी अभिरुचि उत्तरोत्तर वढती जा रही है। खादी का प्रचार तो उसका महान् लक्ष्य था। इन कार्यो मे वह अपने पास से आर्थिक सहायता भी दिया करती। स्त्रियो के रचनात्मक कार्य की वह प्रति माम मे एक प्रदर्शिनी भी लगाया करती। उत्साह वढाने के लिये अच्छे-अच्छे पारितोपिक भी देती थी।

सारा ग्राम मनोरमा के प्रभाव से प्रभावित था। ग्राम मे उसने एक नवजीवन ला दिया। जैसा उत्साही रजनी था, वैसे ही ऊँचे हौसिले की

उर्मिला—घर पर भी तो भोजन पका होगा, भला तुम्हारी अम्मा विना खिलाये रह सकती है ? जाओ वह वेचैन होगी।

रजनी—हाँ चाची ! ठीक कहती हो पर पोता के सामने वेटा को कौन पूछता है ?

उर्मिला—वेटा ! ठीक कहते हो। प्रेम दोनो पर रहता है, पोते पर प्रेम, पुत्र से अधिक हो जाता है। वेटा ! माताएँ जानती है कि पुत्र सयाना हो गया, अपने पैरो चलने योग्य हो गया, होशियार हो गया। वेटा ! कोई दूसरी वात नही है। मै भी तो किसी की माता हूँ। वडी प्रसन्नता की वात है कि दोनो मित्रो को पुत्र पैदा हुआ। वह भी दो दिनो के अन्तर से। अच्छा वेटा ! जाओ, सोओ।

रजनी घर चल देता है। खाट पडी थी। विस्तर विछाया सो गया। ऐसा ही हुआ, माता ने रजनी को नही पूछा। यह है खुशी। खुशी जव चरम-सीमा को पहुँच जाती है तो लोग अपने निकटस्थ सगे-सम्वन्धी को भूल जाते है। अपार प्रसन्नता होश का दीवाला वोल देती है।

प्रात काल रजनी उठा। माता पहुँची। वेटा ! तुमने भोजन किया कि नही ?

रजनी—हाँ अम्मा ! कौन भोजन पूछा कि मैने भोजन किया ? तू ही तो पूछने वाली थी। तू प्रसन्नता मे वेसुध थी, वेहोश थी, पागल थी, मै विना खाये ही रह गया। पानी तक तो तूने नही पूछा। पानी तक तो तूने पूछा ही नही, भोजन पूछना तो दूर रहा।

माता—(सिर ठोक कर) रजनी के सिर पर हाथ रख कर, एक हाथ से उसका पेट सहलाते हुए, जल जाय मेरा होश, आग लगे मेरे होश मे। मेरा वेटा ! मेरा लाल ! विना खाये ही रह गया क्या करें, वेटा ! कल वडी भीड थी। जरा भी फुर्सत नही थी। चलो कुछ खा लो, भूख लगी होगी।

रजनी—तूने खाया कि नही ? वता अम्मा ! ठीक-ठीक कह।

६

माता—मैं नही खायी तो इससे क्या। मुझे तो भूख ही नही है, न जाने क्या हो गया है।

रजनी—(हँसते हुए) कितने दिनो से ?

माता—(हँसकर) कल से।

रजनी—तुझे इतनी खुशी हुई है कि तुम्हारी सारी भूख खुशी में विलीन हो गयी।

माता—वेटा। ईश्वर ने शुभ दिन दिखलाया। अब कब खुशी होगी भगवान वच्चे का भला करे। वडा ही हृष्ट-पुष्ट सुन्दर वच्चा पैदा हुआ है। देखेगा ? चल दिखला दें।

रजनी—अभी तू ही देख। अभी तेरे ही देखने योग्य है। तुझे अच्छा है तो मुझे भी अच्छा है तू प्रसन्न है तो मैं भी प्रसन्न हूँ। हाँ इतना अन्तर अवश्य है कि तूने दो दिन से मारे खुशी के भोजन करना छोड दिया है, मैं तो प्रतिदिन भोजन करता हूँ।

माता—हाँ, कल कहाँ भोजन पाया ?

रजनी—अशर्फी के घर। उसे वधाई दे आया। भोजन कर आया। खूब ठाट से खाया। वडा अच्छा भोजन था।

माता—(पुन पेट छूकर) अच्छा इमी से पेट खाली नही मिला।

रजनी—पहले तो तुझे नही मालूम हुआ। मेरे वतलाने पर न, कह रही है।

माता हँसने लगती है। घर से हलुआ, पूडी, तरकारी और दूव लाकर खिलाती है। भोजन कर रजनी चला जाता है। अशर्फी के गृह पहुँचा। अशर्फी आया है। उसे वधाई देता है। अशर्फी तुरन्त उसकी वधाई वापिस करता है। दोनो मे वधाई का वाजार खूब सस्ता चला। दोनो टहलने निकल जाते है। दोपहर को भोजन के समय लौटते हैं। अशर्फी भी साथ था। दोनो एक साथ भोजन करते है। पुन दोनो की मुहफिल

रजनी के गृह लगती है। रजनी की माता भी आ जाती है। हाल-चाल पूछती है और कहती है कि बेटा अशर्फी! नौकरी अच्छी है न!

अशर्फी—हाँ चाची! नौकरी तो बडे मौज की है। घर पर आया हूँ। चित्त नही लगता। रजनी आ गया नही तो कभी लौट गया होता। वहाँ तो सदैव वसन्त रहता है। सदैव चहल-पहल रहती है। बाबूजी की प्रिय-ध्वनि सदा कानो मे आती रहती है। सब लोग सदा मुँह जोहा करते है, कोई पान लेकर खडा रहता है, कोई मिठाई लेकर। सब लोग मुँह मे जीभ डाले रहते हैं। वहाँ किसी बात का दु.ख नही रहता। हर घडी चार पैसे जेब मे रहते है। दरिद्रता कोसो दूर रहती है। रेलवे की नौकरी का मजा तो कलेक्टरी मे नही है। भाई रजनी को धन्यवाद है कि इन्होने मेरे योग्य नौकरी ढूँढ निकाला। अच्छा चाची! कहो पौत्र कैसा पैदा हुआ है? हट्ट-कट्टा है न? सुन्दर तो होगा ही? बाप ही सुन्दर है, भाभी की सुन्दरता का पूछना ही नही तो भला बच्चा क्यो नहीं सुन्दर होगा?

शैलकुमारी—हाँ बेटा! पौत्र जैसा चाहिये वैसा ही भगवान ने दिया। भगवान उसे जिला दे। स्वस्थ-सुखी रखे। आँचल पसार कर यही ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ। बेटा! तुम्हारा भी पुत्र बडा ही सुन्दर और स्वस्थ है।

अशर्फी—सब भगवान की कृपा है।

शैलकुमारी—जलपान लाकर दोनो के सामने रख देती है। दोनो एक साथ जलपान करते है। खा पीकर दोनो बाहर निकलते है। फिर घूमने निकल जाते हैं।

रजनी मार्ग मे घूमने जा रहा था कि उसे पता चला कि रम्मन अपनी छोटी पुत्री का विवाह भवानीपुर के एक बूढे के साथ कर रहे है। पति की आयु ६० वर्ष से ऊपर है और कन्या ८ वर्ष से अधिक नहीं है। रजनी ने अशर्फी से कहा कि चलो इस अनर्थ को रोका जाय।

अशर्फी—मैं तो व्यर्थ की शत्रुता मोल लेने नही जाऊँगा । तुम खाली हो, जाओ । तुम्हे अपने व्यक्तित्व का तो ध्यान है नहीं ! स्त्री एक रईस पुत्री है, उसे भी अपना ही पाठ पढा रहे हो । तुम्हे यह सब अच्छा लगता है । लात, जूता, डडा खाने में तो तुम्हें लज्जा है नही । भाड में जाय ऐसी नेतागिरी, ऐसी समाज-सेवा, ऐसा समाज-सुधार, ऐसा देश-सुधार । मै नही जाऊँगा । मुझे जो कार्य मिला है उसे ही करूँगा । ससार में जन्म लिया हूँ चार पैसे कमाने के लिये । मानव-जीवन वडी कठिनाई से मिलता है । मानव-जीवन मिला है ऐश व आराम के लिये न कि तेली के वैल की तरह दिन रात पिसे रहने के लिये । रजनी ! तुम मेरे पक्के मित्र हो तुम्हें वारवार उपदेश दूँगा कि व्यर्थ के काम छोड दो । देखो ऐसे कामो के उठाने से ही गाधी नाथूराम गोडसे द्वारा उनकी गोलियो के शिकार वने कैसा तडफडा-तडफडा कर मरे । चश्मा अलग, खडाऊँ अलग, उनके भजन की पुस्तकें अलग । वकरे, भेंडे से भी वुरी मौत पाये, नही-तो शायद अव तक जीवित रहते ।

रजनी—ठीक है मित्र ! पर तुम्हारी ही सी केन्द्रित-वुद्धि रखने वाले व्यक्ति ऐसा सकीर्ण-विचार, अपने एक विशाल-महत्वाकाक्षी नेता के जीवन का छोटा पैमाना रखते हैं । तुम्हारा यह मापक सच्चे-जीवन का सच्चा मापक नही कहा जा सकता । तुम्हारा यह तौलने का सही वाट नही है । झूठा है झूठा । जीवन वह है जो परोपकार, देशोद्धार, समाजोद्धार में काम आवे । जानते हो आज लोग नाथूराम को गालियाँ देते है । उसके नाम पर थूकते है । उसका नाम नापाक भूमि पर लिखकर पैरो से कुचलते हैं, और गाधीजी के नामो का प्रात साय जप करते हैं । उनके पवित्र-स्मारक पर श्रद्धाञ्जलि व पुष्पाञ्जलि चढाते हैं । सिर झुकाते है । ससार की कौन ऐसी नदी है, कौन ऐसा सागर व महासागर है जिनमें उनकी राख न वहायी गयी हो । देश के वडे-वडे लोगो ने उनके शव-भस्म को सिर से

लगाया। घरो में ले जाकर स्मारक वनाया। कौन ऐसा देश है जहाँ पूज्य वापूजी का स्मारक नही वना।

अशर्फी—जाओ तुम गाधी वनो। मैं तो दुनिया के लम्पटो में अपना विशाल-मूल्यवान जीवन नही गँवाऊँगा। तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारी स्त्री को भी पागल-पन सवार हो गया है। वनो पागल। भला अभी कल की आयी हुई मनोरमा मेरे यहाँ चर्खा-प्रचार, हस्तकला-प्रचार एव अन्य रचनात्मक कार्यों के लिये पहुँच जाया करती है। लोग हँसते हैं, उसकी टीका-टिप्पणी करते हैं, मुझे तो वडी लज्जा आती है। सिर नीचे झुक जाता है। मुझे तो उस समय मनोरमा वडी ही घृणित दिखाई देती है। वडे घर की वहू-वेटी होते हुए चमरौटी-चमरौटी घूमना, मुझे वहुत खलता है। वह कितनी सुन्दर है। लोग इसे देखकर उसके चरित्र पर विना शङ्का किये हुए चुप रहते होंगे? शोक! मेरे घर भी वह मेरी स्त्री के साथ आती जाती है। मुझे डर है कि कही मेरी स्त्री को भी यह छूत की वीमारी न लग जाय।

रजनी—इससे क्या? लोग उसके चरित्र पर शङ्का करें मैं तो नही करता, वह तो मेरे ऐसे साधारण-व्यक्ति की स्त्री है। चरित्र पर तो शङ्का भगवान राम की सच्चरित्र-स्त्री सीता पर एक धोवी ने की थी पर क्या रमणी सीता के पावन-चरित्र पर तनिक आँच आयी? उसके गुण-गान में एक विशाल-महाकाव्य रामचरित-मानस सस्कृत व हिन्दी में रचा गया। छोटी वडी कितनी रामायण वनी। कहाँ तक गिनाऊँ।

अशर्फी—इसी से तो भगवान राम ने सीता को घर से निकाल दिया। सीता गर्भिणी थी पर फिर भी धोवी द्वारा कलङ्क लगाये जाने पर तत्काल उसका गृह से निष्कासन किया। सीता चिल्लाती रही पर एक भी नही सुना।

रजनी—राम ने वहाँ समाज का ध्यान रखा। समाज को ठुकराना उचित नही समझा। राम उस समय राजा थे। राम राजा थे अत वह छोटी सी छोटी जाति की प्रजा की आवाज को ठुकराना पसन्द नही किये।

उसकी आलोचना को राम ने समझा। राम मर्यादा-पुरुषोत्तम थे अत मर्यादा रूपी राजा-प्रजा के बीच की शृङ्खला को तोडना आदर्शवादी राम ने उचित नही समझा। यदि पुनीता-सीता आचार-भ्रष्टा होती तो महर्षि वाल्मीकि उसे अपनी पवित्र-कुटिया में कभी भी शरण नही देते। उसी सीता से महापराक्रमी तेजस्वी लव-कुश पुत्र पैदा हुए जिन्होंने राम के सब भाइयो तथा अभिमानी सेनाओ के मान का मर्दन किया। क्यों ? 'आत्मैव जायते पुत्र' पुत्र बाप का प्रतीक होता है। इन्ही पुत्रो के यश-गौरव में 'लवकुश' काण्ड बनाया गया। भक्त-कुल-शिरोमणि मीरा के विशुद्ध-चरित्र पर क्या महाराणा और उस समय के समाज ने कम कलङ्क लगाया, पर आज की दुनिया से कोई पूछे कि मीरा कैसी थी। आज दिन मीरा का यशोगान किस भक्त की जिह्वा पर नही है ?

अशर्फी—रखो, अपनी यह ज्ञान की गठरी। अच्छा तो अब मैं अपने काम पर जा रहा हूँ।

रजनी—तो यह क्यों नही कहे कि देर हो रही है। क्यो व्यर्थ माथा पच्ची कराये। जय हिन्द।

अशर्फी—जय हिन्द। (चल देता है)

रजनी रम्मन के घर पहुँच जाता है। रम्मन तथा उनकी स्त्री को प्रणाम करता है। दोनो बडे प्रेम से बिठलाते है। कुशल-प्रश्न पूछते हैं।

रजनी—(चाचा और चाची को सम्बोधित करके) आज मैं एक बडा कार्य लेकर आया हूँ।

रम्मन—कहो बेटा ! कौन सा कार्य है ? मेरे कुल में तुम बडे सपूत पैदा हुए हो। तुम्हारा जो भी कार्य होगा हम दोनो सब से पहले करेंगे।

रजनी—कहने में तो सकोच होता है कि कही बात असत्य न हो। (चिन्ता-मग्न होकर) बेटा ! बेधडक कहो। तुम अपने घर के हो। अपने पुत्र के समान हो। तुम निस्सकोच कह सकते हो।

रजनी—सुनने में आया है कि आप लोग बहन लल्ली की शादी एक

वहुत वूढे से करने जा रहे हैं। भला ग्राप लोगो को किस वस्तु की कमी है ? भला वतलाग्रो चाची ! यदि ग्राप ८ वर्ष की रही होती ग्रौर चाचा की ग्रायु ६० सत्तर वर्ष को कौन कहे पचास वर्ष की रही होती तो सयानी होने पर ग्रपने माता-पिता को कोसती कि नही ? उन्हें गालियाँ देती कि नही ?

रम्मन की स्त्री—इसमे क्या शक ! ग्रसत्य नही कहूँगा। ग्रवश्य उन्हें कोसती, गालियाँ भी देती।

रजनी—इसी प्रकार वहन लल्ली ग्रभी वच्ची है। होश सँभालेगी। सयानी होगी। पन्द्रह-सोलह वर्ष की होगी तो वूढे वर की ग्रायु लगभग सत्तर वर्ष की होगी तो उस समय चाचा को तथा ग्राप को वह कितना कोसेगी ? मै कुछ देर के लिये यह भी मानता हूँ कि वह ग्राप लोगो को कुछ न कहे तो भगवान क्या कहेगा। क्या ग्राप दोनो ने ग्रपने कर्तव्य का पालन किया। क्या माता-पिता का यही कर्तव्य है कि किसी क्षणिक लालच के लिये ग्रपनी प्राण-प्रिया-पुत्री को ग्रथाह-सागर मे डुवो दें। उसके सुख-मय-भविष्य की हत्या ग्रपने ग्रल्प कालिक-तृष्णा की पैनी कटार से कर दें ?

रम्मन की स्त्री—वेटा ! मुझे किसी प्रकार की तृष्णा नहीं है। भवानी-पुर मे जिसकी शादी करने जा रही हूँ वह वडे धनाढ्य हैं उनका नाम हरिशकर है खेती भी ग्रच्छी है। सरकार मे उनका सम्मान भी है। मेरा वेटा पढ लिखकर वेकार पडा है उसे कोई नौकरी नही मिली। हरिशकर ने उसे नौकरी दिलाने का पूर्ण-वचन दिया है। उनके कोई पुत्र नही है। उनकी स्त्री जीवित है उसने उन्हें दूसरी शादी करने की स्वीकृति दी है।

रजनी—नौकरी करने योग्य हो जायगा तो नौकरी मिल जायगी। पच-वर्षीय-योजना में इतने काम वढ जायँगे कि कोई वेकार नही रहेगा। हमारी सरकार स्वय इस वात की चिन्ता मे है कि देश की वेकारी दूर की जाय। उनकी ग्रायु क्या है ?

रम्मन की स्त्री—मेरे पुत्र की ग्रायु १३ वर्ष की है।

रजनी—ग्रभी तो वह नौकरी करने योग्य भी नही है, तुम्हें धोखा

दिया जा रहा है। उससे आगे पढाओ। वह बडा तेज लडका है मैं उसे जानता हूँ। चाची ! सुन मैं जानता हूँ कि तुम दीन नही हो। तुम भलो-भाँति उसे आगे पढा सकती हो। उसे आगे पढाओ वह भविष्य मे स्वयं अपने से नौकरी पा जायगा। किसी की सिफारिश की आवश्यकता ही नही होगी।

रम्मन की स्त्री—बेटा ! वह आठवाँ क्लास प्रथम श्रेणी में पास किया है।

रजनी—चाचो ! इसी जुलाई मे मेरे पास भेज देना मै उसका नाम नाइथ क्लास मे लिखवा दूँगा। फीस भी मुआफ करा दूँगा। लल्ली जब सयानी होगी तो मैं उसकी शादी किसी अच्छे घर करा दूँगा। उसको भी चाची ! तुम आगे पढाओ।

रम्मन की स्त्री—अच्छा वेटा ! दोनो को आगे पढाऊँगी।

रजनी—चाची ! गाँव ही में जू० हाई स्कूल खुला है। गाँव ही के सब अध्यापक है। लल्ली अच्छी तरह से बारह-तेरह वर्ष मे कक्षा ८ उत्तीर्ण हो जायगी।

रम्मन की स्त्री—अच्छा बेटा ! तुम्हारा इतना ध्यान है तो मैं अभी शादी नही करूँगी। (अपने पति से) आप भवानीपुर के हरिशकर को पत्र लिख दे कि आप के यहाँ शादी नही होगी। कोरा इनकार कर दें।

रम्मन—अभी पूछना है। रजनी एक पढा लिखा सुशील लडका है। कितनी अच्छी-अच्छी बातें बतलाया। हम लोगो का अंधकार दूर हो गया। तुम शादी करना भी चाहती तो मैं उस बूढे के यहाँ शादी नही करता। लडका और लडकी दोनो पढाये जायेंगे। चाहे नौ पडे या छ ।

रजनी—चाची ! मै तुम्हें एक चर्खा अपने दाम से दूँगा। तुम मेरे घर से माँग लेना। उससे सूत कातना। लल्ली को भी सिखलाना। समझी। उससे तुम्हारे छोटे परिवार भर के लिये वस्त्र मिल जायगा।

रम्मन की स्त्री—बेटा ! मै खूब समझ गयी। अब मैं भूल न करूँगी।

रजनी—अच्छा चाची ! प्रणाम ! चाचा ! प्रणाम। जा रहा हूँ।

परीक्षा निकट है। घर भोजन करूँगा। सामान लूँगा। यूनिवर्सिटी चला जाऊँगा।

दोनों—जाओ बेटा! ईश्वर तुम्हें अच्छी तरह पास करा दे।

रजनी घर आया। भोजन किया। सामान लिया। यूनिवर्सिटी पहुँचा। क्लास मे गया। वहाँ अध्ययन किया। प्रतिदिन उसे एक ग्वाला दूध लाता था। वह बडा ही सीधा था। इधर कई दिनो से दूध नही लाता था। उसका घर यूनिवर्सिटी के पास में था। वह अपने मित्र विजयकुमार को लिया और दूधवाले के घर पहुँचा। वहाँ जाकर देखा कि उस ग्वाले की स्त्री को एक बाबू साहब बुरी तरह से गालियाँ दे रहे है, उसे मार-पीट रहे हैं। बाबू साहब धनी मानी व्यक्ति हैं। उनसे १०) ऋण ग्वाले ने लिया था। ऋण न चुकाने पर उसकी १५०) की गाय छीन कर ले जा रहे है। ग्वाले की स्त्री बल-पूर्वक गाय को पकडे हुई है। उसके वस्त्र फट गये है। वह रोती है। बार-बार हाथ जोडकर प्रार्थना करती है कि मेरा मर्द आवेगा तो आप का ऋण चुका देगा। आप गाय न ले जायँ। वह निर्दयी था। ओस से लथ पथ ढेलो मे उसे घसीटता था। सब लोग खडे-खडे तमाशा देखते है। डर के कारण कोई उसके पास नही फटकता था, न कुछ बोलता था।

रजनी—बाबू साहब! आप यह कैसा अत्याचार एक बूढी दीन अबला के साथ कर रहे है। उसका पति घर है नहीं। आप इसे निर्दयता के साथ घसीट रहे है। उसके वस्त्र एक तो यो ही फटे पुराने है दूसरे ढेलो तथा ओस में घसीटने से और फट गये क्या यही मानवता कही जायगी? आप घर पर उपस्थित न रहें आप की स्त्री को कोई इस प्रकार से मारे पीटे, घसीटे और गालियाँ दे तो क्या आपको पसन्द आयेगा? अच्छा लगेगा?

विजयकुमार—आप को रुपये लेने थे, आप उसके पति से लेते। अबला से माँगना और उसकी ऐसी दुर्गति करना सर्वथा अन्याय है। गाली देना मारना-पीटना और उसकी गाय छीनकर ले जाना सरासर अन्याय

है, अत्याचार है। इसी अत्याचार के कारण हम लोगो की सदियो की शान जो जमीदारी थी वह छीन ली गयी। अभी आप अंग्रेजो की सरकार का स्वप्न देख रहे है। वावू जी! अब अपना राज्य है। वुढिया आप की माता तुल्य है। आप को और वुढिया को एक ही जगह रहना है। क्यो ऐसी निष्ठुरता करते हैं।

रजनी—क्यो जी वुढिया! वावू साहव के कितने रुपये ऋण हैं।

वुढ़िया—वावू हम का जानी कि कितना रुपैया इनका है। हमार मरद जाने। वह वाहर गयल है। घर पर वच्चन के लिये कुछ नाही रहल है उसी इन्तिजाम में कही गयल है। अइहैं त वावू साहव क रुपैया चुकइहै पर यह मानत नाही है मारने पर तुलल है। नाहक गाली फजी-हत करत है।

रजनी और विजय—(वावू साहव से) आप हम लोगो के साथ यूनिवर्सिटी चलें। हिसाव कर डालें। हम लोग सव रुपये आप का चुकता कर देंगे।

वावू साहव वहुत लज्जित हुए। अपने कर्तव्य पर पश्चाताप करने लगे। रजनी और विजय मे क्षमा माँगते है कि भविष्य मे पुन ऐसा कटु-व्यवहार नही करूँगा। वुढिया से भी वावू साहव हाथ जोडकर माफी माँगते है कि मैंने तुम्हे वहुत कष्ट दिया। तेरे वस्त्र अवश्य फट गये। तुम्हारा हृदय वहुत दुखी हुआ होगा। मुझे वडा पाप लगा। ले यह दस रुपये अपने लिये धोती खरीद लेना। जाओ तुम्हारी दशा देखकर मै अपना ऋण दस रुपये का छोड देता हूँ। अव नही लूँगा। सचमुच तू मेरी पडोसी है। एक साथ रोज का रहना है ले ५) और देता हूँ इससे अनाज खरीद कर वच्चो को खिलाओ। वच्चे रात भर के भूखे है। राम! राम! वडा पाप किया। वडा अनुचित किया। मुझे क्षमा करना। क्रोध आ गया था। वुद्धि ठीक नही थी।

वुढ़िया—जा वेटा! हम कुछ कहति हई। क्षमा ही हौ। आज

मारा पीटा, कल पियार करेगा। पियार दुलार कर ही रहा है। भगवान तेरा भला करे।

विजय—देख बुढिया! तू सब भूल जाना। बाबू साहब बड़े दयालु हैं। इन्हें क्रोध आ गया था। क्रोध पाप का मूल होता है। क्रोध में बुद्धि ठिकाने नही रहती। अपने यहाँ कह देना कि शकर लाज पर दूध पहुँचाया करें। बहुत आवश्यक है। कल से परीक्षा होने वाली है।

बुढ़िया—अच्छा बेटा! जा कहि दूँगी। नाम बता के जाओ।

रजनी और विजय अपना-अपना नाम व पता कागज पर लिख कर दे देते है और कहते है कि किसी से यह पुर्जा पढवा कर दूध पहुँचा देना। कल प्रात काल दूध अवश्य आवे। (दोनो प्रस्थान किये।)

रजनी और विजय अपने लाज पर पहुँचे। अपने-अपने अध्ययन मे लग गये। इस वर्ष रजनी का एम० ए० फाइनल है। बहुत घोर परिश्रम करना पडता है। परीक्षा हो रही है। प्रश्न-पत्र बहुत अच्छे बन रहे है। परीक्षा समाप्त हुई। सब छात्र अपने-अपने घर पहुँचे। रजनी परीक्षा देकर बाहर निकल गया। देश-सेवकों का दल भी साथ है। यह दल रजनी के साथ अथक परिश्रम करता है। ग्राम-सुधार में इस दल ने काफी काम किया। कुछ दिनो मे परीक्षा-फल प्रकाशित हुआ। रजनी प्रथम-श्रेणी में एम० ए० उत्तीर्ण हुआ। उसके साथी सब के सब किसी न किसी श्रेणी मे उत्तीर्ण हो गये। बधाई का पत्र दोनो ओर से चलने लगा। साथियों ने ढूँढ़-ढूँढ कर नौकरियाँ कर ली। रजनी को एम० ए० उत्तीर्ण किये पूरे साढे तीन वर्ष हो गये। कई विभाग से नौकरी का आदेश आया पर रजनी ने अस्वीकार कर दिया। उसकी इच्छा नौकरी करने की नही है। उसके ससुर शीतलप्रसाद की मृत्यु हो गयी। उनके अंतिम-सस्कार हो गये पर रजनी को देर से समाचार मिला। वह जगदीशपुर पहुचे। मनोरमा वहाँ पहले ही से पहुँची थी। मनोरमा तथा सास बहुत दुखी थी। उन्हें बहुत समझाया। दोनो को बडा ढाढ़स हुआ। उसका पुत्र जिसका

नाम देश-बन्धु था पूरा समझदार हो गया था । उसकी अवस्था चार वर्ष की हो गयी थी पर देखने मे ६ वर्ष से कम का अनुमान नही होता था, बडा ही होनहार और चचल था । रजनी अब ससुर की सारी सम्पत्ति का पूरा मालिक हो गया । उसने मनोरमा तथा सास से परामर्श किया कि मै यहाँ की अतिरिक्त भूमि को भूदान मे दान देना चाहता हूँ ।

मनोरमा—बडा अच्छा होगा । मेरे स्वर्गीय पिता की भी यही इच्छा थी । आप से शायद विवाह के समय वचन-बद्ध भी हो चुके थे ।

सास—बेटी ! मरते समय तू और बबुआ मौजूद नही थे । उन्होंने मरते समय कहा भी था कि मेरी सारी भूमि को भूदान मे दे देना । बेटा रजनी भी मेरी अनुमति ले चुका है । क्यो बेटा ! सत्य है न ?

रजनी—हाँ अम्मा जी ! बिल्कुल सत्य है । (मनोरमा से) तुम देश-बधु को लेकर घर जाओ । मैं इस भूमि का प्रबध करने जा रहा हूँ ।

रजनी ने गाँव में मुनादी करा दी कि आज जगदीशपुर की भूमि दीनो को भूदान मे अर्पित की जायगी । लेखपालो तथा ग्रामप्रधानो को बुलवाया । दीनो की सूची तैयार कराया । सारी भूमि को दीनो में वितरण किया । तहसील मे पहुँचा । सब के नाम रजिस्ट्री किया । रजनी के साथ भूदान-यज्ञ के मत्री भी थे । रजिस्ट्री दो बजते-बजते हो गयी । रजनी जगदीशपुर पहुँचा । दीनो ने रजनी को लाख-लाख धन्यवाद दिया । भूदान-समिति की ओर से भी रजनी को धन्यवाद का पत्र मिला । अन्य ग्राम-जनता ने भी उसे बधाइयाँ दी । सब लोगो ने उसकी नि स्पृहता तथा त्याग-शीलता का यशोगान किया ।

(१०)

अशर्फी नौकरी से घर आया था । उसे छुट्टी थी । वह रजनी के गृह पहुँचा । उसका पुत्र कवीन्द्र भी साथ मे था । मनोरमा ने कवीन्द्र को गोदी में उठा लिया । उसे प्यार किया । उसे घर से लाकर मिठाई दिया । अशर्फी का कुशल मगल पूछा । जगदीशपुर अपनी अम्मा के यहाँ तुरन्त

चल दिया। अपने पुत्र देश-वधु को घर पर छोड दिया। अशर्फी रजनी की अम्मा से बातें कर रहा था। कवीन्द्र और देश-वधु सम-वयस्क हैं। दोनो एक साथ खेल रहे हैं। एक कुत्ता कवीन्द्र पर झपटा। वह भागा। कुत्ते ने पीछा किया। कुत्ता उसे काटना ही चाहता था कि छोटा बच्चा देश-वधु दौड पडा। बडी वीरता का काम किया। उसके हाथ में हल्की छोटी सी हाकी थी। लगातार तीन चार हाकी जमाया। कुत्ता था तो बडा कटहा पर हाकी लगते ही भाग खडा हुआ। कवीन्द्र डर के मारे एक पत्थर की चट्टान से टकराया और गिर पडा। उसको सख्त चोट आ गयी। उसकी पेशानी फूल गयी। सिर के दूसरी ओर से रक्त बहने लगा। आँखो मे काफी चोट आ गयी थी। उसमे भी रक्त बहने लगा। ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला उठा और रोने लगा। अशर्फी दौड पडा, कमरे से बाहर आया, देखा तो कवीन्द्र की आँखो और सिर से काफी रक्त बह रहा है। वह विक्षुब्ध है। रो रहा है। पेशानी फूल गयी है। अशर्फी ने समझा कि कवीन्द्र की एक आँख फूट गयी है। देश-वधु चुप चाप स्तब्ध हो कवीन्द्र की सहानुभूति में उसके पास खडा है। अशर्फी ने समझा कि यह सारी शरारत देश-वधु की है। क्रोध को रोक न सका। उसके हाथ में हाकी थी वह क्रोधी स्वभाव का उद्दण्ड था ही। कस कर तीन चार हाकी जमाया। देश-वधु का सिर फट गया। उसके प्राण-पखेरू उड गये। नौकर तथा दो-चार पडोसी कुत्ते वाली घटना कुछ दूर से देख रहे थे। नौकर रजनी का था। नाम उसका तुलसी राम था। ये लोग दौड कर आ ही रहे थे कि सारी घटना को अशर्फी से अवगत करावे तब तक इधर अशर्फी ने बच्चे का काम तमाम कर दिया।

प्रिय देश-वधु की निर्मम हत्या कर अशर्फी अपने बच्चे को उठा कर नौ दो ग्यारह हो गया। अशर्फी क्रोधान्ध था। उसे पता नही था कि मैंने क्या किया। पडोसी अशर्फी के क्रूर-स्वभाव से पहले ही से जलते थे। बडे रुष्ट रहा करते थे। इस घटना को देख कर पडोसियो के क्रोध का ठिकाना

नहीं रहा। थाना एक मील की दूरी पर था। चटपट सबो ने थाने को सूचना दी। पुलिस घडाके से पहुँच गयी। रजनी की अम्मा घर में थी। उसे सूचना मिली। वह दौडी हुई पागल सी बाहर आयी। देश-बधु की लाश पर गिर पडी। वह कभी देश-बधु को उठाकर प्यार करती। कभी उसे चुम्बन देती। कभी घर से मिठाई लाकर उसके मुँह में डालती और कहती कि बेटा! खा लो। बोलो, हँसो। कभी दूधभात लाकर खिलाती पर वह कैसे खाये। वह ससार में तो है नही। शैलकुमारी भी तो अपने होश में है नहीं। वह कभी उसे कहानी सुनाती। कभी उसे कौडियाँ और गोलियाँ देती। कभी तरह-तरह के खिलौने देती। कभी उसे प्रसन्न करने के लिये कौडियो तथा गोलियो से उसके सामने खेलने लगती। बार-बार यही कहती है कि बेटा! हँसो, बोलो। रजनी का बाप बाहर था। दुखद समाचार सुना। दौडा आया। देश-बधु को गोदी मे उठा लिया। रोने लगा। उसका सारा वस्त्र खून से रँग गया। पागल सा हो गया। कभी उसे खेलाता। कभी चुम्बन देता। कभी उसे लेकर इधर दौडता, कभी उधर दौडता। पडोसी लाश छीनना चाहे पर रजनी के माता-पिता किसी को देते ही नही थे। पुलिस आ गयी। थानेदार ने इन लोगो की व्यग्रता देखी। उनके चक्षुओ से आँसू फूट पडे। लडके की सुन्दरता देख कर पुलिस के सिपाही तथा थानेदार हाय हाय करने लगे। किसी प्रकार लाश दम्पत्ति से छीनी गयी। कई आदमी रजनी की माता और पिता को पकडे थे। अशर्फी गिरफ्तार कर लिया गया था। लाल साफा कमर में लगा दिया गया। नौकर तुलसी राम दौडा हुआ जगदीशपुर पहुँचा। समाचार पाकर मनोरमा व्यग्र हो उठी। रजनी कुछ देर के लिये स्तब्ध हो गया। सास के दुखो का अन्त नही रहा। क्षण भर में सारे घर पर एक उदासी दौड गयी। रजनी ने होश सँभाला। मनोरमा से कहा कि देखो हम लोगो का जीवन रहेगा तो बहुत से पुत्र और पुत्री होगे। हम लोग कोई बूढे तो है नही। हम लोग शिक्षित है। हम लोगो का

अनुष्ठान देश-सेवा करने का है। हम लोगो की यह लगन सच्ची होनी चाहिये। दिखावटी नही। इस समय हम लोगो का सबसे बड़ा लक्ष्य यह होना चाहिये कि जैसे हो वैसे मित्र अशर्फी की जान बचानी चाहिये। बच्चे का शव तो पोस्टमार्टम पहुँच गया होगा। पुलिस की कार्यवाही तो हो ही गयी होगी। अशर्फी के शत्रुओ ने तो उसके विपरीत बयान दिया ही होगा। उसके अनुकूल तो दिया होगा नही। दूसरे के सिर वे लोग खेल खेलना चाहते हैं। माता-पिता ममतावश क्या बयान दिये होंगे। कहा नही जा सकता।

मनोरमा मैके जाने के लिये तैयार होती है, गश खाकर गिर पड़ती है, फिर होश मे आकर रोने लगती है और कहती है कि हा मेरा प्यारा देश-बन्धु! अब मुझे अम्मा कह कर कौन पुकारेगा? अंतिम समय तुम्हारा मुँह भी नही देख सकी। तुम्हारी तोतली वाणी हवा मे विलीन हो गयी। तुम्हारे खेल को देख कर मैं फूली नही समाती थी। हाय! मुझे अब हठात् कौन खेल दिखलायेगा। तुम्हारे खिलौनो का हठ कभी-कभी विवश कर देता था। घर का सारा काम, सारा प्रोग्राम ठप् कर देता था। अब तेरा वह हठ कहाँ देखने को आयेगा? हाय! तुम्हारा वह मधुर-हास्यस्वप्न हो गया। हाय! तू मेरी गोदी सूनी कर गया। (छाती पीट कर) यदि मैं यह जानती कि तू धोखा देगा तो तुझे क्यो विक्रमपुर छोड़ आती! तू अकेला पाया, खिसक गया। फूट-फूट कर रोने लगी। रजनी की भी आँखें अश्रु-पूरित हो जाती हैं। (आँसू पोछ कर) क्यो? यह क्या कर रही हो? सोचो अशर्फी पर, मित्र अशर्फी पर इस समय क्या बीतती होगी? उसकी वृद्धा माता और उसकी स्त्री कहाँ की होगी? देर करोगी तो सारा मामला बिगड़ जायगा। माता-पिता को धैर्य दिलाना चाहिये। नही तो वे तडप-तड़प कर मर जायेंगे। इस समय आपत्ति आयी है। इसका डॅट कर सामना करना चाहिये। घबराना नहीं चाहिये। इसी मे मेरी, तुम्हारी, माता-पिता और कुटुम्ब परिवार की भलाई है।

मनोरमा—(शात हो कर) अच्छा अब मै जा रही हूँ। माता जी वहुत दुखी है। उन्हे वोघ दे दीजियेगा।

रजनी—हां जल्द जाओ। देखो घर का वयान अशर्फी के प्रतिकूल न जाय। घर वालो से, नौकर चाकर से कहला देना कि देश-वधु छत से गिर गया। सिर फट गया। वह चोट मे मर गया। मै डाक्टर के यहाँ जाता हूँ। डाक्टर मेरा परम-प्रिय मित्र है, सहपाठी है। मैं उससे उक्त वातें वतलाऊँगा। आशा तो पूरी है। मुझे इस समय देश-वधु नही सूझता है केवल अशर्फी सूझना है, उसका दुखी परिवार दिखलाई देता है। मै अभी-अभी जा रहा हूँ। रजनी अपनी सास को काफी समझाया। उसके हृदय को ठोम वना दिया। सास से छुट्टी माँगा। साइकिल उठाया। शीघ्र डाक्टर के यहाँ चम्पत हुआ। शव पोस्टमार्टम पहुँच गया था। डाक्टर वही मिलता है।

डाक्टर—(रजनी को देख कर) मित्रवर! आइये, इस अवोध वच्चे को किसने मारा है? वह कौन सा हत्यारा है, पापी है? वडा ही निर्दयी है, नीच है, नराधम है। मानव नही दानव है।

रजनी—(डाक्टर का हाथ पकड कर वाहर लाता है) मित्रवर! सुनो मै सारी घटना सत्य-सत्य कहता हूँ। (पुन चुपके से) आप लिख दे कि यह वच्चा छत से गिर कर मरा है। किसी के मारने से नही मरा है। असली वातें न लिखें नही तो व्यर्थ में मेरे मित्र का विनाश होगा।

डाक्टर—रजनी! तुम धन्य हो। तुम तो पूजने योग्य हो। तुम मानव नही हो, देव हो। वह भी पत्थर के नहीं, सजीव देव हो। ऐसे पापी नराधम को क्षमा कर रहे हो, तुम साक्षात् क्षमा-मूर्ति हो। जाओ लिखता तो नही पर तुम्हारे आग्रह से लिख दूँगा। जिसमे तुम्हारी आत्मा प्रसन्न रहे वही करूँगा। क्या करूँ। उस दानव को तो छोडने का विचार नही था। उसके विपरीत ऐसा कस कर लिखने का विचार था कि उसका

सारा परिवार रसातल चला जाय। पुन अपील की गुंजाइश ही न रहे फिर देखता कि कौन बैरिस्टर उसे बचा लेता।

रजनी—नही, नही, ऐसा विचार न करो। मेरे सामने लिख दो तो मैं यहाँ से जाऊँगा। ऐसा लिखो कि पुलिस की दाल न गले। घातक अशर्फी, नही, नही मेरा परम-प्रिय अशर्फी दाम-दाम बच जाय। उसके शत्रु मुँहकी खायें।

डाक्टर—(रिपोर्ट लिख कर) देखो मुआफिक है न !

रजनी—(बहुत प्रसन्न हो कर) हाँ मैं ऐसा ही चाहता था। बडा अच्छा लिखे हो अब मैं अशर्फी को बचा लूँगा।

डाक्टर रजनी के हृदय की विशालता का, उसके त्याग का, उसकी क्षमता का गुणानुवाद करता है। रजनी, जगदीशपुर लौटा। वहाँ सास की सुव्यवस्था किया। वहाँ से शीघ्र विक्रमपुर पहुँचा। देखा कि माता-पिता खाट पर चिंतित बने पडे हुए हैं। एक दल गाँव का उन्हें घेरे खडा है। मनोरमा चुपचाप पास में बैठी हुई है। घर की सारी चहल-पहल समाप्त हो चली है। घर श्मशान सा हो गया है।

रजनी—अम्मा ! अम्मा ! बाबूजी ! बाबूजी। कह कर पुकारा पर कौन सुनता है। अम्मा बेहोश, बाबूजी बेखबर। यदि वे बेहोश न होते तो क्या रजनी को देखकर मौन रहते। रजनी ग्राम तथा पास-पडोस के लोगो से पता लगाता है कि पुलिस ने किससे-किससे बयान लिया ? लोगो ने क्या-क्या बयान दिया ? माता-पिता बेहोश थे अत उनके बयान को पुलिस न ले सकी। इन सब बातो को सुनकर रजनी की जान मे जान आयी।

रजनी—(मनोरमा से) अब मैं अशर्फी को बचा लूँगा। उसके परिवार को अब डूबने नही दूँगा। माता-पिता के शोक-उन्मूलन की चिन्ता है। (माता की नाडी पकड कर) इसे तो बडा कडा ज्वर है। (पिता की नाडी स्पर्श कर) इन्हें भी ज्वर है।

रजनी दौडा डाक्टर के यहाँ गया। डाक्टर बुला लाया। माता-पिता

को डाक्टर ने दवा दी। दोनो कुछ ही देर मे होश मे आये। दोनो रजनी को देखकर पुन रोदन करने लगते हैं पर अब उनमें रोने की शक्ति कहाँ ? रजनी उन्हें समझाता है कि आप लोग ईश्वर का स्मरण करें। देशबन्धु पुन तुम लोगों की गोदी में आ जायगा। आप लोग इस प्रकार व्यग्र होंगे तो हम लोगो की क्या दशा होगी ? बोलो अम्मा ! तुम लोगो के रोदन से हम लोगो का स्वास्थ्य क्षीण ही न होगा ? हम लोग बीमार पड जायँगे तो दूसरी विपत्ति आप लोगो के समक्ष आ जायगी। रोने गिडगिडाने से देशबन्धु मिल जाता तो मैं रोने वाला एक ससार बुला देता। रोना-धोना व्यर्थ है। होनहार प्रबल है होना था सो हो गया। देखो अम्मा ! तुम्हारा और बाबूजी का अभी बयान नही हुआ है। अब पुलिस आती ही होगी। पुलिस गयी थोडे ही है। आप लोगों से प्रार्थना है कि जैसे हो वैसे अशर्फी की प्राण-रक्षा की जाय। वह मेरा मित्र है। अनन्य मित्र है।

रजनी की अम्मा—बेटा ! वह बडा निर्दयी है। हत्यारा है। बिना अपराध मेरे हाथ का खिलौना, मेरे पिजडे का तोता छीन लिया। वह क्षमा करने योग्य नहीं है।

पिता—हाँ रजनी ! उसे क्षमा नही किया जायगा।

रजनी माँ-बाप के चरणो पर गिर जाता है और अशर्फी की ओर से क्षमा माँगता है। दोनो को समझाता है कि भलाई करने से हम लोगो का भगवान भला करेगा। मान लेता हूँ कि अशर्फी ने हत्या की है उसे न्यायत फाँसी का दण्ड मिलना चाहिये पर उसकी वृद्धा माता, उसकी स्त्री तथा उसके अबोध बच्चे ने कौन सा अपराध किया है ? वे बेचारे दाने-दाने को तरस कर मर जायँगे। अशर्फी की प्राण-रक्षा में कितने व्यक्तियो की प्राण-रक्षा होगी। अम्मा जी ! बाबूजी। आप लोग भूल जायँ। प्रति-शोध की भावना अपने हृदय से निकाल दें। आप लोगो को बडा पुण्य होगा। आप लोगो को शीघ्र पौत्र का मुँह देखने को मिलेगा। देशबन्धु से भी सुन्दर हृष्ट-पुष्ट होनहार बालक हम लोगो के आँगन में खेलेगा।

माता-पिता—अच्छा बेटा ! हम लोग यही बयान देंगे कि देशबन्धु छत से गिर कर मर गया है। तुलसी राम नौकर से भी यही बयान दिलवा देंगे। भगवान अशर्फी को बचावे नही तो वास्तव मे उसका कुटुम्ब दाने-दाने को तरस कर मर जायगा।

इतने में बाहर पुलिस आ जाती है। द्वार खटखटाती है। रजनी बाहर निकलता है तो देखता है कि दारोगा चार सिपाहियो के साथ बाहर खडे हैं। एक सिपाही रजिस्टर तथा कागज-पत्र लिये खडा है।

दारोगा—(रजनी से) कहिये आप के माता-पिता की क्या दशा है।

रजनी—आज तो वे लोग होश में है। डाक्टर बुलाया है। उसने दवा दी है तो वे लोग होश में आये हैं।

दारोगा—अभी उनके बयान बाकी है कृपया उनके बयान दिलवा दीजिये।

रजनी प्रबन्ध करता है। उन लोगो की खाट के पास एक कुर्सी दारोगा के लिये और एक बेंच सिपाहियो के लिये रखवा देता है।

दारोगा—(रजनी की माता से) आप बतला सकती है कि बच्चा देशबन्धु कैसे मरा ?

रजनी की माता शैलकुमारी—बच्चा ! छत पर खेल रहा था वहाँ से पैर फिसला। नीचे गिर पडा। सिर के बल गिरा। आँगन पक्का था। सिर फट गया। तत्काल मर गया।

दारोगा—(हक्का बक्का सा होकर रजनी के पिता से) आप बतलावें कि बच्चा देशबन्धु कैसे मरा ?

रजनी के पिता अजयकुमार—वह छत पर खेल रहा था वही से लुढक कर नीचे गिर पडा। सिर फट गया। शीघ्र मर गया।

दारोगा—(तुलसीराम नौकर से) तुमको जानकारी है कि बच्चा कैसे मरा ?

तुलसी राम—सरकार ऊ छत पर खेलत रहलैं वही से गिर गइलैं कपार खुल गयल। अवतै-अवतै भुइयाँ पर मर गइलै।

दारोगा—(आश्चर्य में पडकर) ये लोग तो सारा मामिला ही विगाड दिये। अब क्या होगा ? (सिपाहियो से) चलो चला जाय।

पुलिस कमजोर पड जाती है। डाक्टर को रिपोर्ट भी अशर्फी के खिलाफ नही पड़ती। वडा गडवड है। गाँव वाले कुछ अलग वयान दिये। उनके वयान अशर्फी के प्रतिकूल हैं पर सव टायँ-टायँ फिस्। मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त रह कर अशर्फी का कुछ नही विगाड सके। अशर्फी वाल-वाल वच गया। वह इस अपराध से मुक्त हो गया। अपनी सर्विस पर चला गया। वह रजनी के घर उससे मिलने भी नही आया। उससे यह भी नही वन पडा कि जरा मनोरमा को दो चार शब्द सान्त्वना के कह दें। रजनी, रजनी की माता तथा पिता को दो चार शब्द सहानुभूति में उपहार स्वरूप अर्पित कर दें। क्यो ? उसने लज्जा वश ऐसा किया ? नहीं, वह ऐसे क्रूर स्वभाव का था ही। अशर्फी के घर हाहाकार मचा था। ज्यो ही वह छूटा त्योही उसकी वृद्धा माता तथा उसकी स्त्री रजनी के घर पहुँची। उन्हे हजार-हजार धन्यवाद दिया। आशीर्वाद दिया। इसके पहले ये दोनो इतनी लज्जित थी, दुखी थी, अव भी लज्जित है, दुखी है पर अपने परिवार का जीवन-दान पा कर इन दोनो से रहा नही गया। रजनी और मनोरमा को इसकी क्या आवश्यकता। रजनी को ज्योही अशर्फी के मुक्त होने का समाचार मिला, शीघ्र सारा कार्य छोडकर अशर्फी के घर पहुँचा। वडी प्रसन्नता दिखलाया पर क्रूर अशर्फी ने एक शब्द भो कृतज्ञता का नही प्रयोग किया वरन् वह उल्टे वहकता था और निर्लज्जता का अभिनय करते हुए डींगे मारता था। स्टेशन के सभी स्टाफ से कहता था कि रजनी मेरा कुछ नहीं कर सका। पडोसी मेरे वँधवाने का ही नही वरन् फाँसी पर लटकाने का पूरा-पूरा षड्यन्त्र रच चुके थे पर मैं तपे-तपाये सच्चे सोने की भाँति पुलिस की कसौटी पर खरा निकला। साफ-साफ वच गया। रजनी रात्रि भर अशर्फी के यहाँ रहा पर स्टेशन स्टाफ से एक वात भी अशर्फी के विरोध मे या उसकी निन्दा में नही कहा।

प्रात काल हुआ। रजनी विक्रमपुर पहुँचा। मनोरमा से मिलने के लिये वह वहुत लालायित था। उसे कुछ ऐसे कार्य दे आया था जो कठिन थे। अत इन कार्यों के प्रति जानकारी प्राप्त करने के लिये वह घर आया। घर पर उसके कई मित्र समवेदना प्रकट करने के लिये आये थे। सव लोग चिन्ता प्रकट करते हैं। शोक दर्शाते हैं पर वह सवसे ऐसे ढग से मिलता है कि मानो इसके यहाँ कोई दुखद घटना ही नही घटी है। मनोरमा घर पर नही है। माता जी से पूछता है तब तक मनोरमा आ जाती है।

रजनी सव मित्रो को कुछ दूर तक गाँव के वाहर पहुँचा कर वापिस लौटा। घर पर मनोरमा से साक्षात्कार हुआ। रजनी ने उससे पूछा कि तुम इतनी देर तक कहाँ रही।

मनोरमा—मेरे यहाँ वालमुकुन्द अपने छोटे वच्चे प्रेमनारायण का विवाह एक वीस वर्ष की सयानी लकडी से निश्चय कर लिये थे। दो ही दिन में विवाह होने वाला था। जव मुझे इसका समाचार मिला, मैं तीर की भाँति उनके यहाँ पहुँची। उनकी स्त्री को काफी समझाया। वहाँ वालमुकुन्द भी थे। प्रेमनारायण की आयु मुश्किल से ७ वर्ष की होगी। वालमुकुन्द ने धन की लालच से ऐसा कदम उठाया। खैर दोनो व्यक्ति सही रास्ते पर आ गये। इनकार का पत्र भी लिख कर मुझे दिया। मैं अभी-अभी खा-पीकर लडकी के पिता के यहाँ जाऊँगी। उन्हें पूरा-पूरा समझा दूँगी। उनकी लड़की की शादी किसी योग्य वर से करा दूँगी। उस लडकी के योग्य अवधेश है। अवधेश की आयु भी इस समय २४ वर्ष है। उसकी स्त्री अभी हाल मे ही मरी है। वह खुशहाल है। उसके यहाँ किसी प्रकार का लडकी को कष्ट नही होगा। पढा लिखा है। खेती भी अच्छी है। आफिस मे १५०) मासिक पर क्लर्क है। अव क्या चाहिये।

रजनी—वहुत ठीक। शादी अत्युत्तम है। न ठीक हो तो मुझसे कहना मैं ठीक करवा दूँगा।

मनोरमा—आपको कष्ट करने की आवश्यकता नही। मैं स्वय इसके लिये समर्थ हूँ।

मनोरमा ठीक एक वजे खा-पी कर लडकी के माता-पिता के यहाँ चल देती है। इनकार का पत्र देती है। माँ बाप को समझाती है। वे दोनो समझ जाते हैं। ठीक उसी लग्न पर अवधेश से सादी करा देती है। लडकी के माता-पिता वहुत प्रसन्न होते है। एक आदर्श रूप मे विवाह हुआ। अन्य व्यय दोनो ओर से किया गया। अधिक झझट नही उठाना पड़ा। दोनो ओर से मनोरमा को काफी धन्यवाद मिले।

मनोरमा घर लौटी। पति से अपनी सफलता का समाचार सुनाया। रजनी प्रसन्न होता है। अपनी सास के यहाँ चला गया। वहाँ उसकी सेवा करने लगा। उसकी सास के पास उसके गुजारे भर केवल जमीन रह गयी थी। उसी की देख-रेख में वह प्राय. वहाँ जाया करता था। मनोरमा को उसने आज वहुत प्रसन्न पाया। वह प्राय प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करती थी। रजनी अपना पक्का साथी पाकर कुल दुख भूल गया।

मनोरमा—आप घर रहे। मेरे मैके भी समय-समय पर जाते रहें। मैं अशर्फी के यहाँ जा रही हूँ। उनकी स्त्री से भेंट हुए वहुत दिन हो गये। उनसे मिलूँगी। अपने एक सप्ताह का कार्य-क्रम मुझे उधर के क्षेत्रो मे पूरा करना है। उनकी स्त्री वडी ही सरस-हृदयता है। मेरा वडा सम्मान करती है। वहिन की भाँति मानती है। मुझे वुलावे के लिये उसका कई सन्देश भी आ चुका है। मेरा विचार है कि मैं अपना हेड क्वार्टर उसी के यहाँ रखूँ।

रजनी—कव लौटोगी ?

मनोरमा—ईश्वर की कृपा हुई तो उधर के सभी क्षेत्रो का दौरा करके इस सप्ताह के अन्त तक आ जाऊँगी। इस वार मुझे वहाँ की वहिनो को हस्तकला पर अधिक जोर देना है। कुटीर-व्यवसाय में वहाँ का क्षेत्र वहुत पिछडा है। रात-दिन मुझे इसी की चिन्ता है। शायद मुझे इस कार्य

में सप्ताह से अधिक समय लग जाय। आप घबराइयेगा नही, मैं बराबर पत्र देती रहूँगी। मेरा निवास अशर्फीलाल के क्वार्टर पर रहेगा। आवश्यकता पडे तो मुझे वही से बुला लीजियेगा।

रजनी—कोई हर्ज नही। जाओ तुम्हारी यात्रा मंगल-मय हो। अशर्फी मेरा मित्र है तुम्हें वहाँ किसी प्रकार का कष्ट नही होगा।

मनोरमा ने दो झोला उठाया। एक में आवश्यक रजिस्टर रखा तथा दूसरे मे वस्त्र रखा। ये झोले काफी बडे थे। अपने पति को प्रणाम किया और चल दिया।

इधर रजनी के साथी उसके यहाँ आते है। रजनी प्रतिदिन उसके साथ ग्रामोद्योग का कार्य करता है। सायकाल अपने घर लौट आता है। माता-पिता रजनी को देखकर सब दुख भूल जाते है।

माँ शैलकुमारी—बेटा! कोई नौकरी क्यो नही कर लेते? देखो अशर्फी कैसे आनन्द से ठाट-बाट से अपना जीवन-निर्वाह कर रहा है। तू तो उससे कहीं अधिक पढा है। तेरी जान-पहचान और प्रतिष्ठा भी बहुत बडी है इसलिये तुम्हे कोई बहुत बडी नौकरी मिलेगी। वेतन भी ऊँचा मिलेगा। अधिकार भी काफी मिलेगा।

रजनी—अम्मा देश-सेवा में ही मैं अपना समय बिताना चाहता हूँ। मेरे घर किस वस्तु की कमी है कि मै नौकरी करूँ। तुम्हें और पिता जी को इस अवस्था में छोड कर थोडे मे रुपयो पर मै दूर-दूर की खाक नही छानना चाहता। थोडी सी तृष्णा पर अपनी अमूल्य-स्वतन्त्रता की हत्या नही करना चाहता।

माँ—क्या घर द्वार छोड कर दूर-दूर रहना पडेगा?

रजनी—तब क्या, सरकार जहाँ भेजेगी वहाँ जाना ही होगा?

माँ—तब तू यही रह। देश-सेवा, समाज-सेवा, सरकार-सेवा, जो कुछ भी करते बने वह कर। ऐसी नौकरी लेकर क्या करेगा। तू दूर-दूर रहेगा। इधर मैं आये दिन की मेहमान हूँ। पता नही कब आँखें बन्द कर

हूँ । रहेगा तो मेरी मिट्टी तो पार लगायेगा । जाने दे, ऐसी नौकरी । मैं ऐसी नौकरी नही चाहती । ऐसी नौकरी पर लात मारती हूँ । भगवान ने खाने-पीने को वहुत दिया है । मेरी आँखो के तारे, मेरे वुढापे के एक मात्र आधार, मैं तुझे आँखो से दूर नहीं जाने दूँगी ।

रजनी—अम्मा । मेरा भी यही विचार है कि मैं तुम्हारी और वावू जी की सदैव सेवा करता रहूँ । यही मेरी उच्च अभिलाषा है । देश-सेवा, समाज-सेवा और सरकार-सेवा से मातृ-पितृ-सेवा कम महत्व नही रखती । (अम्मा से) मैं आज २ मील की दूरी पर सर्व-दलीय-सम्मेलन में जा रहा हूँ । मेरे सभी साथी पहुँच गये होंगे ।

माँ—जा वेटा । शाम को लौट आयेगा न ?

रजनी—हाँ साइकिल साथ है । मैं अवश्य आ जाऊँगा । घवराना मत ।

प्रस्थान करता है ।

[११]

मनोरमा अशर्फीलाल के यहाँ ट्रेन से पहुँच जाती है । उनकी स्त्री से भेंट करती है । उनकी स्त्री खुले दिल से मिलती है । प्रिय-वच्चा देशवन्धु की नृशस-हत्या का वर्णन करना चाहती है । पति के निर्दयी एव क्रूर व्यवहारो का जिक्र लाना चाहती है पर मनोरमा नही लाने देती । चर्चा आते ही दूसरी वातें छेड देती है । दोनो एक साथ जलपान करती है । भोजन करती हैं । रात्रि को जव मनोरमा विश्राम करती है तो अशर्फी की स्त्री पैर दवाती है । नौकरानी पैर दवाना चाहती है पर वह नही मानती । मनोरमा नही चाहती पर उसके प्रेमाग्रह के सामने मौन हो जाती है ।

मनोरमा एक दूसरे झोला मे रजिस्टर रख कर प्रचार करने चल देती है । कुछ देर वाद अशर्फीलाल आता है झोला देखकर अपनी स्त्री से पूछता है । वह सारा समाचार वतलाती है ।

अशर्फी—मनोरमा यहाँ रहेगी ?

उसकी स्त्री—हाँ रहेगी। हम लोगो के रहते हुए अन्यत्र कहाँ रहेगी ? इससे सुन्दर स्थान कहाँ मिलेगा ?

अशर्फी—मनोरमा बडी मन चला है। रजनी भाई भी विचित्र है। इसे अकेला छोड दिया है। नही जानते कि स्त्रियाँ स्वतन्त्र होकर बिगड जाती हैं।

अशर्फी की स्त्री—नही, कदापि नही। मनोरमा एक उच्च विचार की स्त्री है, बडी ही सदाचारिणी है। देश-सेवा, समाज-सेवा का कार्य करना उसका प्रधान लक्ष्य है।

अशर्फी—व्यर्थ तारीफ का पुल न बाँधो। वह हर प्रकार से गिरी हुई स्त्री हैं। अभी रजनी भाई को पता नही। जरा कुछ समय बीतने दो तब पता चलेगा कि वह किस विचार की स्त्री है। मैं तो बहुत से लोगो से इसके चरित्र की निन्दा सुनता हूँ। देखना तुम इसकी शिष्या न बन जाना।

अशर्फी की स्त्री—आप के इन बातो मे मेरा एक कौडी भी विश्वास नहीं है। आप व्यर्थ किसी के पवित्र चरित्र पर दोष न लगायें। मानसिक पाप न करें।

मनोरमा की प्रशसा सुनकर अशर्फी को क्रोध आ गया। अशर्फी ने कई लात व घूसा अपनी स्त्री को जमाया। वह बेचारी चुप हो जाती है। वहाँ से वह हट जाती है। अशर्फी प्राय बात-बात में अपनी स्त्री को ताडना दिया करता था। वह बेचारी सदैव सहन करती जाती थी। कुछ भी नही बोलती थी।

अशर्फी भोजन करके कुछ देर तक विश्राम करता है। पुन. स्टेशन जाता है। मनोरमा भी कुछ देर बाद आ जाती है। दोनो हिल-मिल कर बातें करने लगती हैं। पति के किये गये आघातो को छिपा कर रखा। कलुषित बातो को गोपनीय रखा। मन से खिन्न है पर अपने भावो को मनोरमा पर व्यक्त नही करना चाहती। घर से नौकर पत्र लेकर अशर्फी

की स्त्री को बुलाने आता है। उसकी सास की तबीयत वहाँ खराब है। अशर्फी उसे घर जाने की सलाह देता है। इधर पति की आज्ञा, उधर सास की बीमारी का समाचार और सबके ऊपर मनोरमा को छोड कर जाना, ये तीनो विचार उसके हृदय में एक क्राति मचा देते हैं। मनोरमा उसके सकोची स्वभावो को जानती थी। उसने कहा कि जाओ बहन ऐसी दशा में तुम्हें अवश्य जाना चाहिये। तुम्हारे पति का भी आदेश है। कुछ हो जायगा तो जीवन भर पछताना पडेगा। केवल कलक हाथ लगेगा। उसे मनोरमा की अनुमति अच्छी लगी। उसने शीघ्र ट्रेन से प्रस्थान किया। मनोरमा ने एक पत्र अपने पति को लिखकर दिया। उस पत्र मे लिखा था कि मुझे यहाँ कोई कष्ट नही है। मैं स्वस्थ सुखी हूँ। प्रचार-कार्य में पूर्ण सफलता मिल रही है। दूसरे सप्ताह आऊँगी।

अशर्फी के लिये अब मैदान साफ मिला। मनोरमा को अकेला पाया। अपने प्रेम-जाल में फँसाने के लिये तरह-तरह की युक्तियाँ सोचने लगा। अशर्फी नित्य उसे नयी-नयी वस्तुएँ क्रय करके लाता। उसका बडा सम्मान करता। तरह-तरह के मूल्यवान उपहार उसे अर्पित करता। घटो उसकी चापलूसी मे बिताता। उसको प्रसन्न करने का हर पहलू से प्रयत्न करता। अशर्फी चरित्र-भ्रष्ट था। पूरा स्टेशन-स्टाप उसके भ्रष्टाचार से विज्ञ था। उसके दुश्चरित्र से उसके सभी सहायक कर्मचारी असन्तुष्ट रहा करते थे। डेरे पर जो नौकर-नौकरानी थी वे मन ही मन कुढा करती थी। जला करती थी।

रात्रि का समय है। मनोरमा बैठी है। अशर्फी घुल-घुल कर बातें कर रहा है। वधिक अशर्फी अपने शिकार के फन्दो को धीरे-धीरे ढीला करता जा रहा है, फैलाता जा रहा है, प्रलोभन के हरे-हरे चारे जाल में बिखेरता जा रहा है। वह मृगी-मनोरमा के फँसाने का सारा घात सोच चुका है। उसने साहस पर कन्ट्रोल किया। मनोरमा से कहा कि देखो रजनी और मुझमें कोई भेद नही है। हम दोनो दाँत काटी रोटी खाने वाले

हैं। तुमसे मेरी यही प्रार्थना है कि तुम रजनी की भाँति मुझे भी प्यार करो। अपने हृदय का एक कोना मेरे लिये भी खाली रखो।

मनोरमा—क्या कहा ?

अशर्फी—स्थान माँगा। हृदय-मन्दिर में प्रवेश करने की अनुमति माँगा। दिल का एक टुकडा, टुकडे के रूप में माँगा। तुमसे केवल एक प्यार

मनोरमा—क्यो भाई अशर्फी ! आज भाँग तो नही खाये हो ? कैसी बातें कर रहे हो ? अपने मन पर नियन्त्रण रखो। तुम्हे ईश्वर ने कितनी सुन्दर स्त्री दी है। क्यो भगवान के अनुपम उपहार का अपमान करते हो, तिरस्कार करते हो।

अशर्फी—नही नही ! मान जाओ।

मनोरमा—भाई जैसा तुम समझ रहे हो मै वैसी हूँ नही। मैं केवल अपने पति को जानती हूँ। मेरा पति कितना भव्य-शरीर, सुन्दर-बुद्धि तथा निर्मल-स्वभाव पाया है। मै एक सच्चरित्र बाप की बेटी हूँ। मै अपने बाप के नाम को कलकित नही करूँगी। कुल में अमिट दाग न लगाऊँगी। मैं तो गाधारी के पवित्र-आदर्शों पर चलने वाली हूँ। उसके पति धृतराष्ट्र अन्धे थे। आजीवन अपनी आँखो पर पट्टी बाँधी रही। उसी प्रकार मैं भी अपने पति की अनुचरी हूँ। पति काया है मै उसकी छाया हूँ। अशर्फी भाई ! होश में आओ। अपने को सँभालो, लोक-लाज बचाओ।

अशर्फी—नही तुम सोच लो। मैं स्टेशन जा रहा हूँ आशा है कि लौटने पर तुम मुझे अपने हृदय का एक कोना दोगी। अपने प्रेम की, प्यार की भीख देकर मेरे हृदय को तृप्त करोगी।

मनोरमा—तू भूल जा। मै अपना अमूल्य-सतीत्व आठो सिद्धि, नवो निधि पाने पर भी नही बेच सकती। मैंने पद्मिनी, दुर्गा, जवाहर बाई, द्रौपदी, सीता आदि वीर-गाथाओ का इतिहास भली-भाँति अध्ययन किया है। तू मेरे चरित्र पर व्यर्थ शका रखते हो। मेरा पति दीप्यमान दीपक है

मै उसका परवाना हूँ। मरूँ तो उसी दीपक पर, खेलूँ तो उसी दीपक के प्रकाश में। भाई ! तुम होशियार हो। इस पाशविक प्रवृत्ति को छोडो।

अशर्फी मारे क्रोध के ऐंठा हुआ चला जाता है। मन मे बडबडाता हुआ जाता है। मन में पुन सोचता है कि यदि मनोरमा मेरे प्रेम के चगुल में नही फँसेगी तो यह अवश्य भडा फोड करेगी। रजनी से सारी बातें अवश्य कहेगी। बडी मुसीबत आयेगी। विक्रमपुर मुँह दिखलाना कठिन हो जायगा। मुझसे बहुत से लोगो ने कहा कि मनोरमा आचार-भ्रष्ट है पर यहाँ दूसरा ही नकशा सामने आता है। क्या करूँ। कुछ नही। इसे एक बार भी राजी कर लूँगा तो इसकी और हमारी खूब गाढी छनेगी। एकान्त है ही इससे सुन्दर-स्थल, इससे सुन्दर सिद्धि-स्थल कहाँ प्राप्त होगा ? अब तो देखना है कि इसकी विजय होती है कि मेरी। हार तो मैंने जीवन में कभी खायी नही। इसका पति रजनी तो एक दम बुद्धू है। डरपोक है। कायर है। उसके प्रिय-पुत्र देशबन्धु को दिन दहाडे मार डाला। सब लोगो ने मेरी इस बहादुरी को देखा। मेरे विपक्ष में गवाही भी विशेपाश लोगो ने दी पर उसका किया कुछ नहीं हुआ। क्यो ? प्रेम-वश ? नही, नही। वह मुझसे इतना भय खाता है कि मेरा कुछ नही बिगाड सकता। इसी से सदैव मेरी खातिर में लगा रहता ह। इसी प्रकार यदि यह नही राजी होगी तो उसी हाकी से, जिस हाकी से इसके प्रिय-आत्मज देशबन्धु का वध किया था, इसको भी उस लोक की हवा खिला दूँगा। अभी तो प्रार्थना कर रहा हूँ। जरा स्टेशन से ट्रेन पास कर लूँ तब इसकी शेखी बघारना निकालूँ। तब इसके सतीत्व को देखूँ। यह अबला है कर ही क्या सकती है। एक मुट्ठी तो महज हाड मास है। मैं पुरुष हूँ। एक हट्टा-कट्टा। चार जवान एक शस्त्र लेकर खडे हों तो उन्हें मैं अकेले पल भर में धराशायी कर सकता हूँ। यह दुबली-पतली कल की छोकडी क्या कर सकती है ? चली है ज्ञान सिखाने। नेता बनी है। देश-सेविका बनी है। अच्छा हुआ मेरी स्त्री चली गयी नही तो उसे भी आवारा बना देती। इसी कारण मैंने

उसे भेज दिया। मैं रजनी से बदसूरत हूँ ? अयोग्य हूँ ? हाँ व्यर्थ का देश-सेवक बन कर डंडे, जूते, लात, मुक्के नही खाने वाला हूँ। पढ लिखकर टुकडखोर नही हूँ। तरह-तरह की कल्पना करते हुए अशर्फी चला जाता है। स्टेशन पर ट्रेन की प्रतीक्षा करता है। ट्रेन आ जाती है, पास कर लेता है। कागज-पत्र ठीक कर लगभग ३ बजे प्रात काल क्वार्टर पर पहुँचता है।

इधर मनोरमा अशर्फी के इस अमानुषिक-दुर्व्यवहार से क्षुब्ध हो जाती है। एक पत्र अपने पति को तत्काल लिखती है। पत्र का आशय निम्नाकित है।

प्राणाधार,

अशर्फी की स्त्री द्वारा आपको पत्र मिल ही गया होगा। दूसरा पत्र वडी ही लज्जा एव चिन्ता का भेज रही हूँ। आपने मुझे धोखा दिया। आपने मुझसे सदैव यही वतलाया कि अशर्फी मेरा अनन्य मित्र है। वडा नेक है। आपका ऐसा सोचना भ्रम है। यह वडा ही दुश्चरित्र, आचार-भ्रष्ट है। मेरे सतीत्व-अपहरण के पीछे पडा हुआ है। अधे के लिये सारा ससार ही अधा है। आचार-भ्रष्ट है, सवको अपने जैसा समझता है। आप पत्र पाते ही चले आइयेगा। नही तो यह किसी न किसी प्रकार मेरी प्राण-हत्या अवश्य कर डालेगा। वहुत धमकी देता है। मैं इसके चरित्र-सुधार का यथा-शक्ति प्रयत्न कर रही हूँ। मान जायगा तो मेरा प्रयास सफल हो जायगा यदि पुनीत-मार्ग पर नही आयेगा तो वहुत करेगा मेरी जान ले लेगा। खैर जान भले ही चली जाय पर मैं अपना धर्म-दोहन नही होने दूँगी। कार्याधिक्य के कारण आने में विवश हूँ।

आप की सहचरी
मनोरमा।

पत्र लिखकर लिफाफा मे वद करती है। नौकरानी को वुलाती है। उसे पत्र के साथ विक्रमपुर जाने की प्रार्थना करती है। वह प्रात काल पत्र भेजवाने का वचन देती है, पुन अपने कमरे में सोने चली जाती है।

मनोरमा खाट पर सोती है। निश्चिन्त सोती है। दिल में ठान लेती

है कि प्रात काल कही अन्यत्र जा कर रहूँगी। पुन यहाँ नही आऊँगी, पर एक वात है, समाज-सुधार करना यह तो मेरा और मेरे पति का दृढ-सकल्प है। अशर्फी ने वहुतो का सतीत्व विगाडा होगा। इनको समझा वुझाकर सही रास्ते पर लाना है। यदि यह सँभले तो मेरी भोली वहनो का समाज आतकित नही रहेगा। पढे लिखे हैं समझाने पर अवश्य रास्ते पर आ जायँगे। इन सारी वातो के उधेड-वुन में वह जगी हुई है, तव तक अशर्फी आ जाता है। मुसकुराते हुए कमरे में प्रवेश करता है। पुन वही अध्याय खोलता है। मनोरमा प्रेम से समझाती है। वह हठात् उसकी वाँह खींच लेता है। मनोरमा को क्रोध हो जाता है। वह चडी वन जाती है। महाकाली वन जाती है। प्रचड दुर्गा वन जाती है। उग्र और विकराल रूप धारण कर लेती है। अशर्फी को एक करारा झटका देती है। वह भूमि पर गिर पडता है। चोट खा जाता है। सिर और पैर से रक्त वहने लगता है। वह कुछ देर तक ठडा पड जाता है। पुन क्रोध से उन्मत्त हो जाता है। मनोरमा को सीढियो के नीचे ढकेल देता है उसका सिर फट जाता है। उसके सव कपडे रक्त से डूव जाते हैं। उसके ऊपर दानव अशर्फी अपनी दानव-लीला प्रारम्भ कर देता है। काफी डडो का प्रहार करता है। जव जान जाता है कि वह मर गयी तो डडा रख देता है। खाट पर उसे लिटा देता है। खाट पर उसके दो झोले रखे हुए थे। वाहर दो खादी की साडियाँ और दो खादी के चद्दर खाट के सिरहाने पडे हुए थे। रजिस्टर्स भी एक ओर सिरहाने पडे हुए थे। सव के सव लहू से तर-वतर हो गये। वह नीच-राक्षस, अत्याचारी और हत्यारा कस की भाँति कुछ देर तक वहाँ खडा रहा। नौकरानी को आहट लगी वह दौडी आयी। रात्रि के तीन वज चुके है। वह काफी नीद में थी। आकर देखती है कि मनोरमा खाट पर लहू से तर वतर है, मृतक रूप मे पडी है। वह हक्का-वक्का सा हो गयी। वोली वद हो गयी। अशर्फी को इस कुकृत्य का फल सूझने लगा। अव उसकी हेकडवाजी खतम हो चली है। वह हाथ जोडता है। किसने ?

अपनी नौकरानी से। उसकी शैतानी उसकी शेखी सब मिट्टी में मिल गयी है। वह नौकरानी से भीख माँगता है। किस वस्तु की ? अपने प्राणो की। नौकरानी, मनोरमा के साथ किये गये पशुवत व्यवहारो से इतनी खिन्न थी कि वह स्टेशन दौड गयी। वहाँ अशर्फी के अत्याचारो को सारे स्टाफ के सामने रखा। उसने एक ढिढोरा पीट दिया। सारा स्टेशन स्टाफ आतंकित हो उठा। सब लोग दौडे हुए घटना-स्थल पर पहुँचे। सब के सब रो पडे। आँखो से आँसू का झरना बह चला। सबके सब हतबुद्धि हो गये। अशर्फी सबके चरणों को दौड-दौड कर पकडता है और प्राण-रक्षा की भीख माँगता है। अशर्फी स्टेशन-मास्टर था उसका सहायक योगेशचन्द चटर्जी था। उसने कहा कि जो कुछ हुआ वह अच्छा तो नही हुआ, सारा स्टेशन-स्टाफ फँस जाना चाहता है। अब चालाकी इसी में है कि इसकी लाश पास वाली नदी में इसी समय शीघ्र फेंक दी जाय। पुलिस को कानोकान खबर न हो। सब लोग आपस में सगठन कर लें।

दो पैटमैन, दोनो पानी पाँडे, अशर्फी का नौकर, खलासी, पल्लेदार और छोटे बाबू लाश को तत्काल उठा लिये। नदी का किनारा पकडे। लगभग ढाई मील की दूरी पर लाश को नदी में फेंक दिया। इधर अशर्फी क्वार्टर पर ताला लगा दिया। स्टेशन में आकर बैठा।

सवेरा हुआ। सूर्य भगवान लाल-लाल आँखें करके पूर्व ओर अपने विश्राम-भवन के अरुण-कपाट खोल कर झाँकने लगे। मानो वह अशर्फी की इस दानवीयक्रिया पर बहुत क्रुद्ध हैं। स्टेशन पर उदासी छायी हुई है। छोटे बाबू ने इस रहस्य को छिपाने के लिये सबसे प्रार्थना की थी। अशर्फी की नौकरानी से बहुत कहा पर वह इतनी भयभीत थी और मनोरमा के सद्व्यवहारो का उस पर अच्छी छाप पडी थी। उसकी मृत्यु से वह बहुत ही शोकातुर थी। वह दौडी-दौडी थाने मे खबर दे आयी। थाने को तो गध मिलनी चाहिये। गध पाते ही सारा थाना भोर होते ही क्वार्टर और स्टेशन को घेर लिया। अशर्फी गिरफ्तार कर लिया

गया। नौकरानी गवर्नमेंट की मुखविर बनायी गयी। सारा स्टेशन स्टाफ गिरफ्तार कर लिया गया। अशर्फी का निजी नौकर भी पकडा गया।

पुलिस ने क्वार्टर का ताला तोडा। उसके अन्दर का सारा सामान पुलिस उठा ले गयी। मनोरमा की साडियाँ खून से लथ-पथ मिली। चद्दर और रजिस्टर्स भी रक्त से लाल हो गये थे। सबको पुलिस ने अपने सबूत में रख लिया। झोले मिले उन पर मनोरमा का नाम लिखा हुआ था। उसकी रिस्टवाच मिली। उसका शीशा फूट कर चूर-चूर हो गया था। वह चिट्ठी मिली जिसको उसने अपने पति के लिये लिखा था। ये सारे सामान पक्के सबूत थे। अशर्फी का होशोहवास इतना उड गया था कि उसने इन सारे सामानो को अन्यत्र नहीं हटाया।

गोपालदास नामक साधु टहल रहे थे। उन्हें कुछ आदमियो की आहट मालूम हुई। वह इधर बढे, देखा कि कुछ व्यक्ति नदी के किनारे एक लाश को फेंक कर जा रहे हैं। साधु ने इन आदमियो को डाकू समझा। ये लोग वही थे जो मनोरमा की लाश को प्रात काल ३ बजे नदी के किनारे फेकने आये थे। साढे चार बजे यहाँ ये लोग पहुँचे और मनोरमा की लाश को नदी के इस पार धीरे से रख दिये और वापिस गये। इसके ठीक उस पार साधु की कुटिया थी। वह टहलते-टहलते लाश के पास पहुँचे। उसके सुन्दर चेहरे को देख कर वह कुछ देर के लिये चिन्ता-मग्न हो गये। नाडी देखा। नाडी से इन्हें साफ-साफ पता चला कि इसके अन्दर अभी प्राण है। वह कुटिया से कुछ व्यक्तियो को बुलवाये। लाश अपनी कुटियाँ पर उठवा कर ले गये। गोपालदास रिटायर्ड सिविल-सर्जन है। अवस्था इस समय उनकी सत्तर वर्ष की है। साठ वर्ष की अवस्था में उहोंने सन्यास ले लिया। तब से वह इसी कुटिया पर रहते हैं। रोगियो की मुफ्त में चिकित्सा करते हैं।

कुटिया में मनोरमा की लाश एक तख्ते पर रखी गयी। गोपालदास ने होश की दवा दी। मरहम पट्टी की। कुछ घण्टो के बाद उसे होश

आया। उसने आँखें खोली। देखा तो उसके चारो ओर एक कुटिया है। एक वृद्ध बावा खडे हैं। उसके समझ मे नही आया। पुन वह आँखें वद कर लेती है और कराहने लगती है। साधु ने पन्द्रह-पन्द्रह मिनट पर मूल्यवान दवाएँ दी। उसको होश मे लाने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया। ढाँढस वँधाये कि वेटी! घवराओ नही तुम्हारे सारे दर्द थोडी ही देर में अच्छा कर देता हूँ।

मनोरमा को दवाओ से वडा आराम पहुँचा। वह धीरे-धीरे होश में आने लगी। उसके दर्द दूर होने लगे। फूटे हुए स्थान भरने लगे। टूटे हुए स्थान ठीक होने लगे। पन्द्रह दिनो में सारी पीडा उसकी जाती रही। सभी टूटी हुई हड्डियाँ ठीक हो गयी। उसके वदन पर काफी घाव थे। घाव का सुमार नही था। सवको गोपालदास ने धीरे-धीरे अच्छा कर दिया। अव तक उन्होने एक शव्द भी मनोरमा से उसकी चोट के वारे मे नही पूछा। जव वह पूरी-पूरी अच्छी हो गयी तो साधु ने मनोरमा को अपने पास वुलाया और धीरे-धीरे सारा समाचार पूछने लगे।

साधु गोपालदास—वेटी! तुम्हें किसने आहत किया? कैसे आहत किया? वे नराधम कौन-कौन से हैं? उनके क्या नाम है?

मनोरमा—परम पूज्य वावा जी! मेरे नव-जीवन-दाता जी! आप मुझसे ये सव वातें न पूछें। जिसने मेरे साथ यह पशुवत व्यवहार किया है उसे मैं क्षमा कर रही हूँ। मैं जानती हूँ कि वह गिरफ्तार तो हो ही गया होगा। सवूत मिल जाने पर उसे फाँसी भी हो सकती है पर यदि मेरे पति को उसकी गिरफ्तारी ज्ञात हो जायगी तो वह मुझे खोकर उसकी प्राण-रक्षा करेंगे। मैं अपने पति के स्वभाव को जानती हूँ। अत. आप से नम्र निवेदन है कि आप हत्या काण्ड की पुस्तिका न खोलें। उसे वैसे ही वद रहने दें। मेरे पति को आप वुलवा लें। मैं उनका नाम व पता लिख कर देती हूँ।

गोपालदास—मनोरमा के उच्चादर्श को सुन कर चकित हो गये। उसके हाथ के लिखे हुए पत्र को ले लेते हैं। उसे उसके पति के यहाँ शीघ्र भेज देते हैं।

[१२]

विक्रमपुर में मनोरमा की मृत्यु का दुखद समाचार टेलीग्राम की भाँति पहुँच जाता है। रजनी, उसकी अम्मा और उसके पिता शोकार्त हो जाते हैं। माता-पिता रोने लगते हैं। विक्षुव्ध हो जाते हैं। चेतना-शून्य हो जाते हैं।

माता शैलकुमारी रह-रह कर सारे भवन में दौडती है। सर्वत्र मनोरमा, बेटी मनोरमा कह कर पुकारती है। हाय! मेरी मनोरमा! तुझे अब कहाँ पाऊंगा। तुम्हारी ऐसी भोली सरस-हृदया-पतोहू को मैं कहाँ पाऊंगा। तेरे पुत्र को खो दिया। तेरे पुत्र को तेरी अनुपस्थिति मे खो दिया। शायद इसी से तू रुष्ट होकर चली गयी। अच्छा ठहर, मैं भी आ रही हूँ। तुमसे क्षमा मागूंगी। तू क्षमा करेगी। कदापि नही। मैंने तेरा बडा अपकार किया है। रजनी तो दूसरी स्त्री ला कर मेरी पतोहू बनायेगा। पतोहू का बदला नयी पतोहू देकर चुकायेगा पर मैं उसे लेकर क्या करूँगा, मुझे तो मनोरमा चाहिए। मनोरमा का वह मधुर-हास्य, वह मधुमयवाणी, वह अनुपम सौंदर्य कहाँ मिलेगा ? मुझे तो मनोरमा की कार्य-कुशलता चाहिए। (रजनी से) तूने मुझे धोखा दिया। तूने उसे बाहर अशर्फी के यहाँ भेज दिया। उस निर्दयी हत्यारे कसाई को मेरी भोली भाली सीधी सादी गैया भेज दिया। तूने मुझे देशबन्धु को देने का प्रण किया था। तूने मनोरमा को भी मेरे हाथो से छीन लिया। इसी लिये कि मनोरमा तुम्हारी थी, नही, नही! मनोरमा मेरी थी। मैंने उस सजीव गुडिया को, उस बाछी को जगदीशपुर के रईस श्यामसुन्दर से माँगा था। स्वर्ग में मनोरमा उनसे मिलेगी तो मेरी निन्दा करेगी। मेरी मृत्यु के पश्चात् यदि कभी दैवात् उनसे साक्षात्कार होगा तो उसके पिता को वहाँ क्या जवाब दूँगी। रजनी बोलता क्यो नही ? मौन क्यो साधे हो ? मेरा खिलौना मुझे लाकर दे। मेरी धरोहर को बिना मेरे पूछे क्यो दूसरे को दे दिया।

रजनी—अम्मा ! इतनी व्यग्र न हो। धैर्य धरो। तुमने, पिताजी और मैंने आज तक जानकारी में किसी का अपकार नही किया। भगवान भला करेगा। शीघ्र भगवान तेरे दुखो को दूर करेगा।

अम्मा शैलकुमारी—नही, नही। मैं दूसरी मनोरमा नही लूंगी। जहाँ से चाहे मेरी वही मनोरमा ढूँढ कर दे। मैं अब तेरे बहकावे में नही आ सकती। बेहोश हो जाती है। भूमि पर चेतना-शून्य होकर गिर जाती है। रजनी उसे उठाता है। चारपाई पर लिटाता है। पंखा करता है। उसे तरह-तरह का बोध देता है।

पिता अजयकुमार—(झिझक-झिझक कर उठते हुए) हाय मनोरमा ! मेरी निधि मनोरमा ! मेरी सर्वस्व मनोरमा ! कहाँ हो ? मुझे प्रात सायंकाल कौन दूध गर्म करेगा ? हमारे बुढापे की सजीव लकडी क्या हुई ? किसे देखकर हम लोग अपना बुढापा निभायेंगे ? अपने कोमल हाथो से भोजन पका कर कौन देगा ? वैसा मधुर स्वाद किसके भोजन में मिलेगा ? दूसरी एक पतोहू नही, सैकडो, हजारो पतोहू उस मनोरमा की समता कर सकती हैं ? कभी नही। कभी नही। मनोरमा ! तू हम लोगो पर रुष्ट होकर गयी है। अवश्य तुझे रुष्ट होना चाहिये। मैंने तुम्हारे सुकुमार-सुकोमल देशबन्धु को खो दिया। तुम्हारी अनुपस्थिति में तुझे धोखा दिया। अब तूने भी हम लोगो को धोखा दिया, उचित ही था पर तुझमें तो बदला चुकाने की दुर्भावना मैंने कभी नही देखी। तू तो क्षमा की मूर्ति थी। फिर क्यो ऐसा किया ? नही-नही तू ऐसा नही कर सकती, कोई दूसरा ही कारण है। रजनी जानता होगा। बेटा ! बतला, मनोरमा क्यो रूठ कर चली गयी ?

रजनी—पिताजी ! आप इतना व्यग्र न हो। आप तो बडे धैर्यवान हैं। सदैव विपत्तियो के सामने अपना विशाल-वक्ष स्थल खोल कर रखते थे। फिर आज ऐसा क्यो कर रहे हैं ? घबरायें न, मनोरमा पुन. आपको मिलेगी। धैर्य से काम लें।

अजयकुमार—तू तो देशबन्धु को भी दे रहा था। कहाँ दिया ? बडा धोखेबाज पुत्र है। अब तेरे बहकावे में नही आ सकता।

व्यग्र होकर अजयकुमार छाती पीटने लगते है। भूमि पर गिर पडते है। रजनी उसे उठाकर खाट पर लिटाता है। दोनो को पखा झलता है। हवा करता है। उन्हें समझाता है। बोध देता है। बडे ही सकट में फँसा है। पिता की चिन्ताओ से घबरा रहा है। कुछ कह नही सकता।

अशर्फी की माता तथा स्त्री रोती हुई आती हैं। रजनी के पैर पकड कर रोने लगती है।

अशर्फी की स्त्री—आज बबुआ विधवा हो जाऊँगी। मेरा सुहाग लुट जायगा। आज मेरे लिये २ बजे ससार सूना हो जायगा। आज उन्हें फाँसी दे दी जायगी। मेरे सिन्दूर की रक्षा करो। रोने लगती है। भूमि पर गिर कर वेहोश हो जाती है।

अशर्फी की माता—वेटा! मुझे जिलाओ। मैं निपूती होने जा रही हूँ। मेरे वुढापे का एक मात्र आधार तुम हो। तुमने अशर्फी को वडे-वडे सकटो से उवार कर मुझे सौंपा है। उसके कितने वडे-वडे अपराधो को क्षमा किया है। इस वार फिर वेटा! मेरे वुढापे की रक्षा करो। यह अबोध कवीन्द्र कहाँ जायगा? कवीन्द्र को रजनी की गोदी में डाल देती है। भूमि पर गिर कर रोने लगती है। हाय! ससार सूना हुआ। मेरे सोने का ससार थोडे ही देर में लुट जायगा। मेरा इस ससार मे देख-रेख करने वाला अब कौन रह जायगा? अब मैं असहाय हुई। वच्चा कवीन्द्र पितृ-हीन हुआ। इसकी रोटी का टुकडा छिन गया। हाय! मैं क्या करूँगी इसे, इसकी माता को ऐसी दशा में कैसे खिलाऊँगी? कहाँ से वस्त्र पिन्हाऊँगी। वेसुध हो जाती है।

रजनी दोनो को उठाकर सान्त्वना देता है। यह विपत्ति वहुत वडी विपत्ति है। धैर्य धरो। धैर्य से ही यह कष्ट कटेगा। साहस न छोडो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। अशर्फी का वालवाँका न होने दूँगा। वह मेरा मित्र है। परम अनूठा मित्र है। भूल सवसे होती है। उसकी यह भूल कोई भूल नही है। यह दैवी भूल है। उसने यह भूल स्वत नहीं की। भूल से यह भूल हुई है। विधाता ने उस पर दवाव देकर भूल कराया तव उसका

इसमें क्या दोष ? अत उसकी यह भूल क्षमा करने योग्य है। मैं इसे अवश्य क्षमा करूँगा। आप लोग तनिक न घबरायें। धैर्य धारण करें। मैं अभी-अभी जाने वाला हूँ। उसे बचा कर साथ लेते आऊँगा। मुझे २ बजे की विकट घडी यांद है। विनाशकारी घडी याद है। मै उस क्रूर-घडी की एक भी न चलने दूँगा।

रजनी घर से उठा। साइकिल उठाया। अशर्फी के स्टेशन पर पहुँचा। सारी घटना की जानकारी प्राप्त किया। रजनी वाहर गया था। क्यो ? अपने कार्य के लिये ? नही ! अशर्फी की प्राण-रक्षा के लिये। वह उसके बचाने के लिये प्रमाण की खोज में वाहर गया था। उसे वाहर कई सप्ताह लग गये। आज घर लौटा। सब ओर से निराशा का शब्द सुनायी पडा पर रजनी इससे ज़रा भी विचलित नही हुआ। वह पूरी आशा लिये हुए दौड रहा था। उसे पूर्ण विश्वास हो गया था कि मैं अशर्फी को मुक्त करा दूँगा। वह जज के यहाँ भी गया था। उससे भी मिला था। क्या बातें हुई, अव्यक्त है।

स्टेशन के सभी कर्मचारी मुक्त कर दिये गये। मनोरमा के रक्त से लथपथ वस्त्र मिले। उसका वह पत्र मिला जिसको उसने रजनी के लिये लिखा था। घटना के दूसरे दिन उस स्थान का भी पता चला जहाँ कि मनोरमा मार कर फेंकी गयी थी। उस स्थान पर एक लाश मिली। यह लाश किसी अन्य स्त्री की थी। जिसको सियार कौवा गिद्ध खा चुके थे। यह लाश भी किसी नव-युवती की थी। कद में मनोरमा सरीखी थी। इन सारे सबूतों को पुलिस ने दाखिल किया। गवाह भी काफी पेश किये गये। स्टेशन और उसके पास-पडोस में कोई अशर्फी से सन्तुष्ट था नही। अत-सब लोगो ने इसके विरुद्ध गवाही दी। इन सारे सबूतो को लेकर जज ने अशर्फी को फांसी का आदेश सुनाया। आज ही २ बजे उसे फांसी दी जाने वाली है।

रजनी फांसी-गृह पहुँचा। देखा तो अशर्फी फांसी के तख्ते पर खड़ा है। रस्सी उसके गले से लटक रही है। अशर्फी की माता तथा स्त्री भी

वहाँ पहुँच गयी हैं। उसकी स्त्री आगे वढकर—मैं इनके वदले फाँसी पर चढूँगी। आज सावन की तीज है। मैं झूला झूलूँगी। (हाथ जोड कर) सरकार इन्हें मुक्त कर दें। मैं अपराधिनी हूँ। मुझे फाँसी दी जाय। फाँसी की रस्सी का हार मैं पहनूँगी। स्त्री हटायी जाती है। तव तक उसकी वृद्धा माता पहुँच जाती है। फाँसी की रस्सी हाथ से पकड लेती है। हठ करके कहती है कि मेरे वेटे को छोड दिया जाय। मैं फाँसी के साथ खेलूँगी। पुलिस ने इसे भी किसी न किसी तरह हटाया। तव तक भीड को चीरते हुए रजनी आगे वढा, कडककर वोला। खवरदार, अशर्फी को फाँसी न दी जाय। मनोरमा मेरी स्त्री है मैंने उसे मारा है। इसी डर मे मैं वाहर भाग गया था। उसका हत्यारा मैं हूँ। अशर्फी विल्कुल निरपराधी है। इसे मुक्त किया जाय। जज को पता नही है, यह भूल है, भूल। अभी समय आध घटे का है। जज अपना निर्णय सुधार लें। अशर्फी के वदले मुझे फाँसी घोषित करें।

इसी वीच मनोरमा फांसी-गृह पहुँच जाती है। (आगे वढकर भीड को धक्का देती हुई) मेरा नाम मनोरमा है। (पति की ओर सकेत करके) ये मेरे पतिदेव हैं। अशर्फी निर्दोष है। इसे मुक्त किया जाय। अशर्फी के शत्रुओ का यह जाल है। यह घटना आद्यन्त मन-गढन्त है। सरासर असत्य है। मैं जीवित हूँ। अशर्फी मेरे मित्र का पक्का मित्र है। अशर्फी की स्त्री मेरी सहयोगिनी सखी है। अशर्फी कभी भी मेरे साथ घातक का, हत्या का विचार नही कर सकता।

रजनी—(परम प्रसन्न होकर) मैं तो वरावर कहता आ रहा हूँ कि अशर्फी मेरा मित्र है। भला कोई मित्र, अपने मित्र की स्त्री के साथ ऐसा दुर्व्यवहार कर सकता है ? ऐसी कठोरता कर सकता है ? मेरा पुत्र देशवन्धु छत से गिर कर मरा, शत्रुओ ने व्यर्थ इस पर दोषारोपण किया। डाक्टर ने साफ-साफ निर्दोष ठहराया। यह कभी भी मुझे धोखा न दिया न भविष्य में दे सकता है। अत. यह अविलम्व छोड़ दिया जाय। इसी समय साधु गोपालदास पहुँच जाते हैं।

गोपालदास—मैं जानता हूँ। अशर्फी हत्यारा है। इस दानव ने मनोरमा की हत्या में कुछ उठा न रखा। यह तो फाँसी से भी बढकर दण्ड का भागी है। न विश्वास हो तो मनोरमा से हलफ उठवा कर पूछ लिया जाय कि उसकी प्राण-रक्षा कैसे की गयी ?

मनोरमा—मेरी बातें सत्य हैं। साधुजी की बातें निराधार हैं। बाबा ने आज गाँजा भाँग अधिक पी लिया है। इसी कारण होश मे नही हैं।

गोपालदास—मैं बिल्कुल होश में हूँ। (आगे बढकर) मनोरमा के टूटे-फूटे स्थलो को दिखला कर—देखिये ये सारे अमिट चिन्ह, अशर्फी के क्रूर हाथो, निर्दयी डडो के प्रबल आघात से किये गये हैं। सारी घटना का, हत्या का जितना ज्ञान मुझे है, किसी अन्य को नही है।

रजनी—नहीं, नही, साधु बाबा! आप होश में नही हैं। अवश्य गाँजा-भाँग अधिक चढा लिये हैं। महाराज जी! यह मेरी स्त्री है, मैं भली-भाँति जानता हूँ। ये सारे घाव देशबन्धु के बचाने मे हुए हैं। देशबन्धु बहुत बच्चा था जब छत से गिरा तो इसका वात्सल्य-प्रेम उमड आया। अपने को रोक न सकी। छत से कूद पडी। फर्श पक्का था। काफी चोट आ गयी। कई दिनो तक खाट पर पडी रही। वे ही चिन्ह हैं।

सब लोग आश्चर्य मे पड जाते हैं। अधिकारियो की जबान ही बन्द हो जाती है। अशर्फी को छोड देने के सिवाय कोई उपाय नही सूझता। वह फाँसी के तख्ते से हटा लिया जाता है। सारी भीड हट जाती है। सब लोग फाँसी-गृह से बाहर आते हैं। अशर्फी दौडकर रजनी के गले से लग जाता है। अपने कुकृत्यो पर पश्चाताप करके रोने लगता है। रजनी अपने मित्र अशर्फी को समझाता है मित्रवर! तुम मेरे परम-प्रिय मित्र हो। इसमें तुम्हारा कोई अपराध नही। तुम व्यर्थ पश्चाताप न करो। चलो घर चलें। ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है।

अशर्फी—रजनी के पैरो पर गिर पडता है। फूट-फूट कर जोर-जोर से रोने लगता है। लज्जित होकर कहता है कि मै नराधम हूँ। मानव नही,

दानव हूँ। नीच से नीच राक्षस हूँ। तुम्हारे पुत्र देशवन्धु का घातक मैं हूँ। तुम्हारी परम-प्रिय-सहचरी-मनोरमा का सतीत्व नष्ट करने में कुछ उठा न रखा। अपने को उसका सतीत्व नष्ट करने में असफल पाकर मैंने उसके सहार का कोई भी दाव-पेंच छोड न रखा। मै वडा ही पापी हूँ। अघी हूँ। तुमने मेरे साथ मैत्री भाव रखा। सदैव जटिल से जटिल आपत्तियो से वचाया। जव मै जेल में था तो मुझे कितना आराम पहुँचाया। पुलिस के कराल पजो से कई वार वचाया। तेरे ही रुपयो से पढा लिखा, स्टेशन मास्टर हुआ। रिक्त-हस्त माँ-वाप क्या पढाते। नौकरी दिलाने का श्रेय आपको है। मेरे कितने अच्छे साथी मुझसे योग्य होते हुए अभी तक घर पर वेकार पडे हैं। मेरी शादी तेरी कृपा से हुई। घर में, स्कूल में, वाहर में चोरी करता था। तू सव कुछ जानते हुए भी किसी से नही कहता था। अशोक के धन का अपहरण-कर्ता मै था। उस अशोक को जीवन-दान देने, उसके गहनों, वस्त्रो को पुन क्रय करके, उसके घर पहुँचाने में तुमको कितने-कितने कष्ट उठाने पडे। पुलिस द्वारा कितने दडित किये गये, पर धन्य हो रजनी ! तुमने मुझे एक शब्द भी नही कहा। अशोक के गहने वेचते समय मैं जेल की हवा खाये विना न रहता पर तुमने अपने ऊपर सव कुछ ले लिया। किस चलाकी से मुझे वचाया। तुमको कक्षा ८ की परीक्षा मे अनुत्तीर्ण कराया। तुम कितनो प्रखर-वुद्धि के छात्र थे। कक्षा-अध्यापक ने पुन उत्तर-पुस्तिका-सशोधन के लिये प्रार्थना-पत्र प्रेषित करवाना चाहा पर रजनी ! तूने मेरे जोवन का ध्यान रखा। यदि प्रार्थना-पत्र जाता तो मै दण्डित होता, कारागार जाता, अनुत्तीण होता। हाई स्कूल की परीक्षा मे तुमको धोखा दिया, चोर व नक्काल सिद्ध किया, तुम्हें फेल कराया पर भाई ! रजनी ! तूने कितने धैर्य से सारे कष्टों का सहन किया। सदैव तुम मुझे शिक्षा ही देते थे। मै अपनी दुर्वुद्धि के कारण समझ न सकता था। इतना कह कर अशर्फी फूट-फूट कर रोने लगा। चरणो पर गिर पडा और रो-रो कर कहने लगा कि मेरे मित्र ! मेरे भोले रजनी ! मैं अपने पापो पर

पश्चाताप करता हूँ। मुझे तुमने आज तक जो कुछ माँगा सब कुछ दिया। आज मेरी एक अंतिम माँग है बिना उसे प्राप्त किये मैं तेरा चरण नही छोड सकता। कहते-कहते कण्ठावरोध हो गया।

रजनी ने हटात् उसे उठाया। गले से लगाया। आँखें छल-छला आयी। सप्रेम पूछा कि वह कौन सी वस्तु है जिसको मैं तुम्हें नही दे सकता ? मित्रवर ! तेरे लिये कोई वस्तु अदेय नही है, दुखी न हो, अधीर न हो, कहो-कहो क्या माँगते हो ?

अशर्फी—(चरणो पर पुन गिरकर) ग्लानि से कहता है कि 'क्षमा'।

रजनी—तेरे लिये सदैव क्षमा है। उठो। ग्लानि करना छोड दो। घर चलें। तुम्हारा परिवार दुखी है उसे धैर्य दिया जाय।

अशर्फी आँखो और मुँह पर चद्दर डाल लेता है। दौड कर मनोरमा के चरणो पर गिर पडता है और रोकर कहता है कि भाभी मेरा नाम अशर्फी है पर मैं कौडी के एक दत का भी नही। तेरे सामने मुँह दिखलाने में लज्जा आती है। तूने मुझ नराधम को प्राण-दान दिया। मेरे बहते परिवार को डूबने से बचाया। मेरी स्त्री को जीवन-दान दिया नही तो वह मेरे वियोग में तडप-तडप कर मर जाती। मैं पापी तेरे सामने '' ।

मनोरमा—(अशर्फी के मुँह से चद्दर हटाकर) आप यह क्या कह रहे है। चलिये घर चला जाय। व्यर्थ चिन्ता न करें। उठिये, उठिये।

अशर्फी—भाभी ! जब तक तुझसे भी 'क्षमा' की भिक्षा न प्राप्त कर लूँगा तब तक मैं यहाँ से घर नही जाऊँगा और न तेरे चरणो को छोड़ूँगा।

मनोरमा—भाई अशर्फी ! मेरे हृदय मे कोई मनोमालिन्य नही है। तेरे लिये मेरे हृदय में एक ऊँचा स्थान है। उठो 'क्षमा' दे रही हूँ।

अशर्फी उठकर खडा हो जाता है। उसकी माता और स्त्री, रजनी और मनोरमा के चरणो पर गिर कर क्षमा माँगती है।

रजनी—मेरी ओर से सब को 'क्षमा' है। आओ हम लोग प्रेम से

मिल लें और ईश्वर को कोटिश धन्यवाद दें जिन्होने हम लोगो को इतने महान् कष्ट से उवारा है।

मनोरमा—मैं भी सवको अपनी ओर से 'क्षमा' देती हूँ।

सव लोग प्रेम-पूर्वक मिलते हैं। मनोरमा अशर्फी की माता तथा स्त्री से मिलती है। रजनी अशर्फी से मिलता है उसके वच्चे कवीन्द्र को उठाकर चुम्वन देता है, प्यार करता है।

कवीन्द्र—(हाथ जोड़कर मनोरमा और रजनी से) ताती और ताता हमको भी 'थमा' दो।

रजनी और मनोरमा—(मुसकुराते हुए) प्यार से गाल पर हल्का चपत जमाते हुए वेटा ! तुम्हें भी 'क्षमा' है।

अशर्फी सीधे अपनी नौकरी पर गया। वहाँ जाकर चार्ज लिया। काम करने लगा। उसकी स्त्री भी साथ थी। माता कभी घर रहती। कुछ दिनों के वाद अशर्फी ने अपने नौकर द्वारा रजनी को वुलवाया। रजनी आया। अशर्फी ने अपने पूरे स्टाफ के लिये चर्खा माँगा। रजनी ने वैठे-वैठे चर्खे का प्रवन्ध कर दिया। स्टेशन-स्टाफ ने दो घंटे प्रतिदिन चर्खा कातने का प्रण किया। समाज-सेवा में सहयोग देने का पूरे स्टाफ ने वचन दिया। सारा स्टाफ पूरा खद्दरधारी हो गया। कुछ ही दिनो में स्टाफ का पूरा काम चर्खे के वस्त्र से चलने लगा। सवको चर्खा चलाने की एक नशा सी हो गयी। अशर्फी स्टेशन में जहाँ भी थोड़ा सा समय पाता कि चर्खा चलाने लगता। रात-दिन विना चर्खा चलाये उसे चैन नहीं रहता था।

स्टेशन-स्टाफ अशर्फी को अपना नेता मानने लगा। उसके सभी मातहत उसे सदैव हथेलियो पर लिये रहते थे। सव लोगो ने आपस में स्टेशन के भ्रष्टाचार रोकने का पूरा-पूरा व्रत ठाना। नाजायज आमदनी लेना एक दम वन्द कर दिया। सवो ने सादा जीवन अपनाया। खाली समय में चर्खा चलाना, वागवानी करना अपना मुख्य ध्येय वना लिया। अशर्फी ने अपने क्वार्टर पर एक 'नर्सरी-गार्डन' वनाया था। इससे फूल व तरकारी के पौदे

वह जनता को मुफ्त में दिया करता था। पास के गावो में वाजार लगता था वहाँ जाकर चर्खा तथा अन्य रचनात्मक कार्यों का पूरा-पूरा प्रचार करता था।

एक दिन एक सुन्दर रमणी ट्रेन से उतरी। उसके पीछे गुण्डे वहुत दूर से पडे हुए थे। उसने वडी चालाकी से उन गुण्डो से मुक्त कराया। रमणी को अपने पैसे से घर पहुँचाया। गुण्डो को पुलिस के हवाले कर दिया। इस स्टेशन पर ऐसी घटनायें प्राय हुआ करती थी। अव अशर्फी इन घटनाओ के पूरा पीछे पड गया। पूरी चौकसी करने लगा। थोडे ही दिनो में इस रोग का विनाश कर दिया।

एक दिन एक दीन वुढिया मुसाफिरखाने में रात्रि को वुरी रहत लुट गयी। इसका सारा सामान चोरो ने चुरा लिया। जाडे की रात्रि थी। वेचारी की एक साडी, एक चद्दर और एक कम्वल चोरी चला गया। वह चिल्लाई, चोर चम्पत हो गये। अशर्फी दौडा गया। उसे सान्त्वना दिया। अपना अमूल्य कम्वल उसे दे दिया। चद्दर और साडी प्रात काल खरीद कर दिया। वुढिया आशीर्वाद देते हुए घर चली गयी।

मुसाफिरखाना छोटा था। तीन ओर से खुला था। सुरक्षित नही था। अशर्फी ने यात्रियो के लिये पुआल विछवा दिया था। प्रात काल यात्रियो के तापने के लिये लकडी का प्रवन्ध कर दिया था। स्टेशन के पास शुद्ध-जलाशय नही था। अशर्फी ने चन्दा इकत्र किया। पास में कुछ परती भूमि लिया। एक पविंत्र जलाशय खुदवाया। उसके चारो ओर भीटो पर आम, शीशम, नीम और ववूल के वृक्ष लगवा दिये। उसमें यात्री नहाते थे। दातून आदि करते थे। हर मौसम मे दातून तुडवा कर यात्रियो के लिये रखवा देता था। रजनी के सत्सग से अशर्फी एक आदर्श स्टेशन-मास्टर हो गया।

स्टेशन पर धर्मार्थ एक डिव्वा रखवाया था जो सेठ साहूकार माल छुडाने, पारसल कराने आते थे वे लोग इस डिव्वे में कुछ न कुछ द्रव्य डाल दिया करते थे। किसी प्रकार का घूस तो उन्हें देना नही था अत.

लोग वडी प्रसन्नता से डिब्बे में दान छोडते थे। यात्री-गण भी दान-द्रव्य इस डिब्बे में डाला करते थे। पास-पडोस के मेले और वाजारो में जाकर अशर्फी तथा उसके स्टाफ ने काफी धन इकत्र किया था। रजनी के हाथो से नीव डलवाई गयी। रजनी और मनोरमा का नाम सगमरमर के टुकडो पर खुदवा कर धर्मशाले और तालाव मे अशर्फी ने लगवा दिया। रजनी और मनोरमा ने अपने नामो पर आपत्ति की और कहा कि भाई अशर्फी मैंने तो इस पुनीत कार्य में कोई सहयोग नही दिया अत मेरा नाम हटवा दीजिये।

अशर्फी—मित्रवर! यह कीर्ति आप ही और मनोरमा भाभी के कारण वन रही है। यदि तुम लोग मेरा सुधार नही करते तो मैं कैसे अपने नीच स्वभावो को वदलता और इस पवित्र कार्य मे हाथ डालता। मित्रवर! मुझे भूलता नहीं, मै कितना दीन था, दुष्ट था, चोर था, जुआडी था, वदचलन था। पूरा भ्रष्टाचारी था पर तुम्हारे ऐसा सच्चा मित्र था कि अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान न करते हुए भी मेरा साथ दिया। तुमने अपने पास से रुपये लगा कर मुझे पढाया। तुम पर कितनी छीटें उछाली गयी पर तुमने तनिक चिन्ता नहीं की, सदैव मेरे साथ अपनी सच्ची दोस्ती का निर्वाह किया। जिस प्रकार कुँआ अपनी परछाही अपने में छिपा रखता है उसी प्रकार तुमने मेरे सारे अवगुणो को अपने में छिपा रखा। जिस प्रकार अकेले नेहरू जी ने अपने सारे परिवार व सम्वन्धियो को काग्रेसी वना दिया। जेल की कठिन यातना सहने योग्य वना दिया। अपने रग में रँग दिया। उसी प्रकार तूने अपने कुटुम्व को अपने स्वभाव के रग में रँग दिया। सवको अहिंसा, त्याग और क्षमा का पाठ पढा दिया। जैसे खरवूजे को देखकर खरवूजा रग वदलता है वैसे ही तुम्हारी देखा-देखी तुम्हारा सारा परिवार मुझसे हठात् प्रेम करता है। मेरे नीच कर्त्तव्यो पर तो तुम्हें घृणा करनी चाहिये। तुम धनी मानी विद्वान् थे। मैं तुमसे अयोग्य तथा दीन-दरिद्र था। फिर मेरे साथ रियायत करने की वात क्या। मेरे सारे

अपराधों को घोल कर पी जाने की क्या आवश्यकता ? मेरे साथ हमदर्द दिखाने की क्या आवश्यकता ? क्यो ? किसी डर वश ? नही । केवर प्रेम-वश । किसी विशेष लाभ के लिये ? उत्तर है, मेरा नैतिक सुधा करने के लिये । जिस प्रकार एक भक्त पत्थर की कठोर-मूर्ति को अपन देवता मान लेता है और सच्ची लगन से उसकी पूजा करता है अन्त में उस मूर्ति द्वारा सिद्धि प्राप्त करता है, इच्छानुकूल वरदान ले लेता है आर्य-समाजी इस मूर्ति-पूजा की निन्दा करते हैं पर वह इसकी परवाह नहं करता, उसी प्रकार तुमने मुझ ऐसे पाषाण-हृदय मूर्ति को अपना सच्च मित्र मान लिया था । देवता मान लिया था । अन्त में अपनी प्रेम-पूजा से मुझे सिद्ध कर लिया । भगवान भले का सदैव भला करता है । देखो भलाई ही के कारण तुम्हें भगवान ने देशबधु से कही सुन्दर, स्वस्थ, पुत्र दिया है । ईश्वर उसे चिरजीवी और स्वस्थ रखे ।

रजनी—अशर्फी ! हाँ पुत्र पैदा होने से मेरे दुखी परिवार में नव-जीवन आ गया । ईश्वर से प्रार्थना है कि उसे दीर्घजीवी व स्वस्थ रखे । मित्रवर ! जब मैं तुमसे प्रेम करता था और मेरा सारा कुटुम्ब प्रेम करता था तो अधिकाश लोग शका करते थे कि रजनी तथा उसका कुटुम्ब ऐसा प्रेम क्यो करता है, पर मै एक ही बात याद किया था कि अशर्फी मेरा सच्चा मित्र है । उसके साथ प्रेम करना चाहिये । प्रेम से जब भगवान वश में हो जाते हैं तो अशर्फी क्यो नही पिघलेगा ? क्यो नही वश में होगा ? वह तो मानव है ।

अशर्फी जिन-जिन स्टेशनो पर गया वहाँ की जनता को अपने सद्-व्यवहारों एव शुभ कार्यों से अपने वश में कर लिया । भ्रष्टाचारो को दूर किया । रेलवे कर्मचारी एव उच्च अधिकारी उसके कार्य पर बहुत प्रसन्न रहा करते थे । अन्त में वह उन्नति करके एक बहुत ऊँचे ग्रेड और पद पर पहुँच गया ।